

जिनि सतिगुर सिउ चितुलाइआ॥३५॥

जिन्होंने गुरु संग मन लगाया है ।

एनेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोतिधरी

हे ! मेरे नेत्रो तुम में हरि ने ब्योति रखी है

हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥

तुम हरि बिना औह कुछ न देखो ।

हरि बिनु अवरु न देखहु कोई

तुम हरि बिना और कुछ न देखो

नदरी हरि निहालिआ ॥

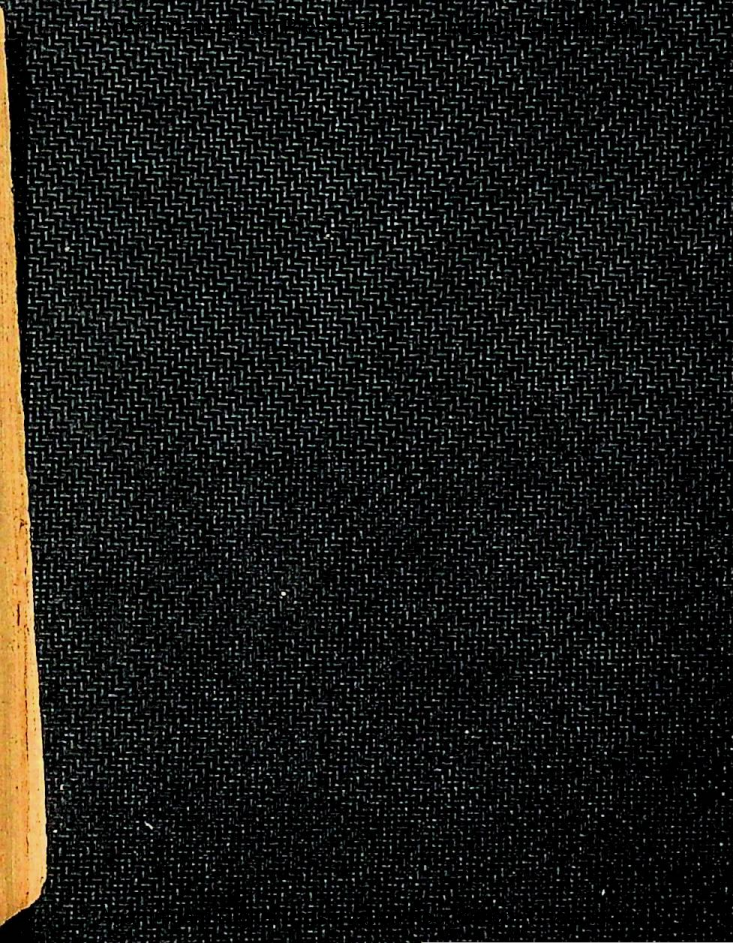
प्रभु कृपा से ही तुम ने यह सब कुछ देखा है ।

एहु विसु संसारु तुम देखदे

यह विष रूपी जगत जो तुम देखते हो

एहु हरि का रूपु है

जो भूले हुआ यह हरि का रूप है ।



हरि रूपु नदरी आइआ ॥

हरि रूप ही तुम्हें मज्जर आना चाहिये ।

गुर परसादी बुझिआ जा वेखा

गुरु कृपा से यह समझा और देखा

हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥

एक हरि है भिन्न और कोई नहीं ।

कहै नानकु एहि नेत्र अंध से

यह नेत्र तो वास्तव में अन्धे हैं

सतिगुरि मिलिए दिव दृसटि होई ॥३६॥

गुरु मिले और दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई ।

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनएँ नो पठाए ॥

हे मेरे कानो तुम तो केवल सुनने के लिये हो ।

साचै सुनएँ नो पठाए सरीरि लाए

शरीर संग तुम्हें लगाया गया जो सत्य सुनो

सुणहु सति बाणी ॥

और सच्ची बाणी सुनो ।

जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ

जिसके सुनने से तन मन हरा होता है

रसना रसि समाणी ॥

और रसना हरि स्वाद में आ जाती है ।

सचु अलख विडाणी

जो सत्य अलख बड़ा है

ताकी गति कही न जाए ॥

उसकी गति कही नहीं जाती ।

कहै नानकु अमृत नामु सुणहु

अमृत जैसा मीठा नाम सुनो

पवित्र होवहु साचै सुनणै नोपठाए॥३७॥

पवित्र हो जाओगे तुम सत्य के लिये आये हो ।

हरि जीउ गुफा अंदरि रखिकै

मालिक ने तुम्हें अन्धेरे में रख कर

❀ वाजा पवणु वजाइआ ॥

तुम में पवन का बाजा बजाया है

वाजाइआ वाजा पउण

भाव यह कि माता के गर्भ में सांस आने लगा ।

नउ दुआरे परगटु कीए

नव द्वार शरीर में प्रकट किये गये

दसवा गुपतु रखाइआ ॥

और दशम द्वार सिर का गुप्त रक्खा है ।

❀ मनुष्य का शरीर पहिले बोलता नहीं,
बाहिगुरु स्वास पाउंदा है हवा का बाजा बजाता
है फिर बाजा बजता (बोलता) है ।

अनन्द साहिब (२७७)

सटीक

गुर दुआरै लाइ भावनी

फिर गुरु कृपा से प्रेम भक्ति लगी

इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥

फर दिशम द्वार दिखाया गया है ।

तह अनेक रूप नाउ नव निधि

वहां अनेकों रूप नौ निधि हैं

तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥

वहां उस का किसी ने भी अंत नहीं पाया ।

कहै नानकु हरि पिआरै जीउ

गुरु जी कहते हैं हे प्यारे !

गुफा अंदरि रखिकै

कंकरो में तुझे रख कर

वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥

फिर तुझे स्वस्थ किया है ।

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥

यह सच्चा यश प्रभु का मन में गाओ ।

गावहु त सोहिला घरि साचै

हृदय में प्रभु का सच्चा आनन्द गाओ

जिथै सदा सचु धिआवहे ॥

यहां सदा हरि को स्मरण किया जाये ।

सचो धिआवहि जा तुधु भावहि

जब उसे भाता है तो सच को याद करता है

गुरुमुखि जिना बुभावहे ॥

यह बात गुरुमुख को समझाता है ।

इहु सचु सभना का खसमु है

यह सच सब का स्वामी है

जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥

जिसे प्रदान करता है उसे प्राप्ती होती है ।

कहै नानकु सचु सोहिला
गुरुजी कहते हैं यह सच्चा गीत
सचै घरि गावहे ॥३६॥

सतसंग रूपी सच्चे घर में गाओ ।
अनहु सुणहु बड भागीहो
हे बडे भागों वाले आनन्द को सुनो
सगल मनोरथ पूरे ॥

तुम्हारे सब मनोर्थ पूरे हो जायेंगे ।

पारब्रह्म प्रभु पाइआ

गुरुमुखों ने पारब्रह्म स्वामी को पा लिया है
उतरे सगल विसूरे ॥

और उन के सब दुःख दूर हो जायेंगे ।

दूख रोग संताप उतरे

दुःख रोग संताप सब उतर गये हैं

सुणी सची बाणी ॥

गुरुमुखों ने सची बाणी सुनी है ।

संत साजन भए सरसे

संत सज्जन सरस हो गये हैं

पूरे गुर ते जाणी ॥

यह रीति पूरे गुरु से जानी है ।

सुणते पुनीत कहते पवितु

कहने और सुनने वाले पवित्र हो गये हैं

सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥

सतगुरु सब जीवों में समान भरा है ।

बिनवन्ति नानकु गुर चरण लागे

गुरु जी कहते हैं गुरु चरणों से लगने से

वाजे अनहद तूरे ॥ ४० ॥ १ ॥

निरन्तर सुन्दर बाजे बजते हैं ।

रहरासि

१ ओं सतिगुर प्रसादि
सलोक म० १ ॥

दुखु दारु सुखु रोगु भइआ

मिलने के लिये दुःख चाहिये सुख नहीं

जा सुखु तामि न होई

सुख समय बड़ी आवश्यकतायें उत्पन्न हो जाती हैं

तू करता करणा मैं नाही

तू सब का कर्ता स्वामी है मेरे से कुछ नहीं होता

जा हउ करी न होई ॥१॥

यदि मैं कुछ करूं भी तो कुछ नहीं होता ।

बलिहारी कुदरति वसिआ

मैं बलिहार जाऊं तेरी प्रकृति जगत में बसी है

तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥

तेरा अन्त नहीं जाना जाता ।

जाति महि जोति जोति महि जाता

जगत में प्रभु की ज्योति है ज्योति में प्रभु है

अकल कला भरपूरि रहिआ ॥

तू अकाल पुरुष शक्ति सारे भरा है ।

तू सचा साहिबु सिफति सुआलिउ

तू सच्चा स्वामी बड़ाई वाला सराहने योग्य है

जिनि कीती सो पारि पइआ ॥

जिस ने शोभा की वह पार हुआ ।

कहु नानक करते कीआ बाता

हम आप की यही बातें करते हैं

जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

जो तुम करते हो वही होता है ।

सो दरु रागु आसा महला १

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा

वह घर द्वार बहुत सुन्दर है

जितु बहि सरब समाले ॥

जहां तू बैठ कर सब की सम्भाल करता है ।

वाजे तेरे नाद अनेक असंखा

वहां अनेकों वाजे बजने वाले

केते तेरे वावणहारे ॥

और अनेकों बजाने वाले हैं ।

केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि

कितने राग रागनियां सहित और

केते तेरे गावण हारे ॥

गाने वाले हैं ।

गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु

तुम्हे पवन पानी आग गाते हैं

गावै राजा धरमु दुआरे ॥

और धर्म राजा गाता है ।

गावनि तुधनो चितुगुप्तु लिखिजाणनि

जीवों का लिखा जानने वाला चित्रगुप्त भी गाता है

लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥

और उन का लिखा धर्मराज विचारता है ।

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी

शिव ब्रह्मा देवी तुम्हे गाते हैं

सोहनि तेरे सदा सवारे ॥

जो तेरे बनाये हुये हैं ।

गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे

इन्द्र राजा सिंहासन ऊपर बैठा तुझे गाता है

देवतिआ दरि नाले ॥

देवताओं सहित ।

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि

सिद्ध समाधियों के अन्दर गाते हैं

गावनि तुधनो साध बीचारे ॥

साधु विचार कर तुझे गाते हैं ।

गावनि तुधनो जती सती संतोखी

जती सती सन्तोषी भी गाते हैं

गावनि तुधनो वीर करारे ॥

और वीर योधा भी गाते हैं ।

गावनि तुधनो पंडित पढ़नि रिखीसुर

ऋषि और पंडित भी (पढ़ते) गाते हैं

रहरासि साहिब (२८६)

सटीक

जुगु जुगु वेदा नाले ॥

युगों युगों के वेदों सहित ।

गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि

मन मोहन को गाती हैं मन मोहिनियां

सुरगु मछु पइआले ॥

स्वर्ग मात लोक पाताल की ।

गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे

तेरे रतन भी तुझे गाते हैं

अठसठि तीरथ नाले ॥

अठसठ तीर्थों सहित ।

गावनि तुधनो जोध महाबल सूरु

सूरमे महाबलि योवे और

गावनि तुधनो खाणी चारे ॥

खावे खानियां तुझे गाती हैं ।

गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रह्ममंडा

पृथ्वी पर सारा जगत तुम्हे गाता है

करि करि रखे तेरे धारे ॥

जो तेरे सुन्दर बना २ कर रखे गये हैं ।

सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि

परन्तु वही तुम्हे गाते हैं जो तुम्हे भाते हैं

रते तेरे भगत रसाले ॥

जो तेरी भक्ति में रंगे हैं ।

होरि केते तुधनो गावनि

और कितने तुम्हे गाते हैं

से मै चिति न आवनि

वह मुझे याद नहीं आते ।

नानकु किआ बीचारे ॥

गुरु जी कहते हैं मैंने विचार कर कहा है ।

सोई सोई सदा सचु साहिबु

तू ठीक सच्चा स्वामी एक ही है

साचा साची नाई ॥

सन्चे नाम वाला है ।

है भी होसी जाइ न जासी

वह पीछे भी था अब भी है आगे भी होगा

रचना जिनि रचाई ॥

जिसने यह सब रचना की है ।

रंगी रंगी भाती करि करि

कई भांति की रंग विरंगी दुनिया

जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥

जिस ने माया द्वारा रची है ।

करि करि देखै कीता आपणा

वह अपने किये को कर के देखता है ।

जिउ तिसदी वडिआई ॥

जिस प्रकार उसकी बढाई है ।

जो तिसु भावै सोई करसी

जो उस को भाता है वही करता है

फिरि हुकमु न करणा जाई ॥

उस की आज्ञा को थला नहीं जाता ।

सो पातिसाहु साहा पति साहिबु

वह बादशाहों का बादशाह, साहिब है

नानक रहणु रजाई ॥१॥

मैं दास उस की आज्ञा में रहता हूँ ।

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥

सुन २ कर उसको समस्त लोग बड़ा कहते हैं ।

केवडु बडा डोठा होइ ॥

यदि किसी ने देखा हो तो बताये कि इतना बड़ा है ।

कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥

उस का मूल्य नहीं, न ही कहा जाता है ।

कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥

कहने वाले तो साथ ही मिल रहे हैं ।

बडे मेरे साहिबा

हे मेरे बड़े स्वामी!

गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥

तू गहरा खजाना गुणों का सागर हैं ।

कोइनजाणैतेराकेताकेवडुचीरा ।१।रहाउ

कौन जाने कि तेरा पसारा कितना बड़ा है ।

सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥

सब बुद्धिमानों ने मिलकर बुद्धि दौड़ाई है ।

सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥

मूल्य पाने वालों ने मूल्य भी बहुत पाया ।

गिझानी धिझानी गुर गुरहाई ॥

ज्ञानी ध्यानी और उनके गुरु महंतों ने कहा ।

कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥

परन्तु तेरी तिल जितनी बड़ाई भी नहीं कही गई ।

सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥

समस्त सत्य, तप और भलाईयां ।

सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥

सत्य पुरुषों को मिली हुई बड़ाईयां ।

तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥

परन्तु तेरे बिना सिद्धियां किसे ने नहीं पाईं ।

करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥

जो किसी को मिली भी तो रोकी नहीं रुकी ।

आखण वाला किआ वेचारा ॥

जो कोई तुझे कहता है वह क्या विचारता है ।

सिफती भरे तेरे भंडारा ॥

तेरे तो बड़ाई से खजाने भरे पड़े हैं ।

जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥

जिसे तू देता है उस से हमारा क्या चारा है ।

नानक सचु सवारण हारा ॥४॥२॥

हे सच्चे तू सब जीवों को बनाने वाला हैं ।

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥

जो कहूँ तो जीता हूँ भूलता हूँ तो मरता हूँ ।

आखणि अउखा साचा नाउ ॥

सच्चे का नाम कहना भी कठिन है ।

साचे नाम की लागै भूख ॥

मुझे सच्चे का नाम कहना भी कठिन है ।

उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥

इस भूख से समस्त दुःख नष्ट हो जाते हैं ।

सो किउ विसरै मेरी माइ ॥

हे माता जी ऐसा दयालु मुझे क्यों भूल जाये ?

साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥

यदि सच्चे नाम वाला सच्चा स्वामी है ।

साचे नाम की तिलु वडिआई ॥

सच्चे नाम की थोड़ी सी बड़ाई भी

आखि थके कीमति नही पाई ॥

कह कह कर थक गये पर मूल्य नहीं पाया गया ।

जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥

यदि सब मिल कर कहने लगें ।

बडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥

फिर भी न बड़ा होगा न कम होगा ।

ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥

न वह मरता है न शोक होता है ।

देदा रहै न चूकै भोगु ॥

वह पदार्थ देता है भूलता नहीं

गुण एहो होरु नाही कोइ ॥

उस में यही गुण है और कोई नहीं ।

ना को होआ ना को होइ ॥३॥

न उस जैसा कोई हुआ न होगा ।

जेवडु आपि तेवडु तेरी दाति ॥

जितना बड़ा तू है उतनी बड़ी तेरी दात है ।

जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥

तू आप ही दिन रात बनाई है ।

खसमु विसारहि ते कमजाति ॥

जो स्वामी को भुलाते हैं वह नीच हैं ।

नानक नावै बाभु सनाति ॥४॥३॥

गुरु जी कहते हैं मनुष्य नाम बिना भूत है।

राग गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा

हे हरि के जन गुरु सच्चे पुरुषा

बिनउ करउ गुर पासि ॥

मैं तेरे पास प्रार्थना करता हूँ ।

हम कीरे किरम सतिगर सरणाई

मैं छोटी कीड़ी से कीड़ा आपकी शरण हूँ

करि दइआ नामु परगासि ॥१॥

कृपा करके नाम का प्रकाश करो ।

मेरे भीत गुरुदेव

हे मेरे मित्र गुरुदेव !

मोक्षउ राम नामु परगासि ॥

मुझे नाम का प्रकाश कर ।

गुरुमति नामु मेरा प्राण सखाई

गुरु की शिक्षा और नाम मेरे प्राणों का सहाई है

हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ॥

हरि का यश हमारी प्रार्थना है ।

हरि जन के बड़ भाग बड़ेरे

हरि जन के बड़े भाग्य हैं

जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥

जिन को हरि की प्यास है ।

हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि

हरि नाम से तृप्त हो जाते हैं

मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥

सत्संग से मिल कर गुणों का प्रकाश होता है ।

जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइआ

जिन्होंने हरि नाम रस का स्वाद नहीं चखा

ते भागहीण जम पासि ॥

वह निरभाग्य यम के पास जायेंगे ।

जो सतिगुर सरणि संगति नही आए

जो गुरु की शरण और सत्संग में नहीं आये

धृगु जीवे धृगु जीवासि ॥३॥

उन्हें और उन की जीवन आशा को धिक्कार है ।

जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई

जिन्होंने गुरु की संगति प्राप्त की है

तिन धुरि मसतकिलिखिआ लिखासि ॥

उनके आदि से मत्थे पर सुलेख लिखा है ।

धनु धंनु सतसंगति

सत्संगति धन है

जितु हरिरसु पाइआ

जहां से हरि रस प्राप्त होता है

मिलि जन नानक नामु परगासि॥४॥४

हरि जनों संग मिलकर नाम का प्रकाश होता है ।

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु

हे मन क्यों यत्न सोचता फिरता है

जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥

जिस उदम में स्वयं ही मालिक पड़ा है ।

सैल पथर महि जंत उपाए

पहाड़ों और पत्थरों में जीव उत्पन्न किये

ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥

और उनका रिजक आगे वहां बना रक्खा है ।

मेरे माधउ जी

हे मेरे महाराज

सतसंगति मिले सु तरिआ ॥

जो तेरी सत्संगति में मिला सो तर गया ।

गुर परसादि परमपदु पाइआ

गुरु की दया से परम पद प्राप्त होता है

सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥

कांटों की सूखी लकड़ी हरी होगई ।

जननि पिता लोक सुत बनिता

माता पिता, लोक, पुत्र, स्त्री

कोइ न किस की धरिआ ॥

कोई भी किसी का आसरा नहीं है ।

रहरासि साहिब (३००)

सटीक

सिरि सिरि रिजकु संवाहे ठाकुरु

ठाकुर प्रत्येक को रिजक पहुँचाता है

काहे मन भउ करिआ ॥२॥

मन तू क्यों भय करता है ।

ऊडे ऊडि आवै सै कोसा

सैंकड़ों कोसों से कूजें उड़कर आ जाती हैं

तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥

पीछे बच्चों को छोड़ कर ।

तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै

उन बच्चों को कौन खिलाता पिलाता है

मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥

उन के मन में स्मरण होता है ।

सभि निधान दस असट सिधान

सक राजावे अठास सिद्धियां

ठाकुर करतल धरिआ ॥

स्वामी ने हाथ की तली पर ला रक्खा है ।

जन नानक बलिवलि सदबलि जाईऐ

मैं तुझ पर बलिहार जाता हूं

तेरा अंतु न पारा वरिआ ॥४॥५॥

तेरे पारावार का कोई अन्त नहीं ।

रागु आसा महला ४ सो पुरखु

१ ओं सतिगुर प्रसाद ॥

सो पुरखु निरंजनु

वह माया रहित पुरुष

हरि पुरखु निरंजनु

माया से परे हरि

हरि अगमा अगम अपारा ॥

बड़ा वेअन्त है ।

सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी

सारे तुम्हें याद करते हैं

हरि सचे सिरजणहारा ॥

हे सच्चे सिरजनहार ।

सभिजीअतुमारेजी तूं जीआका दातारा

तू जीवों का दाता हैं सारे जीव तेरे पुत्र हैं

हरि धिआवहु संतहु जी

हे सन्तो उसे याद करो

सभि दूख विसारण हारा ॥

जो दुखों का नाश करता है ।

हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी

हरि आप ही ठाकुर और नौकर है ।

किआ नानक जंत विचारा ॥१॥

यह जीव वेचारा क्या है ।

तू घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी

तू सब जीवों में घुला मिला है

हरि एको पुरखु समाणा ॥

तू एकही पुरुष समाया हुआ है ।

इकि दाते इकि भेखारी जी

एक दाते हैं एक भंगते हैं

सभि तेरे चोज विडाणा ॥

यह सारे तेरे ही तमाशे हैं ।

तू आपे दाता आपे भुगता जी

तू आप ही दाता और खाने वाला है

हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥

मैं तेरे बिना और को नहीं जानता हूँ ।

तू पारब्रह्म वेअंतु वेअंतु जी

तू परे से परे वेअन्त से वेअन्त हैं

तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥

मैं तेरे गुण क्या कहूँ ।

जो सेवाहे जो सेवहि तुधु जी

जो तेरे खास दास हैं

जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥

मैं उन पर कुर्बान हूँ ।

हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी

जो हरि को याद रखते हैं

से जन जुग महि सुख वासी ॥

वह युगों में सुखी बसते हैं ।

से मुकतु से मुकतु भए

वह मुक्त हो गए हैं

जिन हरि धिआइआ जी

जिन्होंने हरि को याद किया है ।

तिन तूटी जम की फासी ॥

उन की यम की फासी टूट गई है ।

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ

जिन्हों ने निरभय को

धिआइआ जी तिनकाभउ सभु गवासी॥

याद किया है उनका भय सारा दूर हो गया है ।

जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी

जिन्हों ने हरि की सेवा की

ते हरि हरि रूपि समासी ॥

वह हरि रूप में मिल गये हैं ।

से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी

वह धन्य हैं जिन्हों ने हरि को याद किया ।

जनु नानकु तिन बलि जासी ॥ ३ ॥

मैं दास उन पर बलिहार जाता हूं ।

तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी

तेरी भक्ति साथ खजाने

भरे बिअंत बेअंता ॥

बड़े बेअन्त भरे पड़े है ।

तेरे भगव तेरे भगत सलाहनि

सराहते हैं तेरे भक्त

तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥

और अनेकों अनन्त तुझे ।

तेरी अनिक तेरी अनिक करहि

तेरी अनेकों प्रकार की [भक्ति] करते हैं

हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥

पूजा और बेअन्त तप तपते हैं ।

तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि

तेरे अनेकों पढ़ते हैं

बहु सिमृति सासत जी

स्मृतियों शास्त्रों को

करि किरिआ खटु करम करंता ॥

और छः प्रकार के कर्म किया करते हैं ।

से भगत से भगत भले जन नानक जी

वह ही भक्त अच्छे हैं

जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥

जो मेरे परम पुरुष को भाते हैं ।

तू आदि पुरखु अपरंपरु करता जी

तू आदि से अपरमपार कर्ता है

तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥

तेरे जितना और कोई नहीं ।

रहरासि साहिब (३०८)

सटीक

तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी

तू युगों २ में सदा एक हैं

तूं निहचलु करता सोई ॥

तू वही टिका रहने वाला कर्ता हैं ।

तुधु आपे भावै सोई वरतै जी

जो तुझे भाता है सो होता है

तूं आपे करहि सु होई ॥

जो तू करता है सो होता है ।

तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी

तू आप ही सारी दुनिया उत्पन्न की है ।

तुधु आपे सिरजि सभ गोई ।

और आप ही सारी दुनिया मिलाई है ।

जनु नानकु गुण गावै करते के जी

मैं तो तेरे (कर्ता पुरुष के) ही गुण गाता हूँ ।

रहरासि साहिब (३०६)

सटीक

जो सभसै का जाणोई ॥ ५ ॥ १ ॥

जो तू सब के जानने वाला है ।

आसा महला ४ ॥

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥

तू सच्चा कर्ता मेरा स्वामी है

जो तउ भावै सोई थीसी

जो तुझे भाता है वही होता है

जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥रहाउ॥

जो तू देता है सो मैं पाता हूँ ।

सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥

सारी दुनिया तेरी बनाई हुई है सब तुझे ध्याते हैं ।

जिसनो कृपा करहि

जिस पर कृपा करता है ।

रहरासि साहिब (३१०)

सटीक

तिनि नाम रतनु पाइआ ॥

उस ने तेरे से नाम रत्न पाया है ।

गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥

गुरमुखों ने पाया मन मुखों ने गवा लिया ।

तुधुआपिविछोड़िआआपिमिलाइआ १।

तू किसी को परे बठाया किसे पास बुलाया ।

तूं दरीआउ सभ तुझही माहि ॥

सब तेरे (दरया) के अन्दर हैं ।

तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥

तेरे बिना दूसरा और कोई नहीं ।

जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥

सब जीव जन्तु तेरा एक खेल हैं ।

विजोगि मिलिविछुड़िआ संजोगी मेलु ॥

तू बिछड़ों और व्योगियों को मेल देता है ।

जिसनो तू जाणाइहि सोई जनु जाएँ॥

जिसे तू जनाता हूँ वही जान लेता है ।

हरि गुण सदही आखि बखाएँ ॥

वह हरि के गुण सदा ही गाता है ।

जिनि हरि सेविआ तिनि सुख पाइआ ॥

जिन्हों ने हरि की सेवा की उन्होंने सुख पाया है ।

सहजे ही हरिनामि समाइआ ॥ ३ ॥

वह सहज ही हरि संग मिल जाते हैं ।

तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ॥

तू आप कर्ता हूँ सब तेरा किया होता है ।

तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥

तेरे बिना दूसरा और कोई नहीं है ।

तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥

तू करके देखता हूँ आप ही वह जानता है ।

रहरासि साहिब (३१२)

सटीक

जननानक गुरुमुखिपरगटु होइ॥४॥२॥

इस भेद का गुरु कृपा द्वारा पता लगता है ।

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा

ऐसे ताल पर हमारा वास हुआ है

पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥

जहां उस कर्ता का आग पानी बनाया हुआ है ।

पंकजु मोह पगु नही चालै

मोह रूपी कीचड़ में हमारा पैर नहीं चल सकता

हम देखा तह डूबीअले ॥ १ ॥

हम देखते हैं कि वहां अनेकों डूब गये हैं ।

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥

हे मूर्ख मन ! तू एक को क्यों नहीं याद करता ।

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ । शरहाउ ।

हरि को भुलाने से तेरे गले में फांसी पड़ेगी ।

ना हउ जती सती नही पड़िआ

मैं जती सति और पढ़ा हुआ नहीं हूँ

मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥

महामूर्ख का मेरा संसार में जन्म हुआ है ।

प्रणवति नानक तिनकी सरणा

मैं प्रार्थना द्वारा उनकी शरण आया हूँ

जिन तू नाही वीसरिआ ॥ २ ॥ ३ ॥

जिन्हों को तू भुला हुआ नहीं है ।

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥

मनुष्य शरीर क्यों मिला है ।

रहरासि साहिब (३१४)

सटीक

गोविंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

गोविन्द को मिलने की यह बारी है ।

अवरि काज तेरे कितै न काम ॥

और काम तेरे किसी काम नहीं हैं ।

मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥

तू संतजनों संग मिल, हरिनाम जप ।

सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥

अथाह भवसागर से पार उतरने में लग ।

जनमु बृथा जातरंगिमाइआकै । १ । रहाउ ।

माया के तमाशों में तेरा जन्म व्यर्थ जा रहा है ।

जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥

प्रार्थना कर कि मैं जप तप धर्म नहीं किया ।

सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥

न हरिजनों साथ संगत की सेवा की है ।

रहरासि साहिब (३१५)

सटीक

कहु नानक हम नीच करंमा ॥

मेरे सब काम नीचों (पापियों) वाले हैं ।

सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

पर अब शरण पड़े की लज्जा रख लो ।

१ ओं श्री वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

एक जो प्रकाश रूप वाहिगुरू है ।

जिसकी हर जगह फ़तह है ।

पातशाही १० ॥ चौपई ॥

पुनि राखस का काटा सीसा ॥

फिर उस दैत का सिर काटा ।

श्री असिकेत जगतु के ईसा ॥

तलवार के धनी जगत के स्वामी ने ।

रहरासि साहिब (३१६)

सटीक

पुहपन बसटि गगन ते भई ॥

राक्षस मरने से आकाश से पुष्प वृष्टि हुई ।

समहिन आन बधाई दई ॥ १ ॥

सब ने आ कर बधाई दी ।

धन्य धन्य लोगन के राजा ॥

आप, लोगों के राजे धन्य हो ।

दुसटन दाह गरीब निवाजा ॥

दुष्टों को मारने और गरीबों की रक्षा करनेवाले हो ।

अखल भवन के सिरजनहारे ॥

सब लोगों के बनाने वाले

दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥ २ ॥

दास जान कर मुझे बचा लो ।

कवियो वाच वेनती चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥

हमारी हाथ देकर रक्षा करो ।

पूरन होइ चित्त की इच्छा ॥

हमारे मन की इच्छा पूरी हो जाये ।

तव चरनन मन रहै हमारा ॥

हमारा मन तेरे चरणों में लगा रहे ।

अपना जान करो प्रतिपारा ॥ १ ॥

अपना जान कर हमारी रक्षा करो ।

हमारे दुसट सभै तुम धावहु ॥

हमारे सब पाप नष्ट करो ।

आप हाथ दै मोहि बचावहु ॥

आप हाथ देकर मुझे बचाओ ।

रहरासि साहिब (३१८)

सटीक

सुखी बसै मोरो परिवारा ॥

मेरा सारा परिवार सुखी बसे ।

सेवक सिख्य सभै करतारा ॥२॥

हे करतार सब सिख्य सेवक सुखी बसे ।

मो रच्छा निज करदैं करीए ॥

अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो ।

सभ बैरिन को आज संघरीए ॥

सब शत्रुओं को नाश कर दो ।

पूरन होइ हमारी आसा ॥

हमारी आशा पूरी हो जाये ।

तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥

तेरे भजन की इच्छा बनी रहे ।

तुमहि छाड कोई अवर न धिआऊं ॥

मैं तुम्हें त्याग और को नहीं ध्याऊंगा ।

रहरासि साहिब (३१६)

सटीक

जो बर चाहों सु तुमते पाऊं ॥

जो बर चाहूँगा तेरे से ही पाऊँगा ।

सेवक सिखव हमारे तारीअहि ॥

हमारे सब सिखव सेवक पार उतार लो ।

चुनि चुनि सत्रु हमारे मारीअहि ॥४॥

हमारे सब शत्रु चुन २ कर मार दो ।

आप हाथ दै मुझै उबरीऐ ॥

मुझे हाथ देकर बचा लो ।

मरण काल का त्रास निवरीऐ ॥

मृत्यु समय का भय दूर कर दो ।

हूजो सदा हमारे पच्छा ॥

सदा हमारी रक्षा करो ।

श्री असिधुज जू करीअहु रच्छा ॥५॥

तलवार के निशान वाले रक्षा करो ।

रहरासि साहिब (३२०)

सटीक

राख लेहु मुहि राखनहारे ॥

हे रत्नक रत्ना करो ।

साहिब संत सहाइ पिआरे ॥

आप संतों के स्वामी सहायक प्यारे हो ।

दीन बंधु दुसटन के हंता ॥

गरीबों के प्यारे दुष्टों के मारने वाले हो ।

तुमहो पुरी चतुरदस कंता ॥ ६ ॥

१४ पुरियों के स्वामी हो ।

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥

समय पाकर ब्रह्मा ने शरीर धारन किया ।

काल पाइ सिवजू अवतरा ॥

समय पाकर शिवजी ने अवतार लिया ।

काल पाइ कर बिसन प्रकासा ॥

समय पाकर विष्णु ने प्रकाश किया ।

रहरासि साहिब (३२१)

सटीक

सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥

यह सब अकाल पुरुष ने तमाशा किया ।

जवन काल जोगी सिव कीओ

जिस अकाल पुरुष ने शिवजी जोगी बनाये ।

बेद राज ब्रह्मा जो थीओ ॥

वेदों का राजा ब्रह्मा भी बन गया ।

जवन काल सभ लोक सवारा ॥

जिस अकाल पुरुष ने सब लोकों को बनाया ।

नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥

उस अकाल पुरुष को मेरी नमस्कार है ।

जवन काल सभ जगत बनायो ॥

जिस अकाल पुरुष ने संसार को बनाया ।

देव दैत जच्छन उपजायो ॥

देवतों दैत्यों जच्छनों को उत्पन्न किया ।

रहरासि साहिब (३२२)

सटीक

आदि अंत एकै अवतारा ॥

वह आदि अन्त से ही एक अवतार है ।

सोई गुरु समभीअहु हमारा ॥६॥

उसे ही हमारा गुरु समझो ।

नमसकार तिसही को हमारी ॥

उसे हमारी नमस्कार है ।

सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥

जिस ने सारी प्रजा बनाई है ।

सिवकन को सिवगुन सुख दीअो ॥

दासों को शान्ति, आराम, सुख दिया ।

सत्रन को पल मों बध कीअो ॥१०॥

शत्रुओं को पल में नाश किया ।

घट घट के अंतर की जानत ॥

वह सब के अन्दर की जानता है ।

भले बुरे की पीर पछानत ॥

भले बुरों की पीड़ा पछानता है ।

चीटी ते कुं चर असथूला ॥

कीड़ी और हाथी जो बड़ा सारा है ।

सभ पर कृपा दसटि कर फूला ॥११॥

सब पर कृपा दृष्टि कर प्रसन्न होता है ।

संतन दुख पाए ते दुखी ॥

सन्तों के दुःख से दुःखी होता है ।

सुख पाए साधन के सुखी ॥

सन्तों के सुख से सुखी होता है ।

एक एक की पीर पछानै ॥

एक २ की पीड़ा पछानता है ।

घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥

हर एक के हृदय की जानता है ।

रहरासि साहिव (३२४)

सटीक

जब उदकरख करा करतारा ॥

जब करतार पसारा पसारता है ।

प्रजा धरत तब देह अपारा ॥

तब अपार प्रजा देह धारण करती है ।

जब आकरख करत हो कबहूँ ॥

जब कर्ता सब को अपनी ओर खींचता है ।

तुम मैं मिलत देह धर सबहूँ ॥१३॥

तब सब देह धारी तेरे में आ मिलते हैं ।

जेते बदन सृसटि सभ धारै ॥

जितने मुख धरती पर हैं सब धारन किये ।

आप अपनी बूझ उचारै ॥

वह सब आपनी २ ही समझ कहते हैं ।

तुम सभ ही ते रहत निरालम ॥

आप सब से पृथक् रहते हो ।

रहरासि साहिब (३२५)

सटीक

जानत वेद भेद अर आलम ॥१४॥

वेदों और संसार के भेद जानते हो ।

निरंकार नृबिकार नृलंभ ॥

अकार बिकार आसरे रहित हो ।

आदि अनील अनादि असंभ ॥

आदि गिननी बिना अनादि काल से हो ।

ताका मूढ़ उच्चारत भेदा ॥

उस वैश्रन्त का मूर्ख भेद जानता है ।

जाका भेव न पावत वेदा ॥१५॥

जिस का भेद वेद भी नहीं पा सकता ।

ताको कर पाहन अनुमानत ॥

उसे पत्थर करके अनुमान करता है ।

महाँ मूढ़ कछु भेद न जानत ॥

महा मूर्ख कुछ भेद नहीं जानता ।

रहरासि साहिब (३२६)

सटीक

महांदेव को कहत सदा सिव ॥

महा प्रकाश को सदा शिव करके जानता है ।

निरंकार का चीनत नहि भिव ॥१६॥

निरंकार का भेद तो समझता ही नहीं ।

आपु आपनी बुधि है जेती ॥

जितनी अपनी २ बुद्धि है ।

बरनत भिन भिन तुहि तेती ॥

पृथक् २ उतनी २ हर कोई कहता है ।

तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥

हे निरंकार तेरा पसारा नहीं समझा जाता ।

किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥१७॥

तू किस प्रकार संसार रचा है ।

एकै रूप अनूप सरूपा ॥

यह सारा तेरा एक स्वरूप का ही अनूप है ।

रंक भयो राव कही भूपा ॥

आप कहीं गरीब और कहीं राजा बने हो ।

*अण्डज जेरज सेतज कीनी ॥

अण्डों, जेर और पसीने वाली दुनिया रची है ।

उतभुज खानि बहुरि रचि दीनी ॥१८॥

खेती बाड़ी वाली खाणी फिर रची है ।

कहूं फूल राजा हों बैठा ॥

कहीं तू प्रसन्न होकर राजा बन बैठा है ।

❀चार खानियां

१. अण्डज — अण्डों से उत्पन्न पक्षी आदि ।
२. जेरज — जेर से उत्पन्न मनुष्य, पशु आदि ।
३. सेतज — पसीने से जूयें आदि ।
४. उतभुज — धरती से सांप, बिच्छू आदि ।

कहूं सिमटि भयो संकर इकैठा ॥

कहीं तू बहुत संकुचित हो बैठा है ।

सगरी सृष्टि दिखाइ अचंभव ॥

समस्त सृष्टि को हैरान कर दिया है ।

आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥१६॥

पहले से तेरा सत्य प्रकाश था ।

अब रच्छा मेरी तुम करो ॥

अब आप मेरी रक्षा करो ।

सिक्ख्य उबार असिक्ख्य संघरो ॥

सिखों की रक्षा करो और असिखों को नाश करो ।

दुसट जिते उठवत उत्पाता ॥

जितने दुष्ट उपद्रव मचाते हैं ।

सकल मलेछ करो रणघाता ॥२०॥

सब मलेछों का रण में नाश करो !

जे असिधुज तव सरनी परे ॥

हे तलवार धारी जो आप की शरण पड़े हैं ।

तिन के दुसट दुखत ह्वै मरे ॥

उन के विरोधी सब दुखी होकर मरे हैं ।

पुरख जवन पग परे तिहारे ॥

हे अकाल जो आपकी शरण आ पड़े हैं ।

तिनके तुम संकट सभ टारे ॥२१॥

उन के सब दुःख आप ने टाल दिये हैं ।

जो कलि को इक बार धिऐ है ॥

जो अकाल को एक बार ध्यायेंगे ।

ताके काल निकट नहि ऐ है ॥

उन के पास मृत्यु नहीं आयेंगी ।

रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥

उन की रक्षा हर समय होगी ।

दुसट अरिसट टरै ततकाला ॥२२॥

उन के बड़े विरोधी शीघ्र टल जायेंगे ।

कृपा दृष्टि तन जाहि निहरिहो ॥

अकाल पुरुष जिन्हें कृपा दृष्टि से देखेगा ।

ताके ताप तनक महि हरिहो ॥

उन के दुखों को शीघ्र नाश कर देगा ।

रिधि सिधि घर मो सभ होई ॥

उन के घर में रिद्धि सिद्धि सब आ जावेगी ।

दुसट छाह छवै सकै न कोई ॥२३॥

कोई दुष्ट उनकी छांव भी नहीं छू सकता ।

एक बार जिन तुमै संभारा ॥

जिस ने एक बार उसे याद किया है ।

काल फास ते ताहि उबारा ॥

उस को काल की फांसी से बचा लिया है ।

जिन नर नाम तिहारो कहा ॥

जिस मनुष्य ने तेरा नाम लिया है ।

दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥

वह दीनता दुष्टता दुःख से बचा लिया ।

खड़ग केत मै सरणि तिहारी ॥

हे तलवार धारी हम आपकी शरण हैं ।

आप हाथ दै लेहु उवारी ॥

आप हाथ देकर मुझे बचा लो ।

सरब ठौर मो होहु सहाई ॥

हर स्थान पर मेरे सहायक हो ।

दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥

दुष्टता दुःख से मुझे बचा लो ।

कृपा करी हम पर जग माता ॥

जगत की शक्ति ने हमारे ऊपर कृपा की है ।

ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥

हमने शुभ लग्न में ग्रंथ समाप्त किया है ।

किल बिख सकल देह को हरता ॥

तेरा नाम शरीर के सब पापों को हरता है ।

दुसट दोखियन को छै करता ॥२६॥

दुष्टों विरोधियों को नाश करता है ।

श्री असिधुज जब भए दइआला ॥

तलवार निशान वाले जब दयालु हुये हैं ।

पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥

शीघ्र दशम ग्रन्थ को पूरा कर लिया है ।

मन बांछित फल पावै सोई ॥

मन बांछित फल पा लिया ।

दूख न तिसै बिआपत कोई ॥२७॥

उसे कोई भी दुःख आकर नहीं छूयेगा ।

अडिल

सुनै गुंग जो याहि

जो गूंगा मनुष्य इसे सुनेगा ।

सु रसना पावई ॥

वह रसना को पा लेगा ।

सुनै मूढ़ चितलाइ चतुरता आवई ॥

जो मूख मन से सुनेगा उसे चतुराई आ जायेगी ।

दूख दरद भौ निकट

दुःख दर्द भय निकट

न तिन नर के रहै ॥

कुछ भी नहीं रहेगा उस मनुष्य के ।

हो जे याकी एक बार

हे गुरुमुखो जो मनुष्य एक बार

चौपई को कहै ॥२८॥

इस चौपई को पढ़े ।

चौपई

संवत सत्रह सहस भनिज्जै ॥

पहले १७ सौ संवत कहा है ।

अरध सहस फुनि तीन कहिज्जै ॥

आधा सौ और फिर तीन कहा है ।

भाद्रव सुदी अष्टमी रवि वारा ॥

भाद्रपद मास की शुदि अष्टमी रविवार था ।

तीर सतुद्रव ग्रंथ सुधारा ॥२९॥

सतलुज नदी के किनारे ग्रन्थ को सुधारा था ।

इति श्री चरित्रो पखिआने

यह स्त्रीयों के चरित्रों का प्रसंग था ।

रहरासि साहिब (३३५)

सटीक

त्रिया चरित्रे

स्त्रीयों के चरित्रों को

मन्त्री भूप संवादे चार सौ पाँच

मन्त्री और राजे को सुना पढ़ा यह चार सौ पाँच
चरित्र समाप्त मसतु सुभ मसतु ॥३०॥

चरित्र अच्छे लगन समाप्त हुये हैं ।

दोहरा

दास जान कर दास पर

दास जानकर दास पर

कीजै कृपा अपार ॥

अपार कृपा करो

आप हाथ दै राख मुहि

आप हाथ देकर मेरी रक्षा करो ।

रहरासि साहिब (३३६)

सटीक

मन क्रम बचन विचार ॥१॥

मन बाणी शरीर करके विचारो ।

चौपई ॥

मैं न गनेसहि पृथम मनाऊं ॥

मैं पहले गणेश को नहीं मनाऊँगा ।

किशन बिशन कबहूँ नहि धिआऊँ ॥

कृष्ण विष्णु को भी कभी नहीं ध्याऊँगा ।

कान सुने पहिचान न तिन सों ॥

मैं कानों सुने हूँ मेरी कोई जान पहचान नहीं है ।

लिव लागी मोरी पग इनसों ॥२॥

मेरी प्रीती तो केवल अकाल पुरुष के चरणों संग है ।

महा काल रखवार हमारो ॥

यहां अकाल पुरुष हमारा राखा है ।

महा लोह मैं किंकर थारो ॥

हे महा लोह पुरुष मैं आपका दास हूँ ।

अपना जान करो रखवार ॥

अपना जान कर मेरी रक्षा करो ।

बाहि गहे की लाज बिचार ॥३॥

बांह पकड़ी की लज्जा विचारो ।

अपना जान मुझै प्रतिपरीऐ ॥

अपना जान कर मेरी पालना करो ।

चुन चुन सत्र हमारे हमारे मरीऐ ॥

चुन २ कर मेरे सब वैरी मार दो ।

देग तेग जग मै दोऊ चलै ॥

देग तेग जगत में दोनों चलें ।

राख आप मुहि अउर न दलै ॥४॥

आप मेरी रक्षा करो मुझे कोई न मार सके ।

रहरासि साहिब (३३८)

सटीक

तुम मम करहु सदा प्रतिपारा ॥

मेरी तुम सदा पालना करो ।

तुम साहिब मैं दास तिहारा ॥

तुम मालिक हो मैं दास हूँ ।

जान अपना मुझै निवाज ॥

मुझे अपना जान कर निवाजो ।

आप करो हमरे सभ काज ॥१॥

मेरे सब काम पूरे करो ।

तुम हो सभ राजन के राजा ॥

आप सब राजाओं के राजे हो ।

आपे आप गरीब निवाजा ॥

आप स्वयं गरीबों को निवाजने वाले हो ।

दास जान करि कृपा करहु मुहि ॥

दास जा कर मुझ पर कृपा करो ।

रहरासि साहिब (३३६)

सटीक

हारि परा मैं आन द्वार तुहि ॥६॥

मैं हार कर आपके दर आ पड़ा हूँ ।

अपना जान करो प्रतिपारा ॥

अपना जान कर मेरी पालना करो ।

तुम साहिब मैं किंकरु थारा ॥

आप मालिक, मैं आप का दास हूँ ।

दास जान दै हाथ उबारो ॥

दास जानकर हाथ देकर बचाओ ।

हमरे सभ बैरीअन संघारो ॥

हमारे सब वैरियों को मारो ।

पृथम धरो भगवत को धिआना ॥

मैं पहले भगवान का ध्यान धरता हूँ ।

बहुर करो कविता बिधि नाना ॥

फिर नाना प्रकार की कविता रचता हूँ ।

रहरासि साहिब (३४०)

सटीक

कसन यथा मत चरित्र उचारो ॥

पहले मैं यथा बुद्धि कृष्ण के कौतुक कहता हूँ ।

चूक होइ कवि लेहु सुधारो ॥८॥

जो कोई भूल होवे हे कवियो शुद्ध कर लो ।

कविवाच दोहरा ॥

श्री महाराज कवि जी स्वयं मुख से उतारते हैं ।

जो निज प्रभ मो सो कहा

जो स्वयं मुझे अकाल पुरुष ने कहा है

सो कहिहों जग माहि ॥

वह मैं सब जगत को आकर कहता हूँ ।

जो तिह प्रभ को धिआइ है

जो मालिक की याद करेंगे

अंत सुरग को जाहि ॥९॥

वह अंत में स्वर्ग को चले जायेंगे ।

रहरासि साहिब (३४१)

सटीक

दोहरा ॥

हरि हरि जन दुई एक है

हरि और हरि के दास दोनों एक हैं

बिब बिचार कछ नाहि ॥

कोई दूसरा विचार इस में कुछ नहीं है ।

जल ते उपज तरंग जिउ

जिस प्रकार पानी से बुदबुदा उत्पन्न होता है ।

जल ही बिखै समाहि ॥२॥

फिर पानी में ही लीन हो जाता है ।

दोहरा ॥

जब आइस प्रभ को भयो

जब मालिक की आज्ञा हुई

रहरासि साहिब (३४२)

सटीक

जनम धरा जग आइ ॥

तब मैं जगत में आकर जन्म लिया ।

अब मैं कथा संछेपते

अब मैं कथा को इकट्ठी करता हूं ।

सभहूं कहत सुनाइ ॥३॥

सब को सुना कर कहता हूं ।

दोहरा ॥

ठाठ भयो मैं जोर कर

मैं हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया

बचन कहा सिर न्याइ ॥

और सिर झुका कर कहा ।

पंथ चलै तब जगत में

तब संसार में पंथ चलेगा

रहरासि साहिब (३४३)

सटीक

जब तुम करो सहाइ ॥४॥

जब आप सहायता करोगे ।

दोहरा ॥

अकाल पुरख की देह में

अकाल पुरुष के विशाल शरीर में

कोटिक बिसन महेस ॥

करोड़ों ही विष्णु और शिव हैं ।

कोटि इन्द्र ब्रहमा किते

करोड़ों ही इन्द्र और वेअन्त ब्रह्मा

रवि ससि कोट जलेस ॥

सूर्य चन्द्रमा और करोड़ों ही वरन आदि हैं ।

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को

जो सन्त तुम्हारे ध्यान को

रहरासि साहिब (३४४)

सटीक

नित उठ धिए हैं संत ॥

नित्य प्रातः उठ कर ध्यावेंगे ।

अंत लहेंगे मुक्ति फल

बह अन्त में मुक्ति फल ले लेंगे

पावहिंगे भगवंत ॥

और मालिक को खोज लेंगे ।

दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अटल

राम की कथा युगों २ में अटल है

सभ कोऊ भाखत नेत ॥

हर कोई नित्य कहता है ।

सुरग वास रघुबर करा

राम ने स्वर्ग में निवास दे दिया

रहरासि साहिब (३४५)

सटीक

सगरी पुरी समेत ॥६॥

समस्त अयोध्या पुरी समेत ही ।

चौपई ॥

जो इह कथा सुनै अर गावै ॥

जो मनुष्य यह कथा सुने और गायेगा ।

दूख पाप तिह निकट न आवै ॥

दुःख, पाप उस के निकट नहीं आवेगा ।

बिसन भगत कीए फल होई ॥

विष्णु की भक्ति का यह फल होगा ।

आधि ब्याधि छवै सकै न कोई ॥७॥

आधि ब्याधि के दुःख निकट नहीं आ सकते ।

संमत सतरह सहस पचावन ॥

संवत् सतरह सौ पचावन

रहरासि साहिब (३४६)

सटाक

हाड़ वदी पृथम सुख दावन ॥

हाड़ वदी १ सुखदाई ।

त्वप्रसादि कर ग्रंथ सुधारा ॥

आप की कृपा द्वारा ग्रन्थ को सुधारा ।

भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥८॥

यदि मुझ से कोई भूल हो गई हो आप सुधार लें ।

दोहरा ॥

नेत्र तुंग के चरण तर

उच्च नेत्रों वाली नैणां देवी के पहाड़ के नीचे

सुतद्रव तीर तरंग ॥

सतलुज की तरंगों के किनारे ।

श्री भगवत पूरन कीयो

ग्रन्थ भगवत को पूरा किया

रहरासि साहिब (३४७)

सटीक

रघुवर कथा प्रसंग ॥६॥

राम की कृपा द्वारा यह कथा प्रसंग

साध असाध जानयो नही

अच्छे बुरे गुणों को नहीं जाना

बाद सुवाद बिवाद ॥

अच्छे बुरे भगड़े भी नहीं पछाने ।

ग्रंथ सकल पूरन कीयो

सब ग्रन्थों को पूरा कर लिया है ।

भगवत कृपा प्रसादि ॥१०॥

एक भगवान की दयालुता द्वारा ।

सवैया ॥

पांइ गहे जब ते तुमरे

जब से मैं आप के चरणों को पकड़ा है ।

रहरासि साहिब (३४८)

सटीक

तब ते कोऊ आंख तरे नही आनयो॥

तब से मैं अन्य किसी को आंख तले नहीं लाया ।

राम रहीम पुरान कुरान

राम रहीम पुरान और कुरान

अनेक कहैं मत एक न मानयो ॥

अनेकों ने कहा है पर मैं किसी को नहीं माना ।

सिमति सासत्र वेद सबै

श्री स्मृतियों शास्त्रों वेदों

बहु भेद कहैं हम एक न जानयो ॥

ने बहुत वेष कहे परन्तु हम एक नहीं जाना ।

श्री असिपान कृपा तुमरी कर

हे हाथ में तलवार पकड़ने वाले

मैं न कहयो सभ तोहि बखानयो॥११॥

यह सब कुछ आप की कृपा से कहा है ।

रहरासि साहिब (३४६)

सटीक

दोहरा ॥

सगल दुआर कउ छाडिकै

सब द्वारों को त्याग कर

गहिओ तुहारो दुआर ॥

मैंने आप का दर आ पकड़ा है ।

बाहि गहे की लाज अस

तेरा धारी बांह को पकड़ने की लज्जा रख लेनी

गोबिंद दास तुहार ॥१२॥

मैं (गुरु) गोविन्दसिंह आप की शरण आया हूँ ।

रहरासि साहिब (३५०)

सटीक

रामकली महला ३ ॥

अनंदु

१ ओं सतिगुरुप्रसादि

अनंदु भइआ मेरी माए

हे मेरी माता मुझे अनंद हुआ है

सतिगुरु मैं पाइआ ॥

मैं सतगुरु को प्राप्त कर लिया है ।

सतिगुरु त पाइआ सहज सेती

सहज ही गुरु को पा लिया है

मनि वजोआ वाधाईआ ॥

मन में बड़ी खुशी हुई है ।

राग रतन परवार परीआ

राग रत्न परियां परिवार सहित

रहरासि साहिब (३५१)

सटीक

सबद गावणि आईआ ॥

गुरु शब्द को गाने आई हैं ।

सबदो त गावहु हरी केरा

उस गुरु शब्द को गाते हैं

मनि जिनी वसाइआ ॥

जिस के मन में बसा है ।

कहै नानक अनंदु होआ

गुरु जी कहते हैं मन को आनन्द हुआ है ।

सतिगुरु मै पाइआ ॥१॥

गुरु की प्राप्ति से

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥

हे मेरे मन तू सदा प्रमेश्वर से मिला रह ।

हरि नालि रहु तू मंन मेरे

हे मेरे मन हरि संग रहने से

दूख सभि विसारणा ॥

तेरे सब दुःख नष्ट हो जायेंगे ।

अंगीकार ओहु करे तेरा

वह कर्ता तेरा पक्ष करेगा

कारज सभि सवारणा ॥

और तेरे काम सब सवार देगा ।

सभना गला समरथु सुआमी

वह निरंकार सब बातों में समर्थ है

सो किउ मनहु विसारे ॥

उस को मन से क्यों भुलाएं ।

कहै नानक मंनि मेरे

गुरु जी कहते हैं हे मेरे मन !

सदा रहु हरि नाले ॥२॥

तू सदा प्रमेश्वर के संग रह ।

रहरासि साहिब (३५३)

सटीक

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरे ॥

हे सच्चे साहिब तेरे घर क्या नहीं है

घरि त तेरे सभु किछु है

तेरे घर तो सब कुछ है ।

जिसु देहि सु पावए ॥

जिसे तू देता है वह सब कुछ पाता है ।

सदा सिफति सलाह तेरी

सदा तेरी प्रसंशा की प्रसंशा करता है

नामु मनि वसावए ॥

नाम को मन में बसाता है ।

नामु जिनके मनि वसिआ

जिन के मन में नाम बसा है

वाजे सबद घनेरे ॥

उन के घर बहुत आनन्द खुशियां हैं ।

कहै नानकु सचे साहिब

गुरु जी कहते हैं हे सच्चे स्वामी

किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

तेरे घर क्या नहीं है ।

साचा नामु मेरा आधारो ॥

तेरा सच्चा नाम मेरा आसरा है ।

साचु नामु अधारु मेरा

सच्चे नाम का मेरा आसरा है

जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥

जिसने सब भूखें दूर कर दी हैं ।

करि साँति सुख मनिआइ वसिआ

गुरु ने मन को शीतलता और सुख दिया है

जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥

जिसने सब आवश्यकतायें पूरी की हैं ।

रहरासि साहिब (३५५)

सटीक

सदा कुरवाणु कीता गुरु विटहु

मन को गुरु ऊपर सदा कुर्बान किया है

जिसदीआ एहि वडिआईआ ॥

जिस में उपोक्त यह सब बड़ाइयां हैं ।

कहै नानक सुणहु संतहु

गुरु जी कहते हैं हे सन्तो सुनों !

सबदि धरहु पिआरो ॥

गुरु शब्द से प्यार करो ।

साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

हे निरंकार तेरा सच्चा नाम मेरा आसरा है ।

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥

गुरु शब्द वाले बाजे सुभाग्य घरों में बजते हैं ।

घरि सभागै सबद वाजे

सुभाग्य घरों में गुरु शब्द वाले बाजे बजते हैं ।

कला जितु घरि धारीआ ॥

जिस घर में निरंकार ने अपनी शक्ति धारी है ।

पंच दूत तुधु वसि कीते

हमारे पंच दूत गुरु ने हमारे वस कर दिये हैं ।

कालु कंटकु मारिआ ॥

और काल शत्रु को मार दिया है ।

धुरि करमि पाइआ तुधु जिनकउ

पीछे से जिसे कृपा का खजाना मिला है

सि नामि हरि कै लागे ॥

हे करतार तेरी ओर से वह नाम में लगे है ।

कहै नानकु तह सुखु होआ

गुरु जी कहते हैं वह सुख हुआ है

तितु घरि अनहद बाजे ॥५॥

उस घर में निरंतर बाजे बजते हैं ।

रहरासि साहिब (३५७)

सटीक

अनदु सुणहु वडभागीहो

हे वडभागीओ आनन्द को सुनो

सगल मनोरथ पूरे ॥

तुम्हारे सब मनोरथ पूरे हो जायेंगे ।

पारब्रह्म प्रभु पाइआ

गुरुमुखों ने पारब्रह्म प्रभु को पा लिया है

उतरे सगल विसूरे ॥

उन के सब रोग दुःख उतर गये हैं ।

दूख रोग संताप उतरे

दुःख रोग संताप भी सब उतर गये हैं

सुणी सची बाणी ॥

गुरुमुखों ने सच्ची बाणी सुनी है ।

संत साजन भए सरसे

संत सज्जनों सहित प्रसन्न हो गये हैं

रहरासि साहिब (३५८)

सटीक

पूरे गुर ते जाणी ॥

यह रीति पूरे गुरु से जानी है ।

सुणते पुनीत कहते पवितु

कहने और सुनने वाले सब पवित्र हो गये

सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥

गुरु सब में एक समान पूरा है ।

बिनवन्ति नानक गुर चरण लागे

गुरु जी कहते हैं गुरु चरणों से प्रीत लगाने से

बाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥

निरंतर सुन्दर बाजे बजते हैं ।

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिनि वसतू पईओ

थाल में तीन वस्तु पाई हैं

सतु संतोखु वीचारो ॥

सत्य सन्तोष और ज्ञान विचार।

अमृत नामु ठाकुर का पइओ

स्वामी का अमृत नाम भी पाया है

जिसका सभसु अधारो ॥

जिस नाम का सब को आसरा है।

जे को खावै जे को भुं चै

जो कोई इस नाम भोजन को खावे और पचावे

तिसका होइ उधारो ॥

उस का उधार होता है।

एह वसतु तजी नह जाई ॥

ऐसी आश्चर्य वस्तु छोड़ी नहीं जाती।

नित नित रखु उरि धारो ॥

नित्य प्रति इसे हृदय में धारण करो।

तम संसारु चरन लगि तरीऐ

संसार अंधेरे में गुरु चरणों से चलो ।

सभु नानक ब्रह्म पसारो ॥१॥

फिर सारे ही प्रभु फैला नजर आयेगा ।

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही

मैं तेरा किया नहीं जाना ।

मैनो जोगु वीतोई ॥

तू ने मुझे हर प्रकार समर्थ किया है ।

मै निरगुणिआरे को गुणु नाही

मैं निरगुण हूँ मेरे में कोई गुण नहीं

आपे तरसु पइओई ॥

तुझे आप ही तरस पड़ा है ।

रहरासि साहिब (३६१)

सटीक

तरसु पइआ मिहरामति होई

तरस हुआ तो बड़ी कृपालता हुई ।

सतिगुर सजणु मिलिआ ॥

जो गुरु सब्जन मिल गया ।

नानक नामु मिलै तां जीवां

गुरु का नाम मिले तो मैं जीता हूँ ।

तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

मेरा तन मन हरा हो जाता है ।

पउड़ी

तिथै तू समरथु जिथै कोह नाहि ॥

तू वहां समर्थ हैं जहां कोई नहीं है ।

ओथै तेरी रख अगनी उदरमाहि ॥

गर्भ की अग्नि में तेरी रक्षा देखी है ।

रहरासि साहिब (३६२)

सटीक

सुणिकै जम के दूत

यम के दूत सुन कर

नाइ तेरै छडि जाहि ॥

तेरे नाम को, जीव छोड़ जाते हैं ।

भउजलु बिखम असगाहु

वेअन्त कठिन संसार भउजल

गुर सबदी पारि पाहि ॥

गुरु शब्द से पार उतर जायेगा ।

जिन कउ लगी पिआस

जिसे अमृत नाम की प्यास लगी है ।

अमृत सेह खाहि ॥

वह यह खाते सुख पाते हैं ।

कलि महि एहो पुंनु गुणगोविंदगाहि॥

कलयुग में गोविन्द के गुण गाना बड़ा मुख्य है ।

रहरासि साहिब (३६३)

सटीक

सभसै नो किरपाल समाले साहि साहि ॥

सांस र सबकी कृपालता, संभाल करता है ।

बिरथाकोह न जाइ जि आवै तुधुआहि ॥

सांस खाली न जाए मालिक को याद करता ही जाए ।

सलोक महला ५ ॥

अंतरि गुरु आराधणा

मन में गुरु की आराधणा करनी अच्छी है ।

जिहवा जपि गुर नाउ ॥

रसना द्वारा गुरु का जाप करना योग्य है ।

नेत्री सतिगुर पेखणा

आंखों से गुरु का दर्शन करना योग्य है

स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥

कानों से गुरु का नाम सुनना ।

सतिगुर सेती रतिआ

गुरु संग प्रेम करने से

दरगह पाईऐ ठाउ ॥

दरगाह में बैठने को स्थान मिलता है ।

कहु नानक किरपा करे

गुरु जी कहते हैं कृपा करके

जिसनो एह वथु देइ ॥

जिसे यह नाम वस्तु प्रदान करता है ।

जग महि उत्तम काढीअहि

संसार में उत्तम कहे जाते हैं ।

विरले केई केइ ॥१॥

कोई विरले २ ही ।

म० ५ ॥

रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥

रखने वाला आप ही बचा रखता है ।

गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥

गुरु के चरणों में गिरा कर काम संवार देता है ।

होआ आपि दइआलु

जो दइआल होवे तो

मनहु न विसारिअनु ॥

मन से नहीं भूलता है ।

साध जना कै संगि

संतों संग मिला कर

भवजलु तारिअनु ॥

भवजल से उतार देता है ।

साकत निंदक दुसट

साकतों निन्दकों दुष्टों को

खिन माहि बिदारिअनु ॥

क्षण में मार देता है ।

तिसु साहिब की टेक

उस स्वामी की ओट है

नानक मनै माहि ॥

मन में गुरु जी कहते हैं ।

जिसु सिमरत सुख होइ

जिस के याद किये सुख होता है

सगले दूख जाहि ॥२॥

और सब दुःख चले जाते हैं ।

अरदास

१ ओं वाहिगुरु जी की कतह ॥

श्री भगौती जी सहाइ ।

बार श्री भगौती जी की पातशाही १० । प्रथम
भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ । फिर
अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ।
अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ श्री हरिराइ । श्री
हरिकिशन धिआईऐ जिम डिठे सभि दुखि जाइ ।
तेग बहादर सिमरिए घर नउ निधि आवै धाइ ।
सभ थाईं होइ सहाइ । दसवां पातशाह श्री गुरु
गोबिंद सिंह महाराज जी ! सब थाईं होइ सहाइ ।
दशहों सत्गुरुओं के ज्योति स्वरूप श्री गुरु ग्रन्थ
साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर
बोलो जी वाहिगुरु ! पांच प्यारों, चार गुरु
कुमारों, चालीस मुक्तों, हठी-जपी-तपियों, जिन्हों
ने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग चलाई,

देख कर अडीठ किया, उन प्रेमी सत्यवादियों की
पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी !
बोलो जी वाहिगुरु !

जिन सिंह सिंहनियों ने धर्म पर बलिदान
दिये, अंग २ कटवाए, सिर की खोपरियां
उतरवाईं, चर्खियों पर चढ़ाए गये, कर्वत से तन
चिरवाए, गुरुद्वारों के सुधार और पवित्रता के
निमित्त शहीद हुए, धर्म नहीं छोड़ा सिख धर्म
को केशों तथा प्राणों सहित पालन किया । उन
को कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी !
बोलो जी वाहिगुरु !

चारों तरफ़ों, समूह गुरुद्वारों का ध्यान धर
कर बोलो जी वाहिगुरु !

प्रथमे सर्व खालसा जी की अरदास हैं जी,
सर्व खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु
चित आवै, चित में आने से सर्व सुख हो । जहां
जहां खालसा जी साहिब, तहां तहां रक्षा रिआयत,
देग-तेग फतह, विरद की लाज, पन्थ की जीत,

अरदास

(३६६)

अरदास

श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला
हो, बोलो जी वाहिगुरु ! ! !

सिखों का मन नम्र, मति ऊंची, मति का
रक्षक स्वयं वाहिगुरु । हे निःमानों के सम्मान,
निःत्राणों के त्राण, निःओटों की ओट, निराश्रयों
के आश्रय, सच्चे पिता वाहिगुरु ! आप की
सेवा में.....की प्रार्थना है ।

अक्षर लग मात्र भूल चूक क्षमा करना, सर्व
के कार्य सिद्ध हों ।

उन प्रेमियों का मिलाप हो जिन के मिलने से
चित्त में तेरे नाम का निवास हो ।

नानक नाम चढ़दी कला ।

तेरे भाणै सर्वत का भला ॥

वाहिगुरु जी का खालसा ।

श्री वाहिगुरु जी की फतह ॥

कीरतन सोहिला

सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १

१ ओ सतिगुरप्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ

जिस हृदय में मालिक का यश कंहीये

करते का होइ बीचारो ॥

और मालिक का ही विचार हो ।

तितु घरि गावहु सोहिला

उस हृदय में जस गइये

सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥

और सिरजणहार को याद करीये ।

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥

आप मेरे निरभौ का यश गाओ ।

हउवारीजितुसोहिलै सदासुखहोइ । ११ रहाउ

उस यश करके सदा सुख होता है ।

नित नित जीअड़े समालीअनि

बह हर रोज जीवों की संभाल करता है

देखैगा देवणहारु ॥

और देणहार देखता है ।

तेरे दानै कीमति ना पवै

उस के खजाने का मूल्य नहीं पड़ता

तिसु दाते कवण सुमारु ॥२॥

और दाते का क्या अन्त होगा ।

संवति साहा लिखिआ

जो लड़की लड़के के विवाह का सादा संवत लिखा है

मिलि करि पावहु तेलु ॥

इस अनुसार आप मिलकर तेल पाओ ।

देहु सजण असीसड़ीआ

हे सज्जनों असीसां दो

जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥

जो पति संग मेल हो जाये ।

घरि घरि एहो पाहुचा

यह हर घर में मौत रूपी साहे का सन्देशा है

सदड़े नित पवंनि ॥

जो हर रोज ही बुलाता है ।

सदणहारा सिमरीऐ

उस बुलाने वाले को याद करिये

नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

जो हमारे ऊपर भी यह दिन आने वाले हैं ।

कीरतन सोहिला (३७३)

सटीक

रागु आसा महला १ ॥

छिअ घर छिअ गुर

छः शास्त्र छः उनके बनाने वाले

छिअ उपदेस ॥

छः प्रकार का उनका उपदेश ।

गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥

सब ऋषियों का गुरु एक है रूप अनेक हैं ।

बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥

भाई जिस के हृदय में मालिक का यश होवे ।

सो घरु राखु बड़ाई तोइ ॥१॥रहाउ॥

उस हृदय को तू बड़ाई दे रख ।

विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा

यह दिन रात का सारा हिसाब है

कीरतन सोहिला (३७४)

सटीक

थिती वारी माहु होआ ॥

जो १५ तिथों ७ वारां और महीना हुआ है :

सूरजु एको रति अनेक ॥

जैसे सूर्य एक है ऋतुएं अनेक हैं ।

नानक करते के केते वेस ॥२॥

इसी प्रकार कर्ता के कई वेस हैं ।

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु

आकाश थाल है

रवि चंदु दीपक बने

सूर्य चन्द्र दीपक हैं

तारिका मंडल जनक मोती ॥

सब तारों का मण्डल मोती जड़े हुये हैं ।

कीरतन सोहिला (३७५)

सटीक

धूपु मलआनलो

चन्दन का पहाड़ धूप है

पवणु चवरो करे

हवा चंवर करती है

सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥

सब बनासपति फूल फूले हुये हैं ।

कैसी आरती होइ

संसार दुःख हर्ता बड़ी अद्भुत तेरी आरती हो रही है

भवखंडना तेरी आरती ॥

जो डर के दूर करने वाली तेरी आरती है ।

अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥रहाउ॥

जिस में चोट बिना ही सुन्दर बाजे बजते हैं ।

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ

एक प्रकार तेरे हजारों नेत्र हैं, एकप्रकार कोई भी नहीं

कीरतन सोहिला (३७६)

सटीक

सहस मूरति नना एक तुोही ॥

इसी प्रकार मूर्तियां समझो ।

सहस पद विमल

इसी प्रकार ही मैल से रहित पग समझो

नन एक पद गंध विनु

और एक तरह तेरी कोई भी नासिका नहीं ।

सहस तव गंध

एक प्रकार से तेरी हजारों नासिकायें हैं ।

इव चलत मोही ॥२॥

इस तमाशे में मेरी बुद्धि मोही गई ।

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥

सब जोतों में तेरी ज्योति प्रकाश करती है ।

तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ॥

इस के प्रकाश का सब अन्दर प्रकाश है ।

कीरतन सोहिला (३७७)

सटीक

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥

यह गुरु की साख द्वारा जो तुम्हें दीख पड़ी है ।

जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥

जो तुम्हें भाता है वह आरती होती है ।

हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो

मेरा मन भंवरा हरि के चरण कमलों में लोभ गया है

अनदिनु मोहि आहो पिआसा ॥

और रात दिन उसी की प्यास लगी हुई है ।

कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ

सुख पपीहे को मेहरबानी का पानी दो

होइ जाते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

जिस करके तेरे नाम में मेरा वासा हो जावेगा ।

कीरतन सोहिला (३७८)

सटीक

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ

पांच विकारों से यह पिण्ड भरा हुआ है ।

मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥

साधुओं संग मिलके खण्डा पकड़ के इन्हें मारो ।

पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ

गुरु पूरब लेख अनुसार पाया है

मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥

इस लिये हरि की प्रीती में मन जोड़ दो ।

करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥

सन्तों आगे हाथ जोड़ो पुण्य होवेगा ।

करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥रहाउ॥

डंडवत (प्रणाम) करो पुण्य होगा ।

कीरतन सोहिला (३७६)

सटीक

साकत हरिरस सादु न जाणिआ

वेमुख ने हरि रस का स्वाद नहीं जाना

तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥

इस के अन्दर अहंकार का कंडा है ।

जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि

चलता है चुभता है दुःख पाता है

जम कालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥

सिर पर यम का डंडा सहन करता है ।

हरि जन हरि हरि नामि समाणे

दास तो हरि नाम से मिल गये हैं

दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥

उनके जन्म मरण का नाश हो गया है ।

अविनासी पुरखु पाइआ परमेसरु

उन्हों ने अविनाशी पुरुष को पा लिया है

कीरतन सोहिला (३८०)

सटीक

बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥

खंडों ब्रहमण्डों में बड़ी शोभा हुई है ।

हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे

हे मालिक हम गरीब से गरीब तेरे दास हैं

हरि राखु राखु बड बडा हे ॥

तू बड़ों से बड़ा है हमारी रक्षा करो ।

जन नानक नामु अधारु टेक है

हमें तो तेरे नाम का ही आसरा है

हरि नामे ही सुख मंडा हे ॥५॥४॥

और नाम संग ही सुख होता है ।

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता

हे मित्र मैं बेनती करता हूँ

कीरतन सोहिला (३८१)

सटीक

संत टहल की बेला ॥

सन्तों की सेवा का यही समय है ।

ईहा खाटि चलहु हरि लाहा

यहां से लोभ कमा चलो

आगे बसनु सुहेला ॥१॥

तुम्हारा आगे सुख से वासा होगा ।

अउध घटै दिनसु रै एा रे ॥

दिन रात तुम्हारी आयु कम होती है ।

मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥रहाउ॥

गुरु संग मिलकर काम संवारो ।

इहु संसारु बिकारु संसे महि

यह संसार विकार भरा संशय रूप है

तरिओ ब्रहम गिआनी ॥

इस में कोई चतुर ही तरा है ।

कीरतन सोहिला (३८२)

सटीक

जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु

जिसे जगा कर यह रस पिलाता है

अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥

उसने यह अकथ कथा जानी है ।

जाकउ आए सोई बिहाभहु

जिस लिये तुम आये हो वह सौदा खरीदो

हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥

हरि गुरु की कृपा से यह मन बस आयेगा ।

निज घरि महलु पावहु सुख सहजे

अपने घर में तुम सहज ही सुख पा लोगे

बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥

फिर आप का फेरा नहीं होगा ।

अंतरजामी पुरख बिधाते

हे अन्तर्यामी, विधाता पुरुष

सरधा मन की पूरे ॥

हमारे मन की मांग पूरी करो ।

नानक दासु इहे सुखु मागै

मैं दास इसी में सुख मांगता हूँ

मोकउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

मुझे संतों की धूलि बरखो ।

बारहमाहा

माझ महला ५ चरु ४

१ ओं कृतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वोछुडे

सुरे काम को करके हम आप से विछुड़ गये हैं

करि किरपा मेलहु राम ॥

हे राम कृपा करके अपने संग मेल लो ।

बारहमाहा

(३८४)

सटीक

चारि कुंठ दह दिस भूमे

हम चार खूंट (दसों दिशाओं) में घूपते हैं ।

थकि आए प्रभ को साम ॥

थक कर आपकी शरण आए हैं ।

धेनु दुधै ते बाहरी

जैसे गाय दूध के बिना

कितै न आवै काम ॥

किसे काम नहीं आती ।

जल बिनु साख कुमलावती

जैसे जल बिना डाली मुरझा जाती है

उपजहि नाही दाम ॥

वह डाली आगे नहीं बढ़ सकती ।

हरि नाह न मिलीऐ साजनै

हे साजन जो हरि पति को न मिलिये

वारहमाहा

(३८५)

सटीक

कत पाईए विसराम ॥

तो कहां विश्राम पायेगा ।

जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई

जिस घर में हरि पति नहीं आता

भठि नगर से ग्राम ॥

वह नगर और ग्राम जल गये ।

स्व सीगार तंबोल रस

सारे शृंगार तंबोल रसदायक मेवे

सणु देही सभ स्वाम ॥

शरीर के साथ ही कच्चे निश्फल हैं ।

प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ

मालिक पति के सिवा

मीत सजण सभि जाम ॥

उनके मित्र साजन सब यम हैं ।

बारहसाहा

(३८६)

सटीक

नानक की बेनंतीआ

मेरी प्रार्थना है कि

करि किरपा दीजै नामु ॥

कृपा करके नाम बरुशो ।

हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ

उस मालिक के साथ मेल दो

जिसका निहचल धाम ॥१॥

जिसका घर टिका रहने वाला है ।

चेति गोविंदु अराधीऐ

चेत के महीने द्वारा गोबिन्द को आराधिए ।

होवै अनंदु घणा ॥

तब तो बड़ा आनन्द होगा ।

संत जना मिलि पाईऐ

संतों साथ मिल कर प्राप्त होता है

रसना नामु भणा ॥

जिहवा साथ नाम को कहिना ।

जिनि पाइआ प्रभु आपणा

जिन्होंने आपने पति को पा लिया है

आए तिसहि गणा ॥

उनका आना सफल है ।

इकु सिनु तिसु बिनु जीवणा

उसके बिना एक पल जो जीना है

बिरथा जनमु जणा ॥

वह जन्म जनणा व्यर्थ है ।

जलि थलि महीअलि पूरिआ

जो जलों थलों आकाश में भरपूर है

रविआ विचि वणा ॥

और बनों में भी मिला जुला है ।

बारहमाहा

(३८८)

सटीक

सो प्रभु चिति न आवई

जे कर वह मालिक चेते नहीं आता

कितड़ा दुखु गणा ॥

तो कितना सा दुःख गिना जावेगा ।

जिनी रविआ सो प्रभू

जिन्होंने उस मालिक को जपा है

तिना भागु मणा ॥

उन्हों का भाग मणों जैसा भारा बड़ा है ।

हरि दरसन कंउ मनु लोचदा

हरि के दर्शन को मन चाहता है

नानक पिआस मना ॥

बड़ी प्यास लगी हुई है ।

चेति मिलाए सो प्रभू

जो उस मालिक को मिला देवे

बारहमाहा

(३५१)

सटीक

तिसकै पाइ लगा ॥२॥

मैं उसके पैर पकड़ता हूँ ।

वैसाखि धीरनि किउ वाढीअ

बिछड़ी हुई, शान्ति किस तरह करे

जिना प्रेम बिछोहु ॥

जिसको प्रेम से बिछोड़ा हुआ है ।

हरि साजनु पुरखु विसारिकै

हरि साजन को विसार के

लगी माइआ धोहु ॥

लगी हुई है माया ठगने वाली ।

पुत्र कलत्र न संगि धना

पुत्र स्त्री धन साथ नहीं जावेगा

हरि अविनासी ओहु

वह अविनाशी साथ रहेगा ।

बारहमाहा

(३६०)

सटीक

पलचि पलचि सगली मुई

सब दुनिया खप खप कर मर गई है

भूठै धंधै माहु ॥

भूठे धंधों में लग कर ।

इकसु हरिके नाम बिनु

एक हरि के नाम बिना

अगै लईअहि खोदि ॥

आगे सब कुछ ले लिया जाता है ।

दयु विसारि विगुचणा

मालिक को विसार के भूलना होता है

प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥

उस के बिना राखा और कोई नहीं है ।

प्रीतम चरणी जो लगे

जो प्यारे की चरणीं लगा है

तिनकी निरमल सोइ ॥

उसकी शोभा साफ है ।

नानक की प्रभ बेनती

मेरी बेनती है

प्रभ मिलहु परापति होइ ॥

मुझे शीघ्र आकर दर्शन दो ।

वैसाख सुहावा तां लगै

तब ही मुझे वैशाख का महीना अच्छा लगेगा ।

जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हे हरि ! यदि मुझे तेरा संत आकर मिल पड़े ।

हरि जेठु जुड़ंदा लोड़ीए

उस ईश्वर साथ मन जुड़ा हुआ चाहिए

जिसु अगै सभि निवनि ॥

जिसके आगे सब निवते हैं ।

हरि सजण दावणि लगिआ

हरि साजन के पल्ले साथ लगने से

किसै न देई बनि ॥

फिर वह किसी को बांध कर नहीं देता है ।

माणक मोती नामु प्रभ

जिस मालिक का नाम मानक (मोती) है

उन लगै नाही संनि ॥

उसको कोई सन्न नहीं लगती है ।

रंग सभे नाराइणै

भजन के सारे तरीके अच्छे हैं

जेते मनि भावनि ॥

जो जो मन को भाता है ।

जो हरि लोड़े सो करे

जो काम मालिक कराना चाहता है

सोई जीअ करंनि ॥

वही ही जीव करते हैं ।

जो प्रभि कीते आपणे

जो मालिक ने अपने बना लिये हैं

सेई कहीअहि धंनि ॥

वह धन्य कहे जाते हैं ।

आपण लीआ जे मिलै

जो अपना लिया हुआ ईश्वर आ मिलता है

बिछुड़ि किउ रोवंनि ॥

तो लोग उस से बिछड़ कर क्यों रोएं ।

साधू संगु परापते

संतों की संगत साथ ईश्वर मिलता है

नानक रंग माणंनि ॥

तो तब ही आनंद माने जाते हैं ।

हरि जेठु रंगीला तिसु धणी

उसको मालिक की ओर से जेठ द्वारा आनंद होता है

जिसके भागु मथंनि ॥४॥

जिसके मस्तक पर अच्छे भाग हैं।

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै

उनको हाड़ तपता लगता है

हरि नाहु न जिंना पासि ॥

जिनके ईश्वर (मालिक) पास नहीं है।

जग जीवन पुरखु तिआगि कै

जग जीवन को छोड़ कर

माणस संदी आस ॥

जो मनुष्य की आशा करती हैं।

दुयै भाइ विगुचीए

दूसरी ओर होकर भूल होती है

गलि पई सु जम की फास ॥

तब गले में यमों की फांसी आ पड़ती है ।

जेहा बीजै सो लुणै

वह ही बीजता और काटता है

मथै जो लिखिआसु ॥

जो माथे पर लिखा है ।

रैणि विहाणी पछुताणी

जब आयू बीत जाती है तब पछुताती है

उठि चली गई निरास ॥

तब निराश हो कर उठ जाती है ।

जिन कौ साधू भेटीऐ

जिनको संत मिले हैं

सो दरगह होइ खलासु ॥

वइ दरगाह में छूट गये हैं ।

करि किरपा प्रभ आपणी

मालिक आपनी कृपा कर

तेरे दरसन होइ पिआस ॥

जो तेरे दर्शन की प्यास होवे ।

प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही

हे मालिका ! तेरे बिना दूसरा कोई नहीं

नानक की अरदासि ॥

मेरी बेतती है ।

आसाड़ु सुहंदा तिसु लगे

उसको आसाड़ सुन्दर लगता है

जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥

जिसके मन में हरि चरणों का निवास है ।

सावणि सरसी कामणी

स्त्री प्रेम रस वाली है

चरण कमल सिउ पिआरु ॥

जिसका प्यार चरण कमलों साथ है ।

मनु तनु रता सच रंगि

मन तन सच्चे आनंद में रता है

इको नामु अधारु ॥

एक नाम का आसरा है ।

विखिआ रंग कूड़ाविआ

विषयों का आनंद झूठा है

दिसनि सभे छारु ॥

सारा भस्म दीखता है ।

हरि अमृत बूंद सुहावणी

नाम अमृत की बूंद सुन्दर है

मिलि साधू पीवणहारु ॥

जो संतों के साथ मिल कर पी जाती है ।

बारहमाहा

(३६८)

सटीक

वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ

मालिक साथ मिल कर वन तृण सब फूल गया है

सम्रथ पुरखु अपारु ॥

सम्रथ अपार पुरख की दयालता साथ ।

हरि मिलणै नो मनु लोचदा

हरि के मिलने को मन चाहता है

करमि मिलावणहारु ॥

पर अच्छे कर्म मिलाते हैं ।

जिनी सखीए प्रभु पाइआ

जिन सखियों ने मालिक को टोल लिया है

हंउ तिनकै सद बलिहार ॥

मैं उन्हीं पर सदा कुर्बान हूँ ।

नानक हरि जी मइआ करि

हे मालिक ! मेरे पर दयालता कर

बारहमाहा

(३६६)

सटीक

सबदि सवारणहारु ॥

तो अपने साथ मुझे संवार ले ।

सावणु तिना सुहागणी

सावण का महीना उन सुहागनियों को अच्छा है

जिन राम नामु उरिहारु ॥६॥

जिन के गल में राम नाम का हार है ।

भादुइ भरमि भुलाणीआ

वह भरम में भूली हैं

दूजै लगा हेतु ॥

जिनका दूसरी ओर ध्यान है ।

लख सीगार बणाइआ

चाहे उन्होंने ने लख अंगार बनाया है

कारजि नाही केतु ॥

पर उनका किसी काम का नहीं है ।

बारहमाहा

(४००)

सटीक

जितु दिनि देह विनससी

जिस दिन देह नाश हो गई

तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥

उस समय घर के प्रेत कहेंगे ।

पकड़ि चलाइनि दूत जम

यमदूत पकड़ कर आगे लगा लेंगे

किसै न देनी भेतु ॥

और किसी को भेद नहीं देंगे ।

छाडि खड़ोते खिनै माहि

एक पल में छोड़ कर दूर खड़े हो जाएंगे

जिन सिउ लगा हेतु ॥

जिन के साथ बड़ा प्यार लगा हुआ है ।

हथ मरोड़ै तनु कपे

फिर मनुष्य हाथ मरोड़ेगा और शरीर को काटखाएगा ।

सिआहहु होआ सेतु ॥

अर काले से स्फेद रंग भय साथ हो जायगा ।

जेहा बीजै सो लुणै

जिस प्रकार का बोयेगा उसी प्रकार का काटेगा

करमा संदड़ा खेतु ॥

यह कर्मों की धरती है ।

नानक प्रभ सरणागती

मैं मालिक की शरण हूँ

चरन बोहिथ प्रभ देतु ॥

वह मुझे अपने चरण जहाज की तरह दे ।

से भादुइ नरकि न पाईअहि

वह नरक में नहीं जाएंगी

गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

जिन्हों के राखन वाला गुरु है ।

बारहमाहा

(४०२)

सटीक

असुनि प्रेम उमाहड़ा

प्रेम का उछाला आया है

किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥

हरि साजन को हम किस प्रकार मिलें ।

मनि तनि पिआस दरसन घणी

मन तन में दर्शन की बड़ी प्यास है

कोई आणि मिलावै माइ ॥

हे मां ! उस मालिक को कोई आकर मिला दे ।

संत सहाई प्रेम के

संत प्रेम के सहायक हैं

हउ तिनकै लागा पाइ ॥

मैं उन की चरणी लगता हूं ।

विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ

मालिक के सिवा किस प्रकार सुख पाएं

दूजी नाही जाइ ॥

दूसरी कोई जगह नहीं है ।

जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु

जिन्हों ने प्रेम रस चाखा है

से तूपति रहे आघाइ ॥

वे बहुत प्रसन्न हो गये हैं ।

आपु तिआगि बिनती करहि

वे अहंकार छोड़ कर बिनती करती हैं

लेहु प्रभू लडि लाइ ॥

हे पति ! आंचल साथ लगा ले ।

जो हरि कंति मिलाईआ

जो हार पति ने अपने साथ मिला ली हैं

सि विछुडि कतहि न जाइ ॥

वे अलग हो कर कहीं नहीं जाती हैं ।

बारहमाहा

(४०४)

सटीक

प्रभ विणु दूजा को नही
क्योंकि आप के सिवा दूसरा और कोई नहीं
नानक हरि सरणाइ ॥

मैं आप की शरण हूँ ।

असू सुखी वसंदीआ
वे सुखी बसती हैं

जिना मइआ हरि राइ ॥८॥

जिन्हों पर मालिक की कृपा है ।

कतिकि करम कमावणे

जो हमने काम किये हैं उन का फल अवश्य भोगेंगे

दोसु न काहू जोगु ॥

और किसी को क्या दोष देना है ।

परमेसर ते भुलिआं

ईश्वर से भूलों की

बाराहमाहा

(४०५)

सटीक

विश्रापनि सभे रोग ॥

सब रोग आ लगते हैं ।

वेमुख होइ राम ते

जो राम से वेमुख हैं

लगनि जनम विजोग ॥

उनको जन्म से बिछोड़े हैं ।

खिन महि कउड़े होइ गए

बह सारे एक पल में कड़वे हो गये हैं

जितड़े माइआ भोग ॥

जो माया के पदार्थ हैं ।

विचु न कोई करि सकै

बिचोला बन कर कोई सहायता नहीं कर सकता

किस थै रोवहि रोज ॥

प्रति दिन किस पास जाकर रोएगा ।

बारहमाहा

(४०६)

सटीक

कीता किछू न होवई

अपना किया कुछ नहीं होता ।

लिखिआ धुरि संजोग ॥

मिलना और बिछड़ना आदि से लिखा आया है ।

वडभागो मेरा प्रभु मिलै

बड़े भाग्यों से मालिक मिलता है

तां उतरहि सभि विश्रोग ॥

तब सारे बिछोड़े उतर जाते हैं ।

नानक कउ प्रभ राखि लेहि

मुझे अपने साथ मिला ले

मेरे साहिब बंदी मोच ॥

हे मालिक मेरी कैद हटा कर ।

कतिक होवै साध संगु

साधों की संगत प्राप्त हो

बारहमाहा

(४०७)

सटीक

बिनसहि सभे सोच ॥६॥

तो सब सोचें नाश हो जाती हैं ।

मंघिरि माहि सोहंदीआ

वे ही सुन्दर लगती हैं ।

हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥

जो मालिक के साथ मिल कर बैठती हैं ।

तिन की सोभा किआ गणी

उनकी शोभा मैं क्या कहूँ

जि साहिबि मेलड़ीआह

जो मालिक ने अपने साथ मेल ली हैं ।

तनु मनु मउलिआ राम सिउ

उनका मन तन राम साथ मिलकर खुश हुआ है ।

संगि साध सहेलड़ीआह ॥

अर साधां सहेलीयां साथ मिलकर

बारहमाहा

(४०८)

सटीक

साध जना ते बाहरी

जो साधों से बाहरीयां हैं
से रहनि इकेलड़ीआह ॥

वे अकेली ही रहती हैं ।

तिन दुखु न कबहू उतरै

उनका दुःख कभी नहीं उतरता ।

से जमकै वसि पड़ीआह ॥

वे यमों के वश पड़ी हैं ।

जिनी राविआ प्रभु आपणा

जिन्होंने अपना मालिक जपा है

से दिसनि नित खड़ीआह ॥

वे प्रति दिन खड़ी दीखती हैं ।

रतन जवेहर लाल हरि

ईश्वर के नाम के लालों, रत्नों के भूषणों साथ

कंठि तिना जड़ीआह ॥

उनके गले जड़े पड़े हैं ।

नानक बांछै धूड़ि तिन

मैं उन की चरण धूल मांगता हूँ

प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥

जो मालिक के दरवाजे की शरण आ पड़ी हैं ।

मंत्रिरि प्रभु आराधणा

जिन्होंने मालिक को आराधा है

बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥

वे फिर जन्म में नहीं पड़ी हैं ।

पोखि तुखारु न विश्वापई

उनको पोष की ठंडक नहीं छूहती

कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥

जिनके गले साथ मालिक मिला है ।

बारहमाहा

(४१०)

सटीक

मनु बेधिआ चरनार बिंद

चरण कमलों साथ उनका मन मिला है ।

दरसनि लगड़ा साहु ॥

उनको मालिक का दर्शन होने लगा है ।

ओट गोविंद गोपाल राइ

मालिक की शरण ली है

सेवा सुआमी लाहु ॥

उर व सेवा का लाभ ले कर ।

बिखिआ पोहि न सकई

उनको विष्यों की आग नहीं छूह सकती

मिलि साधू गुण गाहु ॥

जिन्होंने संता साथ मिल कर गुण गाए हैं ।

जह ते उपजी तह मिली

जहां से यह जीव स्त्री आई थी फिर उस में मिल गई

बारहमाहा

(४११)

सटीक

सची प्रीति समाहु ॥

सचची प्रीति में मिलने करके ।

करु गहि लीनी पारब्रहमि

मालिक ने हाथ पकड़ लिया है

बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥

फिर नहीं विछड़ती ।

बारि जाउ लख बेरीआ

मैं लाखों बार कुर्बान जाता हूँ

हरि सजणु अगम अगाहु ॥

अगम अगाध साजन पर ।

सरम पई नाराहणै

मालिक को लज्जा पड़ गई है

नानक दरि पईआहु ॥

मैं उसके बूहे ऊपर आ गिरी हूँ ।

बारहमाहा

(४१२)

सटीक

पोखु सुहंदा सरब सुखु

सारे सुख देने वाला पोष का महीना सुन्दर है

जिसु बखसे वे परवाहु ॥११॥

जिसको वेपरवाह बखशता है ।

माघि मजनु संगि साधूआ

जो संतों साथ मिल कर

धूड़ी करि इसनानु ॥

उन्हों की धूड़ी साथ स्नान करता है ।

हरि का नामु धिआइ सुणि

हरि नाम ध्याना

सभना नो करि दानु ॥

सब को दान देना ।

जनम करम मलु उतरै

जन्म कर्मों की मैल उतर जाती है

बारहमाहा

(४१३)

सटीक

मन ते जाइ गुमानु ॥

अर मन से हंकार चला जाता है ।

कामि करोध न मोहीऐ

काम करोध नहीं मोह सकते

बिनसै लोभु सुआनु ॥

लोभ कुत्ता नाश हो जाता है ।

सचै मारगि चलदिआ

सच्चे रास्ते चलते चलते

उसतति करे जहानु ॥

सारा संसार स्तुति करता है ।

अठसठि तीरथ सगल पुंन

अठाहठ तीर्थ अर सारे पुन्न

जीअ दइआ परवानु ॥

जीवों ऊपर दया करनी पुण्य करना प्रवान है ।

जिसनो देवै दइआ करि

जिसको दया करके देता है

सोई पुरखु सुजानु ॥

वह ही समझदार मनुष्य है।

जिना मिलिआ प्रभु आपणा

जिनको अपना मालिक मिला है

नानक तिन कुरवानु ॥

मैं उन से कुर्बान हूँ।

माघि सुचे से कांठीअहि

वे सुच्चे कहे जाते हैं

जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥

जिन पर पूरा गुरु मेहरबान है।

फलगुणि अनंद उपार जना

उनको आनंद प्रकट हुआ है

हरि सजण प्रगटे आइ ॥

जिसके घर मालिक आ प्रकट हुआ है ।

संत सहाई राम के

संत राम को मिलाने के सहायक हैं

करि किरपा दीआ मिलाइ ॥

और उन्होंने ने कृपा करके मिला दिया है ।

सेज सुहावी सरब सुख

सेज सुन्दर है सारे सुख मिले हैं

हुणि दुखा नाही जाइ ॥

अब दुःखों का कोई स्थान नहीं है ।

इछ पुनी वडभागणी

बड़े भागों वाली की इच्छा पूर्ण हुई है

वरु पाइआ हरि राइ ॥

हरि राय वर पा लिया है ।

मिलि सहीआ मंगलु गावही

सब सखी मिलकर आनंद मंगल गाती हैं ।

गीत गोविंद अलाइ ॥

गोविंद के गीतों को गाती हैं ।

हरि जेहा अवरु न दिसई

हरि जैसा और कोई नहीं दीखता

कोई दूजा लवै न लाइ ॥

ना कोई उसके बराबर लग सकता है ।

हलतु पलतु सवारिअनु

लोक परलोक सवार दिये हैं

निहचल दितीअनु जाइ ॥

और आराम की टिकने वाली जगह बखश दी है ।

संसार सागर ते रग्विअनु

संसार समुद्र से राख लिया है

बहुड़ि न जनमै धाइ ॥

अब फिर जन्म में नहीं दौड़ता है ।

जिहवा एक अनेक गुण

जिहवा एक है गुण अनेक हैं

तरे नानक चरणी पाइ ॥

हम चरणों पड़ कर तर गये हैं ।

फलगुणि नित सलाहीऐ

फाल्गुण द्वारा कहिते हैं उसको सदा सालाहीऐ ।

जिसनो तिलु न तमाइ ॥१३॥

जिसको तिल मात्र भी लालच नहीं है ।

जिनि जिनि नामु धिआइआ

जिन्होंने नाम ध्याया (जपा) है ।

तिनके काज सरे

उन के काम संवर गये हैं ।

हरि गुरु पूरा आराधिआ

जिन्होंने पूरा गुरु आराधा है ।

दरगह सचि खरे ॥

वह सच्ची दरगाह में खड़े हैं ।

सरब सुखा निधि चरण हरि

सारे सुखों का मूल सुख हरि के चरण हैं ।

भउजल बिखमु तरे ॥

जो कठिन संसार से तार देते हैं ।

प्रेम भगति तिन पाईआ

उन्होंने प्रेम भक्ति पाई है ।

बिखिआ नाहि जरे ॥

वे विषय अग्नि में नहीं जलते ।

कूड़ गए दुबिधा नसी

भूठ अर दुबिधा भाग गये

पूरन सचि भरे ॥

पूरे सच्च साथ भर गये ।

पारब्रह्म प्रभु सेवदे

वह पारब्रह्म प्रभु को धिआते हैं ।

मन अंदरि एकु धरे ॥

मन में एक का ही ध्यान धरते हैं ।

माह दिवस मूरत भले

महीने दिन अर महरत वह ही अच्छे हैं

जिन कउ नदरि करे ॥

जिस ऊपर वह कृपा दृष्टि करे ।

नानकु मंगै दरस दानु

मैं आपके दर्शनों का दान मांगता हूँ ।

किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥

हे हरि कृपा करके बखशो ।

सतनाम श्री बाहिगुरु ॥

सतनाम श्री बाहिगुरु ॥

सतनाम श्री बाहिगुरु ॥

सतनाम श्री बाहिगुरु ॥

सतनाम श्री बाहिगुरु ॥

आसा दी वार

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥
आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी

इस वार के साथ श्लोक भी
महले पहिले के लिखे
गुरु नानक देव जी के हैं
टुं डे असराजै की धुनी ॥

असराज की वार की धुनि ऊपर गावने की आज्ञा है ।
सलोक म० १ ॥

बलिहारी गुर आपणे
मैं अपने गुरु से बलिहार जाता हूँ
दिउहाड़ी सद वार ॥
एक दिन में सँकड़े बार

आसा दी वार (४२२)

सटीक

जिनि माणस ते देवते कीए

जिसने मनुष्य से देवते बना दिये

करत न लागी वार ॥१॥

अर बनाते देर न लगाई ।

महल २ ॥ जे सउ चंदा उगवहि

अगर सौ चान्द उदय हों

सूरज चढ़हि हजार ॥

और हजार सूर्य उदय हों ।

एते चानण होदिआं

इतने प्रकाश होने से

गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥

गुरु सिवा फिर भी बहुत अन्धेरा है ।

म० १ ॥ नानक गुरू न चेतनी

जो गुरु को याद नहीं करते

आसा दी बार (४२३)

सटीक

मनि आपणै सुचेत ॥

अर अपने मन साथ स्वयं ही स्थाने बने हुए हैं ।

छुटे तिल बूआड़ जिउ

वह बूआड़ तिल की तरह खाली छोड़े जायेंगे

सुंजे अंदरि खेत ॥

सुंजे (खाली) खेति में ।

खेतै अंदरि दृष्टिआ

खेति में छोड़ों का

कहु नानक सहु नाह ॥

गुरु जी कहते हैं कोई भी मालिक नहीं बनेगा ।

फलीअहि फुलीअहि बपुड़े

वह विचारे फलें फूलगे

भी तन विचि सुआह ॥३॥

परन्तु उनके भीतर राख ही होगी ।

आसा दी बार (४२४)

सटीक

पउड़ी

आपीन्है आपु साजिआो
ईश्वर ने स्वयं ही दुनिया बनाई है
आपीन्है रचिआो नाउ ॥

स्वयं ही उसका नाम रखा है ।
दुयी कुदरति साजीऐ
दूसरी, साथ कुदरत बनाई है
करि आसणु डिठो चाउ ॥

आप अऊझी तरह बैठ कर प्रसन्नता साथ देखता है ।

दाता करता आपि तू
वह दाता कर्ता आप ही है
तुसि देवहि करहि पसाउ ॥
वह दाता देकर बड़ा प्रसन्न होता है ।

आसा दी वार (४२५)

सटीक

तू जाणोई सभसै

हे ईश्वर ! तू सब के अन्तर की जानता हैं ।

दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥

शरीर रूपी पुशाक जीव को देकर स्वयं ही ले लेता है।

करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥

प्रसन्नता साथ बैठ कर देखता है ।

सलोक म० १ ॥

सचे तेरे खंड सचे ब्रह्मंड ॥

तेरे खण्ड ब्रह्मण्ड बड़े सच्चे हैं ।

सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥

तेरे लोग अर लोगों के आकार सच्चे हैं ।

सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥

तेरे सारे विचार अर कर्तव्य सच्चे हैं ।

आसा दी वार (४२६)

सटीक

सचा तेरा अमरु सचा दीवाणु ॥

तेरी सभा अर हुकम भी सच्चा है ।

सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥

तेरा हुम्म देना भी सच्चा है ।

सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥

तेरा काम अर परवाना भी सच्चा है ।

सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥

हे सच्चे ! तुझे लाखों करोड़ों कहते हैं ।

सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥

सब जीवों को सच्चे परमेश्वर का आसरा अर जोर है

सची तेरी सिफति सची सालाह ॥

तेरी सिफत (सलाह) भी सच्ची है ।

सची तेरी कुदरति सबे पातिसाह ॥

हे पातशाह ! तेरी कुदरत भी सच्ची है ।

आसा दी वार

(४२७)

सटीक

नानक सचु धिआइनि सचु ॥

गुरु जी कहते हैं सच्चे ही याद करते हैं ।

जो मरि जमे सु कचु निकचु ॥१॥

काचों से भी काचे जन्म मरन में पड़े रहते हैं ।

म० १ ॥

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥

बड़े नाम करके ही उस की बड़ाई बड़ी है ।

वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥

उसका नयाय सच्चा है इस लिये बड़ाई बड़ी है ।

वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥

उसका निश्चय स्थान है इस लिये बड़ाई बड़ी है ।

वडी वडिआई जाएँ आलाउ ॥

बह सब के मन की जानता है ।

आसा दी वार

(४२८)

सटीक

वडी वडिआई बुभै सभि भाउ ॥

वह सब का प्रेम समझता है ।

वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥

वह पूछ कर दात नहीं देता ।

वडी वडिआई जा आपे आपि ॥

वह आप ही आप है ।

नानक कार न कथनी जाइ ॥

गुरु जी कहते हैं उसकी कार बताई नहीं जाती ।

कीता करणा सरत्र रजाइ ॥२॥

उस का सारा कर्तव्य किया हुआ हुक्म में ही है ।

महला २ ॥

इहु जगु सचै की है कोठड़ी

यह संसार सच्चे की कोठड़ी है ।

आसा दी वार (४२६)

सटीक

सच्चे का विचि वासु ॥

इस में सच्चे का ही निवास है ।

इकन्हा हुकमि समाइ लए

एक को हुकम साथ ही अपने साथ मेल लेता है ।

इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥

एक को नाश कर देता है ।

इकन्हा भाणै कठि लए

एक को हुकम साथ दुःखों से बचा लेता है ।

इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥

एक को माया में डोब देता है ।

एव भि आखि न जापई

यह भी नहीं कहा जाता है

जि किसै आणे रासि ॥

जो किसी अपने प्रेमी को रास ले आता है ।

नानक गुरमुखि जाणीऐ
गुरु जी कहते हैं उनको गुरमुख माना जाता है
जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥
जिन को स्वयं ही प्रकाश कर देता है ।

पउड़ी

नानक जीअ उपाइ कै
गुरु जी कहते हैं जीवों को पैदा करके
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥
उन्हों के कर्म लिखने के लिए धर्म राजा बिठाया है ।
ओथै सचे ही सचि निबड़ै
वहां सच सच निबड़ता है ।
चुणि वखि कटे जजमालिआ ॥
दोषियों को चुन २ कर अलग निकाला जाता है ।

आसा दी वार (४३१)

सटीक

थाउ न पाइनि कुड़िआर

भूठों को स्थान नहीं पड़ता

मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥

वह मुंह के काले नरक को भेजे जाते हैं ।

तेरै नाइ रते से जिणि गए

जो तेरे नाम में लगे हैं वह जीत गए हैं

हारि गए सि ठगण वालिआ ॥

ठगने वाले हार गए हैं ।

लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥

नाम लिखने को धर्म राजा बैठा दिया है ।

सलोक म० १ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥

उसकी ध्वनि और जानना आश्चर्य है ।

विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥

जीव और उसके भेद आश्चर्य हैं ।

विसमादु रूप विसमादु रंग ॥

उनके रूप रंग भी आश्चर्य हैं ।

विसमादु नागे फिरहि जत ॥

जो जीव नंगे फिरते हैं वह भी आश्चर्य हैं ।

विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥

हवा और पानी भी आश्चर्य है ।

विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥

जो आगे बड़ी खेलें खेलती है यह भी आश्चर्य है ।

विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥

चार खानियां और धरती भी आश्चर्य है ।

विसमादु सादि लगहि पराणी ॥

जो जीव स्वादों में लगे हैं वह भी आश्चर्य हैं ।

आसा दी वार (४३३)

सटीक

विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥

विछड़ जाना अर मिल पड़ना भी आश्चर्य है ।

विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥

पदार्थों का खाना अर भूख भी आश्चर्य है ।

विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥

उसकी सिफत सलाह भी आश्चर्य है ।

विसमादु उजड़ विसमादु राह ॥

उजाड़में पड़ना अर रास्तेमें चल पड़ना भी आश्चर्य है

विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥

उस से निकट होना अर दूर होना भी आश्चर्य है ।

विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥

जो निकटसे निकट होकर देखता है यह भी आश्चर्य है ।

वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥

जो बड़ा कौतुक देखता है यह भी आश्चर्य है ।

आसा दी वार (४१४)

सटीक

नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥

गुरु जी कहते हैं पूरे भागों वाला समझता है ।

म० १॥

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ

देखना अर सुनना कुदरत है

कुदरति भउ सुख सारु ॥

उसका डर जो सुखों का सार है यह भी कुदरत है ।

कुदरति पाताली आकासी

पातालों आकाशों में भी उसकी कुदरत है ।

कुदरति सरब आकारु ॥

सारे आकार भी कुदरत हैं ।

कुदरति वेद पुराण कतेबा

वेद, पुराण, कतेव भी कुदरत हैं ।

आसा दी बार (४३५)

सटीक

कुदरति सरब वीचारु ॥

सारे विचार भी कुदरत हैं ।

कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु

खाना, पीना अर पहनना भी कुदरत है ।

कुदरति सरब पिआरु ॥

सब साथ प्यार भी कुदरत है ।

कुदरति जाती जिनसी रंगी

जातियां जिनसां रंग भी कुदरत हैं ।

कुदरति जीअ जहान ॥

संसार में जीव भी कुदरत हैं ।

कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ

नेकियां बदियां भी कुदरत हैं ।

कुदरति मानु अभिमानु ॥

मान अर हंकार भी कुदरत है ।

आसा दी वार (४३६)

सटीक

कुदरति पउण पाणी बैसंतरु

वायु, पानी, आग भी कुदरत है ।

कुदरति धरती खाकु ॥

धरती अर राख भी कुदरत है ।

सभ तेरी कुदरति तू कादिरु करता

तू कादर कर्ता हैं सारी तेरी कुदरत है ।

पाकी नाई पाकु ॥

तू पवित्र हैं पवित्र नाम वाला हैं ।

नानक हुकमै अंदरि वेखै

गुरु जी कहते हैं वह हुकम में देखता है ।

वरतै ताको ताकु ॥२॥

एक जैसा वह सब में व्यापता है ।

आसा दी वार (४३७)

सटीक

पउड़ी ॥ आपीन्है भोग भोगिकै

जीव स्वयं ही भोग भोग कर

होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥

राख हो कर चल पड़ता है ।

वडा होआ दुनीदार

जब दुनियादार मृत्यु हा जाता है ।

गलि संगलु घति चलाइआ ॥

तब उसके गले में संगल पाकर चलाया जाता है ।

अगै करणी कीरति वाचीऐ

आगे अच्छी बुरी करनी करके कीर्ति विचारी जाता है

बहि लेखा करि समझाइआ ॥

बिठा कर लेखा करके समझाया जाता है ।

थाउ न होवी पउदीई

फिर उसको जूतियां पड़ती हैं और स्थान नहीं मिलता

आसा दी वार (४३८)

सटीक

हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥

अब उसका रोना क्या सुना जाय ।

मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥

अन्धे मन ने सारा जन्म खो दिया है ।

सलोक म० १ ॥

भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥

सदा चलने वाली वायु उसके डर में चलती है ।

भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥

लाखों दरिया उसके डर में चलते हैं ।

भै विचि अगनि कटै वेगारि ॥

उसके डर में आग वेगार निकालती है ।

भै विचि धरती दबी भारि ॥

उसके डर में पृथ्वी भार साथ दबी पड़ी है ।

आसा दी वार (४३६)

सटीक

भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥

उसके डर में इन्द्र (बादल) सिर के भार फिरता है ।

भै विचि राजा धरम दुआरु ॥

उसके डर में धर्म राजा बूढ़े आगे बैठा रहता है ।

भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥

सूर्य चांद भी उसके भय में हैं ।

कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥

अन्त नहीं आता जो करोड़ों कोसों चलते हैं ।

भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥

बड़े नाथ, सिद्ध, बुद्ध, देवते सब डर में हैं ।

भै विचि आडाणे आकास ॥

फैला हुआ आकाश भी भय में हैं ।

भै विचि जोध महाबल सूर ॥

योधे, महा बली, सूरमे सब भय में हैं ।

आसा दी वार

(४४०)

सटीक

भै विचि आवहि जावहि पूर ॥

पूरों के पूर सब भय में आते जाते हैं ।

सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥

सब के सिर ऊपर भय का लेख लिखा हुआ है ।

नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥

गुरु जो कहते हैं एक निर्भय निरंकार सच्चा लेखरहित

म० १ ॥ नानक निरभउ निरंकार

गुरु जी कहते हैं भय से रहित एक ईश्वर है ।

होरि केते राम रवाल ॥

और कई राम पैरों की धूल हैं ।

केतीआ कन्ह कहाणीआ

कई कृष्ण कहानियों वाले हैं

केते वेद बीचार ॥

कई वेदों के विचारने वाले हैं ।

आसा दी वार (४४१)

सटीक

केते नचहि मंगते

कई मंगते नाचते हैं

गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥

गिड़ि मुड़ि कर ताल पूर्ण वाले ।

बाजारी बाजार महि

मशकरियां करने वाले मशकरे

आइ कठहि बाजार ॥

शरे आम मशकरियां करते हैं ।

गावहि राजे राणीआ

राजे, रानियों को गाते हैं

बोलहि आल पताल ॥

ऊल जलूल बोलकर ।

लख टकिआ के मुंदड़े

लाखों टक्के के मुंदे उन के पड़े हुये हैं ।

आसा दी वार (४४२)

सटीक

लख टकिआ के हार ॥

और लाखों टक्कों के हार भी हैं ।

जितु तनि पाईअहि नानका

गुरु जी कहते हैं जिस शरीर में उन्होंने पाए हैं

से तन होवहि छार ॥

उस शरीर ने राख हो जाना है ।

गिआनु न गलीई दूढीऐ

ज्ञान बातों साथ नहीं मिलता

कथना करड़ा सारु ॥

ज्ञान का कथन करना लोहे की भांति है ।

करमि मिलै ता पाईऐ

उसकी बख्शिश साथ मिले तो प्राप्त होता है ।

होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥

और किसमत और हुक्म करना खुआर होना है ।

आसा दी वार (४४३)

सटीक

पवड़ी

नदरि करहि जे आपणी

यदि अपनी मेहर करे

ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥

तो मेहर साथ गुरु की प्राप्ति होती है।

एहु जीउ बहुते जनमि भरमिआ

यह जीव बड़े जन्म भरमा है।

ता सतिगुरि सबहु सुणाइआ ॥

तब इसको गुरु ने शब्द सुनाया है।

सतिगुर जेवहु दाता को नही

गुरु जैसा बड़ा दाता कोई नहीं है।

सभि सुनिअहु लोक सबाइआ ॥

सारे लोगो! सुन लो।

आसा दी वार (४४२)

सटीक

लख टकिआ के हार ॥

और लाखों टक्कों के हार भी हैं ।

जितु तनि पाईअहि नानका

गुरु जी कहते हैं जिस शरीर में उन्होंने पाए हैं

से तन होवहि छार ॥

उस शरीर ने राख हो जाना है ।

गिआनु न गलीई दूठीऐ

ज्ञान बातों साथ नहीं मिलता

कथना करड़ा सारु ॥

ज्ञान का कथन करना लोहे की भांति है ।

करमि मिलै ता पाईऐ

उसकी बख्शिश साथ मिले तो प्राप्त होता है ।

होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥

और किसमत और हुक्म करना खुआर होना है ।

आसा दी वार (४४३)

सटीक

पवड़ी

नदरि करहि जे आपणी

यदि अपनी मेहर करे

ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥

तो मेहर साथ गुरु की प्राप्ति होती है।

एहु जीउ बहुते जनमि भरंमिआ

यह जीव बड़े जन्म भरमा है।

ता सतिगुरि सबहु सुणाइआ ॥

तब इसको गुरु ने शब्द सुनाया है।

सतिगुर जेवहु दाता को नही

गुरु जैसा बड़ा दाता कोई नहीं है।

सभि सुनिअहु लोक सबाइआ ॥

सारे लोगो! सुन लो।

आसा दी वार (४४४)

सटीक

सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ
गुरु के मिलने साथ सच की प्राप्ति होती है ।
जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥
परन्तु जिन्होंने बीच से हंकार दूर किया है ।
जिनी सचो सचु बुझाइआ ॥४॥
जिस ने सच ही सच समझा दिया है ।

सलोक म० १ ॥

घड़ीआ सभे गोपीआ
दिन रात की सब घड़ियां गोपियां हैं
पहर कन्ह गोपाल ॥
अर दिन के चारों पहर कृष्ण के ग्वाले हैं ।
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु
जल, वायु, आग भूषण हैं ।

आसा दी वार (४४५)

सटीक

चंदु सूरज अवतार ॥

चान्द सूर्य अवतार हैं ।

सगली धरती मालु धनु

माल, धन सब पृथ्वी है ।

वरतणि सरब जंजाल ॥

सारा जंजाल बरतन है ।

नानक मुसै गिआन विहुणी

ज्ञान सिवा खाली होकर सब दुनिया लूटी जा रही है

खाइ गइआ जमकालु ॥१॥

अर यमकाल सब दुनिया को खा गया है ।

म० १ ॥

वाइनि चले नचनि गुर ॥

शिष्य साज बजाते हैं गुरु आगे नाचते हैं ।

आसा दी वार (४४६)

सटीक

पैर हलाइनि फेरनि सिर ॥

पैर हिलाते हैं सिर फेरते हैं ।

उडि उडि रावा भाटै पाइ ॥

मिट्टी उड़ा उड़ा कर अपने सिर में डाल लेते हैं ।

वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥

लोग देख देख कर घर जा कर गिधवा पाकर हंसते हैं ।

रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥

यह ताल रोटियों के लिये पूरते हैं ।

आपु पछाड़हि धरती नालि ॥

अपने आप को धरती साथ पटका कर मारते हैं ।

गावनि गोपीआ गावनि कान ॥

गोपियां अर कृष्ण के गीत गाते हैं ।

गावनि सीता राजे राम ॥

सीता अर राजे राम को गाते हैं ।

निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥

निर्भय ईश्वर सच्चे नाम वाला है ।

जाका कीआ सगल जहानु ॥

जिसका सारा संसार बनाया हुआ है ।

सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥

उसको सेवक जपते हैं अर उन पर बख्शिशकरता है ।

भिनी रँणि जिन्हा मनि चाउ ॥

मन में चाह वालों की रात प्रेम में भोगी पड़ी है ।

सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥

गुरु की शिक्षा का सीखना सिक्खी का विचारकरना है,

नदरी करमि लघाए पारि ॥

उसकी बख्शिश हो तो कृपा करके पार कर देता है

कोलू चरखा चकी चकु ॥

यह कोलू चर्खा, चक्की, चक्क पड़ा फिरता है ।

आसा दी वार (४४८)

सटीक

थल वारोले बहुतु अनंतु ॥

टीबों में वेअंत बां बरोले पड़े फिरते हैं ।

लादू माधाणीआ अनगाह ॥

लादू माधानियां अन्न को गहने वाले फलहे ।

पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥

पंछियों की डारें भी फिरती सांस नहीं लेतीं ।

सुऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥

सूली ऊपर चढ़ा कर जीव भी फिराए जाते हैं ।

नानक भउदिआ गएत न अंत ॥

गुरु जी कहते हैं फिरने वाले की गिनती का अन्ननहीं ।

बंधन बंधि भवाए सोइ ॥

वह सब बंधनों में बन्धे हुए फिराए जाते हैं ।

पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥

उनका इसी प्रकार का किरत पड़ा सब कोई नाचता है ।

नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥

नाच नाच कर हंसते हैं अन्त को रो कर चले जाते हैं ।

उडि न जाही सिध न होहि ॥

न तो वह उड़ जाते हैं न ही वह सिद्ध बनते हैं ।

नचणु कुदणु मन का चाउ ॥

यह नाचना कूदना तो एक मन का शौक है ।

नानक जिन मनि भउ

गुरु जी कहते हैं जिन के मन में ईश्वर का भय है

तिना मनि भाउ ॥२॥

उनके मन में प्रेम भी है ।

पउड़ी ॥

नाउ तेरा निरंकारु है

तेरा नाम निरंकार है

आसा दी वार (४५०)

सटीक

नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥

नाम लेने से नरकों में नहीं जाता ।

जीउ पिंडु सभु तिसदा

सारा जीव अर शरीर उस का है

दे खाजै आखि गवाईऐ ॥

देकर खाना अर हम दिया है कहना गंवा देना है ।

जे लोड़हि चंगा आपणा

जेकर आपना भला चाहते हो

करि पुं नहु नीचे सदाईऐ ॥

तो भले काम करके आपने आप को नीचा कहाओ ।

जे जरवाणा पर रहै

जेकर बचना है तो यम को दूर करो ।

जरु वेस करेदी आईऐ ॥

वृद्ध आयु वेश करती चली आती है ।

को रहे न भरीऐ पाईऐ ॥५॥

भरा बर्तन डूबन की तरह किसी ने भी नहीं रहना ।

सलोक म० १ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति

मुसलमान अपनी शरह की सिफत करते हैं ।

पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥

अर उसको पढ़ पढ़ कर विचारना करते हैं ।

बंदे से जि पवहि विचि बंदी

परन्तु मनुष्य वह ही है जो बंदगी में पड़ते हैं

वेखण कउ दीदारु ॥

उसका दर्शन करने के लिये ।

हिंदू सालाही सालाहनि

हिन्दु तो एक सलाहता हो तो दूसरा भी सालाहता है

आसा दी वार (४५२)

सटीक

दरसनि रूपि अपारु ॥

उसका दर्शन रूप तो अपार है ।

तीरथि नावहि अरचा पूजा

तीर्थों ऊपर नहाते हैं और पूजा भी करते हैं

अगर वासु बहकारु ॥

चन्दन की वाशना भी महकती है ।

जोगी सुनि धिआवन्हि जेते

योगी जितने भी अफुर की याद करते हैं

अलख नामु करतारु ॥

ना देखे जाने वाले नाम वाले करतार को ।

सूखम मूरति नामु निरंजन

जिसका नाम माया रहित है उसकी बड़ी छोटी मूर्ति है

काइआ का आकारु ॥

जिसकी काया का यह आकार है ।

सतीआ मनि संतोखु उपजै

साचों के मन सन्तोष पैदा होता है

देणै कै वीचारि ॥

दात के वीचार में ।

दे दे मंगहि सहसा गुणा

देकर हजार गुणा मांग लेते हैं

सोभ करे संसार ॥

संसार हमारी शोभा करे ।

चोरा जारा तै कूड़िआरा

चोरों यारों भूठों तथा

खाराबा वेकारा ॥

बिकारियों खराबा (बुरा काम है)

इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ

एक पूर्व पुन्न किया यहां से खा कर चल पड़ते हैं

आसा दी बार (४५४)

सटीक

तिना भि काई कार ॥

उनको कोई कार मिलेगी भाव नहीं ।

जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ

सब जलों थलों अर जगत में

आकारा आकार ॥

जितने आकार जीव हैं ।

ओइ जि आखहि सु तूं है जाणहि

वह जो कहते हैं सो तूं समझता है

तिना भि तेरी सार ॥

अर उनकी सार लेता है ।

नानक भगता भुख सालाहणु

भक्तों को थालाघा की भूख है

सचु नामु आधारु ॥

अर साचे नाम का आश्रय है ।

सदा अनंदि रहहि दिनु राती

दिन रात प्रसन्न रहते हैं

गुणवंतिआ पाछारु ॥१॥

गुन वालों की चरण धूल हैं ।

स० १ ॥

मिट्टी मुसलमान की

मुसलमानों की मिट्टी

पेड़े पई कुमिआर ॥

कुमिआर के पेड़े में पड़ी है ।

घड़ि भांडे इटा कीआ

हसने ईंटे अर बर्तन बनाए

जलदी करे पुकार ॥

बह मिट्टी जलती रोती है ।

आसा दी वार (४५६)

सटीक

जलि जलि रोवै बपुड़ी

वह बिचारी जल बल कर रोती है

भडि भडि पवहि अंगिआर ॥

जो उस के अंगार भड भड पड़ते हैं ।

नानक जिनि करतै कारण कीआ

जिसने यह साजना साजी है

सो जाएँ करतारु ॥२॥

यह बात वही जगत गुरु जानता है ।

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाहआ

गुरु बिना ईश्वर को न पीछे

बिनु सतिगुर किनै न पाहआ ॥

अर न अब किसी ने पाया है ।

सतिगुर विचि आपु रखिआनु
ईश्वर ने गुरु में आपना आप रखा है
करि परगटु आखि सुणाइआ ॥

यह बात प्रकट कह सुनाई है ।

सतिगुर मिलिए सदा मुक्तु है

वह गुरु को मिल कर मुक्त हैं

जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥

जिसने मोह को दूर किया है ।

उतमु एहु बीचारु है

यह अच्छा बीचार है

जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥

जिसने साचे साथ मन जोड़ा है ।

जग जीवनु दाता पाइआ ॥६॥

जगजीवन दाता उसने पा लिया है ।

आसा दी वार (४५८)

सटीक

सलोक म० १ ॥

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥

हंकार में आया, गया ।

हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥

हंकार में जन्मा, मरा ।

हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥

हंकार में दिया, लिया ।

हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥

हंकार में खाया, गवाया ।

हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥

हंकार में सच्चा, झूठा ।

हउ विचि पाप पुंन वीचार ॥

हंकार में पाप, पुण्य विचारता ।

हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥

हंकार में नरक स्वर्ग में गिरता ।

हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥

हंकार में हंसता रोता ।

हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥

हंकार में पाप साथ भरता, धोता ।

हउ विचि जातो जिनसी खोवै ॥

हंकार में छोटी बड़ी जाति को दूर करता ।

हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥

हंकार में मूर्ख चतुर होता ।

मोख मुक्ति की सार न जाणा ॥

हंकार में मुक्ति की खबर न जानता ।

हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥

हंकार में माया ने दबा पाया ।

आसा दी बार (४६०)

सटीक

हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥

हंकार में जीव जन्मा ।

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥

जेकर हङ्कार को समझ ले तो दरगाह में सुख पाये

गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥

ज्ञान से खाली कथन कह कह कर खपता है ।

नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥

हुकम में ही जीव का लेख लिखा है ।

जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥

जिस प्रकार का तू देखेगा वैसा ही मैं देखूंगा तुझे ।

महला २ ॥

हउमै एहा जाति है

हङ्गता के जन्म के स्थान

हउमै करम कमाहि ॥

अहंकार के बुरे काम ही हैं ।

हउमै एई बंधना

अहंकार ही बंधन है

फिरि फिरि जोनी पाहि ॥

जो फिर २ कर योनियों में पड़ता है ।

हउमै किथहु ऊपजै

अहंकार किस प्रकार पैदा होता है

कितु संजमि इह जाइ ॥

और किस प्रकार भागता है ।

हउमै एहो हुकमु है

अहंकार वाले को हुक्म है

पइऐ किरति फिराहि ॥

कि योनियों में भ्रमता फिरे ।

आसा दी वार (४६२)

सटीक

हउमै दीरघ रोगु है

अहंकार बड़ा रोग है

दारु भी इसु माहि ॥

पर दवा भी इस में है ।

किरपा करे जि आपणी

यदि हरि किरपा करे

ता गुर का सबहु कमाहि ॥

तो गुरु शब्द कमाता है ।

नानकु कहै सुणहु जनहु

गुरु कहता है सुनो गुरुमुखो !

इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥

इस प्रकार अहंकार जाता है ।

पउड़ी ।

सेव कीती संतोखीई

जिन्हों ने सेवा की

जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥

उन्हों ने ही नाम जपा ।

ओन्ही मंदै पैरु न रखिआ

उन्हों ने बुरी ओर पग नहीं रखा ।

करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥

पुण्य धर्म किया ।

ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना

जगत के बंधन तोड़े

अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥

अन्न, पानी थोड़ा खाया ।

आषा दी वार (४६४)

सटीक

तू बखसीसी अगला

उनको तू बहुत देता है

नित देवहि चढ़हि सवाइआ ॥

और बढ़ २ चढ़ २ कर देता है

वडिआई वडा पाइआ ॥७॥

उन्हों ने वड़ाई करके बड़े हरि को पाया है ।

सलोक म० १ ॥

पुरखां बिरखां तीरथां

मनुष्यों, वृत्तों, तीर्थों

तटां मेघां खेतांह ॥

किनारों, बादलों, खेतियों ।

दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥

दीपों, लोकों, मंडलों, खंडों, सारे ब्रह्मण्डों ।

आसा दी वार (४६५)

सटीक

अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह॥

चारों खानियों जो जगत की पैदा होने वाली हैं ।

सो मिति जाएँ नानक

वह सारी मर्यादा जानता है

सरां मेरां जंताह ॥

तालाबों पहाड़ों जीवों की ।

नानक जंत उपाइकै

जनतां को पैदा करके

संमाले सभनाह ॥

फिर स्वयं संभालता है ।

जिनि करतै करणा कीआ

जिसने जगत बनाया है

चिंता भि करणी ताह ॥

वह ही चिन्ता करता है ।

आसा दी वार (४६६)

सटीक

सो करता चिंता करे

वह ही चिन्ता करता है

जिनि उपाइआ जगु ॥

जिस संसार बनाया है ।

तिसु जोहारी सुअसति तिसु

उस सुख रूप को बंदना है

तिसु दीबाणु अभगु ॥

जिसकी सभा नाश नहीं होती ।

नानक सचे नाम बिनु

साचे नाम बिना

किआ टिका किआ तगु ॥१॥

क्या टिका अर क्या तग है ।

म० १ ॥

लख नेकीआ चंगिआईआ

लाखों नेकियों और अच्छाइयों

लख पुंना परवाणु ॥

पुन करके माना जाये ।

लख तप उपरि तीरथां

लाखों तीर्थों ऊपर तप करे

सहज जोग बेवाण ॥

बनों में योग करे ।

लख सूरतण संगराम

(लड़ाई) युद्ध में जाकर लाखों बहादरियां करे

रण महि छुटहि पराण ॥

युद्ध में प्राण निकल जायें ।

आसा दी वार

(४६८)

सटीक

लख सुरती लख गिआन धिआन

लाखों ही सुरतियां हान ध्यान

पढ़ीअहि पाठ पुराण ॥

अर पुराण पाठ पढ़े ।

जिनि करतै करणा कीआ

जिस करते संसार बनाया है

लिखिआ आवण जाणु ॥

अर आना जाना लिखा है ।

नानक मती मिथिआ

पिछली सब सिआनपां भूठी हैं ।

करमु सचा नीसाणु ॥२॥

उसका हुक्म सच्चा है ।

पउडी ॥

सचा साहिबु एकु तू

तू एक ही सच्चवा मालिक हैं

जिनि सचो सचु वरताइआ ॥

जिसने सच्च खिलारा है।

जिसु तू देहि तिसु मिलै सचु

जिसको सच्च देता है

ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥

उसने सच्च कमाया है।

सतिगुरि मिलिए सचु पाइआ ॥

गुरु साथ मिल कर सच को पाया है।

जिन्हकै हिरदै सचु वसाइआ ॥

जिन्हों के हृदय में सच्च बसा है।

आसा दी बार (४७०)

सटीक

मूरख सचु न जाणन्ही

मूढ़ ने सच्च न जाना

मनमुखी जनमु गवाइआ ॥

जन्म खो दिया ।

विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥

मूर्ख संसार में क्यों आया ।

सलोकु म० १ ॥

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि

पढ़ पढ़ कर गाड़ी लाद लें

पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥

अर साथियों को चुका लें ।

पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ

हरया पार करते समय बेड़ी में पा लें

पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥

अगर बच जायें तो खातों में गाड़ दें ।

पड़ीअहि जेते बरस बरस

जितनी आयु अर वर्ष

पड़ीअहि जेते मास ॥

अर मांस पढ़ते रहें ।

पड़ीऐ जेती आरजा

सारी आयु जितने

पड़ीअहि जेते सास ॥

सांस लेने हैं पढ़ते रहें ।

नानक लेखै इक गल

अन्त लेखे में एक बात है

होरु हउमै भखणा भाख ॥१॥

और हड़ता की भखें मारनी हैं ।

आसा दी वार (४७२)

सटीक

म० १ ॥

लिखि लिखि पड़िआ तेता कड़िआ ॥

जितना लिख कर पढ़ा उतना ही खपा ।

बहु तीरथ भविआ तेतो लविआ ॥

तीर्थों पर फिरा कागों की तरह कुरलाया ।

बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥

बहुत भेष किया शरीर को दुःख दिया ।

सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥

हे जीव ! आपना किया भोग ।

अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥

अन्न न खाया उलटा स्वाद खो लिया ।

बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥

द्वैत भाव से बहुता दुःख पाया ।

आसा दी वार (४७३)

सटीक

बसत्र न पहिरै अहिनिसि कहरै ॥

कपड़े न पाये रात दिन खपा ।

मोनि विगूता किउ जागै गुर बिनु सूता ॥

चुप में खराब हुआ गुरु बिना सोया क्यों जागे ।

पग उपेताणा अपणा कीआ कमाणा ॥

पैरों नांगा आपना किया पाता है ।

अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥

मैल खाई सिर राख पाई ।

मूरखि अंधै पति गवाई ॥

अन्धे मूर्ख ने इज्जत खो ली ।

विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥

नाम के बिना कुछ स्थान नहीं पड़ता ।

रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥

जंगलों, मढ़ियों, मसानों में रहता है ।

आसा दी वार (४७४)

सटीक

अंधु न जाएँ फिरि पछुताणी ॥

अन्धा नहीं जानता नाम बिना पछताएगा ।

सतिगुर भेटे सो सुख पाए ॥

गुरु मिले तो सुख पाए ।

हरि का नामु मंनि वसाए ॥

हरि नाम मन में रखे ।

नानक नदरि करे सो पाए ॥

जिस ऊपर कृपा करता है उसको गुरु मिलता है ।

आस अंदेसे ते निहकेवलु

शुद्ध होकर बेफिकर फिरता है ।

हउमै सबदि जलाए ॥२॥

शब्द साथ दङ्गता को जला देता है ।

पउड़ी ॥

भगत तेरै मनि भावदे

वह तेरे मन को भाते हैं

दरि सोहनि कीरति गावदे ॥

यश करते दरवाजे ऊपर सुन्दर लगते हैं ।

नानक करमा बाहरे

जो कृपा बिना हैं

दरि ढोअ न लहन्ही धावदे ॥

वह दरवाजे पर आराम नहीं लेते ।

इकि मूलु न बुझन्हि आपणा

एक आपना मालिक नहीं समझते

अणहोदा आपु गणाइदे ॥

व्यर्थ आप गिनाते हैं ।

आसा दी वार (४७६)

सटीक

हउ ढाढी का नीच जाति

में नीच जाति का ढाढी

होरि उतम जाति सदाइदे ॥

और अच्छी जाति के कहाते हैं ।

तिन्ह मंगा जि तुमै धिआइदे ॥६॥

में उनको टोलता हूँ जो तुम्हें याद करते हैं ।

सलोक म० १ ॥

कूडु राजा कूडु परजा

राजा प्रजा अर

कूडु सभु संसार ॥

सारा संसार भूठा है ।

कूडु मंडप कूडु माड़ी कूडु बैसणहार ॥

सब के स्थान महल, अटारी बैठने वाले भूठे हैं ।

कूड़ सुइना कूड़ रुपा कूड़ पैन्हणहारु॥

सोना चांदी पहनन वाले भी भूठे हैं ।

कूड़ काइआ कूड़ कपड़

शरीर कपड़े अर

कूड़ रूपु अपारु ॥

अपार रूप भी भूठ है ।

कूड़ मीआ कूड़ बीबी खपि होएखारु॥

मीयां बीबी भूठे खप कर राख हो गये ।

कूड़ि कूड़ै नेहु लगा

भूठों का भूठ साथ प्यार लगा

विसरिआ करतारु ॥

मालिक भूल गया ।

किस नालि काँचै दोसती

किस साथ मित्रताई करें

सभु जगु चलणहारु ॥

सारा संसार चला जाता है ।

कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ

मिठा शहद भूठा है

कूड़ु डोबे पूरु ॥

जो पूरा डोबता है ।

नानकु वखाणै बेनती

गुरु प्रार्थना करता है

तुधु बाभु कूड़ो कूड़ु ॥१॥

तेरे बिना सब कुछ भूठ है ।

म० १ ॥

सचु ता परु जाणीऐ

तब सच ज्ञाने

जा रिदै सचा होइ ॥

जेकर मन में सच्चा हो ।

कूड़ की मलु उतरै

भूठ की मैल उतर जाये

तनु करे हछा धोइ ॥

अर शरीर को धो कर अच्छा करे ।

सचु ता परु पाणीऐ

तब सच्च जानो

जा सचि धरे पिआरु ॥

जेकर सच्च साथ प्यार करे ।

नाउ सुणि मनु रहसीऐ

नाम को सुन कर खुशी होवे

ता पांए मोख दुआरु ॥

तब मुक्ति पाता है ।

आसा दी बार (४८०)

सटीक

सचु ता परु जाणीऐ

तब साचा होवे

जा जुगति जाएँ जीउ ॥

यदि तरने की जीआ की जुगति जाने ।

धरति काइआ साधिकै

शरीर खेती को बाह कर

विचि देह करता बीउ ॥

सच्चे नाम का बीज बोये ।

सचु ता परु जाणीऐ

तब सच्चा जाने

जा सिख सची लेइ ॥

जो सच्ची शिक्षा लेवे ।

दइआ जाएँ जीअ की

जीवों पर दया करनी जाने

किछु पुंनु दानु करेइ ॥

कुछ पुन्न दान करे ।

सचु तां परु जाणीऐ

तब सच्चु जाने

जा आतम तीरथि करे निवासु ॥

मालिक रूप तीर्थ ऊपर रहिना करे ।

सतिगुरु नो पुछिकै

गुरु को पूछ कर

बहि रहै करे निवासु ॥

आराम साथ बैठ कर बासा करे ।

सचु सभना होइ दारू

सब का सच्च औषधि है

पाप कटै धोइ ॥

पाप को धो कर निकाल देवे ।

आसा दी वार (४८२)

सटीक

नानकु वखाणै बेनती

गुरु जी कहते हैं

जिन सचु पलै होइ ॥२॥

जिन के पल्ले सच्च है वह सुखी हैं ।

पउड़ी ॥

दानु महिंडा तली खाकु

मेरा दान ऊपर का है

जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥

जेकर मिले तो मत्थे लगा लूँ चरणों की धूल ।

कूड़ा लालचु छडीऐ

भूठा लोभ छोड़ दो

होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥

एक मन होकर अलख को याद करो ।

आसा दी वार (४८३)

सटीक

फलु तेवेहो पाईऐ

वैसा फल मिलता है

जेवेही कार कमाईऐ ॥

जैसी कार की जाए ।

जे होवै पूरबि लिखिआ

यदि पिछला काम अच्छा हो

ता धूड़ि तिना दी पाईऐ ॥

तब चरण धूलि मिलती है ।

मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥

थोड़ी अकल त्याग के सेवा में आयु व्यतीत करो ।

सलोकु म० १ ॥

सचि कालु कूडु वरतिआ

सिद्धो ! कलयुग में झूठ फैल गया है

आसा दी बार (४८४)

सटीक

कलि कालख बेताल ॥

पापों की कालख से जीव भूतने बने हैं ।

बीउ बीजि पति लै गए

जिन्होंने नाम का बीज बीजा है वह इज्जत ले गये हैं

अब किउ उगवै दालि ॥

अब कठिन कर्म दाल की तरह टोटे हुए क्या फल दें ।

जे इकु होइ त उगवै

यदि दाना एक हो तो पैदा हो जाये

रुती हू रुति होइ ॥

और ऋतु भी अच्छी हो ।

नानक पाहै बाहरा

पानी से बिना कोरे कपड़े ऊपर

कोरै रंगु न सोइ ॥

बड़ाई का रंग किस प्रकार चढ़े ।

भै विचि खुं वि चड़ाईऐ

जितनीदेर मनको डर रूपी खुम्ब ऊपर न चढ़ाया जाये

सरमु पाहु तनि होइ ॥

अर लज्जा रूपी लाग ना लगाई जाये ।

नानक भगती जे रपै

मन बस्त्र भक्ति रंग में रंगा जाये

कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥

अर भूठ की इस मन को थोड़ी जितनी छूह भी नहो।

म० १ ॥

लबु पापु दुइ राजा महता

पाप अर लोभ दोनों राजा वजीर हैं

कूडु होआ सिकदारु ॥

भूठ ठानेदार है ।

आसा दी वार (४८६)

सटीक

कामु नेबु सदि पुच्छीऐ

काम चोबदार को सलाह पूछते हैं

बहि बहि करे बीचारु ॥

इक्कठे होकर बीचारकरते हैं किसप्रकार लोगों को लूटें ।

अंधी रयति गिअन विहूणी

प्रजा ज्ञान बिना अन्धी है

भाहि भरे मुरदारु ॥

तृष्णा आग के साथ भरे हैं जो मुर्दे खाते हैं ।

गिअनी नचहि वाजे वावहि

भांड नाचते बाजे बजाते

रूप करहि सोगारु ॥

अर सुन्दर रूप अर शृङ्गार करते हैं ।

उचे कूकहि वादा गावहि

ऊचे ऊचे बोलते अर भगड़ते हैं

जोधा का वीचारु ॥

अर सूरमों की बातें अधिक करते हैं ।
मूरख पंडित हिकमत हुजति
पण्डित मूर्ख है जो हुजतों के साथ

संजै करहि पिआरु ॥

लोगों को खुश करके धन इकठा करते हैं ।
धरमी धरमु करहि गावावहि
धर्मी भी धर्म करके फल खो लेते हैं

मंगहि मोख दुआरु ॥

जो मुक्ति का दरवाजा मांगते हैं ।

जती सदावहि जुगति न जाणहि

जति तो कहलाते हैं परन्तु जति की युक्ति नहीं जानते

छडि बहहि घर बारु ॥

व्यर्थ ही घर बार त्याग देते हैं ।

आसा दी वार (४८८)

सटीक

सभु को पूरा आपे होवै

सभ कोई आप ही पूरा होता है

घटि न कोई आवै ॥

कम कोई नहीं कहलाता ।

पति परवाणा पिछै पाईऐ

इज्जत का बट्टा पीछे पाया जाये

ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥

जब तोला समझा जाता है ।

म० १ ॥

वदी सुवजगि नानका

जो दुनिया में हम ने कार की है

सचा वेखै सोइ ॥

वह सच्चा देखता है ।

सभनी छाला मारीआ

सब ने अधिक छालें लगाई

करता करे सु होइ ॥

परन्तु जो मालिक ने करना है वह होना है ।

अगै जाति न जोरु है

आगे कोई जातियों का जोर नहीं

अगै जीउ नवे ॥

अर ना ही जी जी होती है ।

जिनकी लेखै पति पवै

जिनकी इज्जत लेखे पड़ेगी

चंगे सेई केइ ॥३॥

वह ही कोई अच्छे होयेंगे ।

आसा दी वार

(४६०)

सटीक

पउड़ी

धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ

जिनकी आदि से ही दयालता होती है

ता तिनी खसमु धिआइआ ॥

उन्होंने यहां आकर तुझे याद किया है ।

एना जंता कै वसि किछु नाही

इन जीवों के अधीन कुछ नहीं

तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥

तू अलग २ जगत पैदा किया है ।

इकना नो तूं मेलि लैहि

किसी को तो अपने साथ मेल लेता है

इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥

अर किसी को अपने से बेमुख कर देता है ।

गुर किरपा ते जाणिआ

गुरु कृपा द्वारा जाना जाता है ।

जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥

तू सत संगत में समझा देता है ।

सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥

बह सुखैन ही सच साथ मिल गया है ।

सलोकु म० १ ॥

दुखु दारु सुखु रोगु भइआ

मालिक को मिलने के लिये दुख लोड़, सुख नहीं

जा सुखु तामि न होई ॥

सुख समय बड़ी लोड़ें आ पड़ती हैं ।

तू करता करणा मै नाही

तू कर्ता मालिक हैं मेरे से कुछ नहीं होता

आसा दी वार (४६२)

सटीक

जा हउ करी न होई ॥१॥

यदि मैं कुछ करां भी तो कुछ नहीं होता ।

बलिहारी कुदरति वसिआ

मैं वारे जाऊं तूं कुदरत करके जगत में बसा है
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥रहाउ॥

तेरा अन्त नहीं जाना जाता ।

जाति महि जोति जोति महि जाता

मालिक में जोत है अर ज्योति में मालिक है

अकल कलां भरपूरि रहिआ ॥

तूं अकाल पुरख शक्ति साथ सारे भरा हैं ।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिहउ

तूं सच्चा मालिक सलाहणे योग्य हैं

जिनि कीती सो पारि पइआ ॥

जिसने शोभा की वह पार हो गया ।

आसा दी बार (४६३)

सटीक

कहु नानक करते कीआ बाता

हम तेरी यही बातें करते हैं

जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

कि जो तू करता हैं सो होता है ।

म० २ ॥

जोग सबदं गिआन सबदं

योगियों का धर्म मालिक का ज्ञान ही मुक्ति है

वेद सबदं ब्राह्मणह ॥

ब्राह्मणों का धर्म वेदों का पढ़ना ही मुक्ति है ।

खत्री सबदं सूर सबदं

सूरमों का धर्म सूरवीरता मुक्ति है

सूद्र सबदं पराकृतह ॥

वैश्यों का धर्म काम कार्य खेती करना सुख है ।

आसा दी वार (४६२)

सटीक

जा हउ करी न होई ॥१॥

यदि मैं कुछ करां भी तो कुछ नहीं होता ।

बलिहारी कुदरति वसिआ

मैं वारे जाऊं तूं कुदरत करके जगत में बसा है
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥रहाउ॥

तेरा अन्त नहीं जाना जाता ।

जाति महि जोति जोति महि जाता

मालिक में जोत है अर ज्योति में मालिक है

अकल कला भरपूरि रहिआ ॥

तूं अकाल पुरख शक्ति साथ सारे भरा हैं ।

तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिहउ

तूं सच्चा मालिक सलाहणे योग्य हैं

जिनि कीती सो पारि पइआ ॥

जिसने शोभा की वह पार हो गया ।

आसा दी वार (४६३)

सटीक

कहु नानक करते कीआ वाता

हम तेरी यही बातें करते हैं

जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

कि जो तूं करता हैं सो होता है ।

म० २ ॥

जोग सबदं गिआन सबदं

योगियों का धर्म मालिक का ज्ञान ही मुक्ति है

वेद सबदं ब्राह्मणह ॥

ब्राह्मणों का धर्म वेदों का पढ़ना ही मुक्ति है ।

खत्री सबदं सूर सबदं

सूरमों का धर्म सूरवीरता मुक्ति है

सूद्र सबदं पराकृतह ॥

वैष्यों का धर्म काम कार्य खेती करना सुख है ।

आसा दी बार (४६४)

सटीक

सरब सबदं एक सबदं
सब धर्मों में से यह धर्म अच्छा है
जे को जाएँ भेउ ॥
जो एक निरंकार को चेतें करना ।

नानक ताका दासु है
मैं उसका दास हूँ
सोई निरंजनु देउ ॥४॥
वह तो आप ही मालिक का रूप है ।

म० २ ॥

एक कृसनं सरब देवा
एक मालिक सब देवतों का बनाने वाला है
देव देवा त आत्मा ॥
वह मालिक सब जीवों के अन्दर है ।

आतमा बासु देवस्य

जो इस प्रकार का मालिक है सब अन्दर बसता है

जेको जाएँ भेउ ॥

जो कोई उसका भेद जानता है ।

नानकु ताका दासु है

मैं उसका सेवक हूँ ।

सोई निरंजन देउ ॥४॥

वह तो स्वयं ही मालिक है ।

म० १ ॥

कुंभे बधा जलु रहै

पानी घड़े में बन्धा हुआ टिकता है

जल बिनु कुंभु न होइ ॥

और पानी बिना घड़ा नहीं बन सकता ।

आसा दी वार (४६६)

सटीक

गिआन का बधा मनु रहै

ज्ञान का बन्धा मन आराम करता है

गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥

और ज्ञान गुरु बिना नहीं होता ।

पउड़ी ॥

पड़िआ होवै गुनहगारु

यदि पढ़ा हुआ पापी बन जाए

ता ओमी साधु न मारीऐ ॥

तो उसके स्थान अनपढ़ को नहीं कूटा जाता ।

जेहा घाले घालणा

जिस प्रकार की कार करता है

तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥

बैसा ही नाम पड़ जाता है ।

ऐसी कला न खेडीऐ

ऐसी खेल न खेलिये

जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥

जो दरगाह में जाकर हारना पड़े ।

पड़िआ अतै ओमीआ

पढ़े अनपढ़ का

वीचारु अगै वीचारीऐ ॥

आगे विचार होवेगा ।

मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

आगे चले तो सही उसके मुंह ऊपर पड़ेंगी ।

सलोक म० १ ॥

नानक मेरु सरीर का

शरीर के पुर्जों में एक जीव मुख्य है

आसा दी वार (४६८)

सटीक

इकु रथु इकु रथवाहु ॥

इसका एक रथ और एक रथवाही है ।

जुगु जुगु फेरि बटाईअहि

युगों युगों में बदलते आये हैं

गिआनी बुझहि ताहि ॥

यह बात समझ वाला समझता है ।

सतजुगि रथु संतोख का

सतयुग में इसका रथ संतोष था

धरमु अगै रथवाहु ॥

अर धर्म इसका रथवाही था ।

त्रेतै रथु जतै का

त्रेते में रथ जत का था

जोरु अगै रथवाहु ॥

अर जोर रथवाही था ।

हुआपरि रथु तपै का

द्वार में रथ तप का था

सतु अगै रथवाहु ॥

अर सत्य रथवाही था ।

कलजुगि रथु अगनि का

कलयुग में आग की तरह रथ है

कूडु अगै रथवाहु ॥१॥

अर झूठ रथवाही है ।

स० १ ॥

साम कहै सेतंबरु सुआमी

शाम वेद करके हंस अवतार को सारे जपते थे

सचि महि आछै साचि रहै ॥

अर सच्च में ही सब सच्चे रहते थे ।

आसा दी वार (५००)

सटीक

सभु को सचि समावै ॥

सब सच में ही समाते थे ।

रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥

त्रेते का ऋग्वेद बताता है कि मालिक सब में है ।

राम नामु देवा महि सूरु ॥

जो मालिक का नाम देवतों में शूरवीर है ।

नाइ लइए पराअत जाहि ॥

उसका नाम लेने से पाप दूर भाग जाते हैं ।

नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥

जीव अन्दर बैठा ही मुक्ति पा लेता है ।

जुज महि जोरि छली चंद्रावलि

यजुर वेद समय द्वार में जिस कृष्ण ने गोपी खोई

कान्ह कसनु जादमु भइआ ॥

वह यादव कुल का कृष्ण था ।

पारजातु गोपी ले आइआ

गोपी के लिए कल्प वृक्ष ले आया

बिंदावन महि रंगु कीआ ॥

अर वृन्दावन में आनंद किया ।

कलि महि वेदु अथरवणु हूआ

कलयुग में आथर्वन वेद बड़ा बन बैठा

नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥

तो खुदा का नाम कच्चा हो गया ।

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे

नीले बस्त्र पा लिए

तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥

अर तुर्क पठानों ने बड़ा हुक्म किया ।

चारे वेद होए सचिआर ॥

अपने अपने स्थान चारे वेद सच्चे बन बैठे

आसा दी वार (५०२)

सटीक

पढ़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥

पढ़ने वाले का काम विचार करनी है ।

भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥

प्रेम भक्ति करके नीचा सदावे

तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥

तब अन्दर ही मुक्ति पा लेता है ।

पउड़ी ॥

सतिगुर विटहु वारिआ

मैं उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ

जितु मिलिए खसमु समालिआ ॥

जिसके मिलने से मालिक याद आये ।

जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनुदीआ

उपदेश करके ज्ञान सुरमा दिया है

इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥

इन आंखों साथ दुनिया को हरि रूप देखा है ।

खसमु छोडि दूजै लगे

मालिक को त्याग कर दूसरी ओर लग गये हैं

डुबे से वणजारिआ ॥

हे जीव ! वह डूब गये ।

सतिगुरु है बोहिथा

गुरु पार करने को जहाज है

विरलै किनै वीचारिआ ॥

परन्तु किसे विरले ने ही विचारा है ।

करिकिरपा पारि उतारिआ ॥१३॥

उसको गुरु ने पार कर लिया है ।

आसा दी वार (५०४)

सटीक

सलोक म० १ ॥

सिमल रुखु सराहरा

मनमुख सिम्मल का वृक्ष सीधा

अति दीर्घ अति मुचु ॥

बड़ा ऊँचा लंबा अर बहुत मोटा है ।

ओइ जि आवहि आस करि

वह पत्नी जो फल की आशा करके आते हैं

जाहि निरासे कितु ॥

तुमको पता है वह क्यों निराश जाते हैं ।

फल फिके फूल बकबके

उसके फल फीके और फूल बकबके

कंमि न आवहि पत ॥

अर पत्ते भी काम नहीं आते ।

मिठतु नीची नानका

नीची बेरी की मिठास अच्छी है

गुण चंगिआईआ ततु ॥

उसके गुण अर फल बहुत अच्छे हैं ।

सभु को निवै आप कउ

प्रति एक आप को ही निबता है

पर कउ निवै न कोइ ॥

दूसरे को कोई नहीं निबता ।

धरि ताराजू तोलीऐ

तराजू में तोला जाय

निवै सु गउरा होइ ॥

तो नीचा बड़ा ऊंचा होता है ।

अपराधी दूणा निवै

अपराधी दुगना निबता है

आसा दी वार (५०६)

सटीक

जो हंता मिरगाहि ॥

जिस प्रकार मारने वाला निवता है ।

सीसि निवाइऐ किआ थीऐ

खोटे का सिर नीचा क्या करेगा

जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥

जो मन से उलटा जाता है ।

म० १ ॥

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥

पुस्तकें पढ़नी संध्या करनी भगड़े करने

सिल पूजसि बगुल समाधं ॥

पत्थर पूज कर बगलों की तरह ताड़ियां लगानी

मुखि भूठ बिभूखण सारं ॥

सुन्दर भूषण मुख से भूठ भाव सच कर दिखाना ।

आसा दी वार (५०७)

सटीक

त्रै पाल तिहाल बिचारं ॥

तीनों समय गायत्री पढ़नी ।

गलि माला तिलकु लिलाटं ॥

गले में माला मस्तक पर तिलक ।

दुह धोती बसत्र कपाटं ॥

दो धोतियां दो परने (पूजा समय)

जे जाणसि ब्रह्मं करमं ॥

यदि मालिकको मिलनेके काम जानता हूँ तो अच्छा है

सभि फोकट निसचउ करमं ॥

नहीं तो ऊपर बताए काम निषफल जाणो ।

कहु नानक निहचउ धिआवै ॥

जो भरोसे साथ मालिक को याद करे

विणु सतिगुर वांट न पावै ॥२॥

यह समझो गुरु बिना रास्ता नहीं मिलता ।

आसा दी वार (४०८)

सटीक

पउड़ी ॥

कपड़ु रूपु सुहावणा

शरीर सुन्दर कपड़ा है

छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥

जो दुनिया में ही छोड़ जाना है ।

मंदा चंगा आपणा

बुरे अच्छे काम का

आपे ही कीता पावणा ॥

स्वयं ही फल पाना है ।

हुकम कीए मनि भावदे

जो मन-इच्छे हुकम किये हैं

राहि भीड़ै अगै जावणा ॥

आगे तंग रास्ते जाना है ।

आसा दी वार (५०६)

सटीक

नंगा दोजकि चालिआ

नरक को नांगा चलेगा

ता दिसै खरा डरावणा ॥

तब डरावना दीखेगा

करि अउगण पछो तावणा ॥१४॥

बुरे काम कर के पछचाताप करेगा ।

सलोक म० १ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु

दया कपाह, संतोष सूत

जतु गंढी सतु वटु ॥

जत की गांठें सच का बटना ।

एहु जनेऊ जीअ का

यह जीव का जनेऊ हैं

आसा दी वार

(५१०)

सटीक

हई त पाडे घतु ॥

यदि है तब पांडे पा दे ।

ना एहु तुटै न मलु लगै

यह न तो टूटता है ना मैल लगती है

ना एहु जलै न जाइ ॥

न जलता न खोया जाता है ।

धनु सु माणस नानका

वह मनुष्य धन्य हैं

जो गलि चले पाइ ॥

जो गले पा जाते हैं ।

चउकड़ि मुलि अणाइआ

चार कौड़ी का तागा लिया

बहि चउकै पाइआ ॥

चौंके बैठ कर पा दिया ।

आसा दी वार (५११)

सटीक

सिखा कंनि चड़ाईआ

कानों में शिक्षा चड़ाई

गुरु ब्राह्मणु थिआ ॥

गुरु ब्राह्मण बन गया ।

ओहु मुआ ओहु भड़ि पइआ

वह मर गया यह भड़ पड़ा

वेतगा गइआ ॥१॥

वह बिना तग से गया ।

म० १ ॥

लख चोरीआ लख जारीआ

लाखों चोरियां, यारियां

लख कूड़ीआ लख गालि ॥

अर लाखों झूठी बातें

आसा दी वार (५१२)

सटीक

लख ठगीआ पहिनामीआ

ठगियां चुगलियां

राति दिनसु जीअ नालि ॥

जो रात दिन जीव के साथ हैं ।

तगु कपाहहु कतीऐ

तागा कपाह से कात कर

बाम्हणु वटे आइ ॥

अर ब्राहमण गुरु आकर बट्ट चढ़ाता है ।

कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ

उस समय बकरे को पका कर खाया

सभु को आखै पाइ ॥

तब सब ने कहा धागा पाओ

होइ पुराणा सुटीऐ

वह पुराना हो गया फैंक दिया

भी फिरि पाईऐ होरु ॥

फिर और पा लिया !

नानक तगु त तुटई

वह धागा नहीं टूटता

जे तगि होवै जोरु ॥ २ ॥

जिस धागे में सच का जोर हो ।

म० १ ॥

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै

नाम मानने से इज्जत होती है

सालाही सचु सूतु ।

नाम का सलाहना यह सूतर है ।

दरगह अंदरि पाईऐ

जो सतसंगत में बैठ कर पाया जाता है

आसा दी वार (५१४)

सटीक

तगु न तूटसि पूत ॥३॥

यह पवित्र सच का जनेऊ नहीं टूटता ।

म० १ ॥

तगु न इंद्री तगु न नारी ॥

तुमने इन्द्री और स्त्री को जनेऊ नहीं पाया ।

भलके थुक पवै नित दाढ़ी ॥

इस लिए रोज तुम्हारी दाढ़ी में थूकें पड़ती हैं ।

तगु न पैरी तगु न हथी ॥

पाओं, हाथों को धागा नहीं पाया ।

तगु न जिहवा तगु न अखी ॥

जिहवा आखों को धागा नहीं पाया ।

वेतगा आपे वतै ॥

ब्राह्मण स्वयं तो जनेऊ बिना हैं

आसा दी वार

(५१५)

सटीक

वटि धागे अवरा घतै ॥

औरों के गले घागा बट्ट कर पाते हैं ।

लै भाड़ि करे वीआहु ॥

पैसे लेकर विवाह कराते हैं ।

कठि कागलु दसे राहु ॥

कागज निकाल कर रास्ता बताते हैं ।

सुणि वेखहु लोका इहु विडाणु ॥

हे लोगो ! यह आश्चर्य बात सुनो ।

मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥

मन से अन्धा है नाम सियाना है ।

पउड़ी ॥

साहिबु होइ दहआलु किरपा करे

मालिक दयालू होकर कृपा करे

आसा दी वार (५१६)

सटीक

ता साईं कार कराइसी ॥

तब इससे अच्छी कार करायेगा ।

सो सेवकु सेवा करे

वही दास सेवा करेगा

जिसनो हुकमु मनाइसी ॥

जिसको हुकम मनायेगा ।

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु

हुकम मानने से हो प्रबान होगा

ता खसमै का महलु पाइसी ॥

तब मालिक का महल पा लेगा ।

खसमै भावै सो करे

जो मालिक को अच्छा लगता है दास वह ही करता है

मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥

तब मन इच्छत फल पाता है ।

आसा दी वार (५१७)

सटीक

ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥

तब दरगाह में यस पाकर जाता है ।

सलोक म० १ ॥

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु

ओ पांडे ! गाय को डंडा लगाता है

गोबरि तरणु न जाई ॥

गोहे के पोचे से पार तो नहीं होगा ।

धोती टिका तै जप माली

धोती टिका और जप माला पकड़ी हुई है ।

धानु मलेछा खाई ॥

तब अन्न तो मलेछों का ही खाता है ।

अंतरि पूजा पड़हि कतेबा

अन्दर पूजा करता है कतेबां पड़ता है ।

आसा दी वार (५१८)

सटीक

संजमु तुरका भाई ॥

बतीरा तो मुस्लमानों का है ।

छोड़ी ले पाखंडा ॥

पाखंड छोड़ दे

नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥

नाम लेकर तर जायेगा ।

म० १ ॥

माणस खाणे करहि निवाज ॥

मनुष्यों को खाने वाले निमाजें पढ़ते हैं ।

छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥

जो छुरियां मारते हैं उनके गले में जनेऊ हैं ।

तिन घरि ब्रह्मण पूरहि नाद ॥

उन के घर जाकर ब्राह्मण शंख बजाते हैं ।

आसा दी बार (४१६)

सटीक

उना भि आवहि ओई साद ॥

उन ब्राह्मणों को भी वैसा स्वाद आता है ।

कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥

रास अर व्यापार सारा झूठा है ।

कूड़ बोलि करहि आहारु ॥

और तुम झूठ बोल कर खाते हो ।

सरम धरम का डेरा दूरि ॥

शर्म धर्म का डेरा परे है ।

नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥

झूठ ने सारा जगत घेर लिया है ।

मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥

मथे टिका और तेड़ खाकी रंगी धोती है ।

हथि छुरी जगत कासाई ॥

हाथ में छुरी है सारा जगत कसाई है ।

आसा दी वार (५२०)

सटीक

नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥

नीले कपड़े पहन कर इज्जत वाले बनते हैं ।

मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥

मलेछों का धान खा कर पुराणों को पूजते हैं ।

अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥

कलमे का मारा हुआ बकरा खाते हैं ।

चउके उपरि किसै न जाणा ॥

मुख्य से कहते हैं मेरे चौंके में कोई ना जाये ।

देके चउका कठी कार ॥

चौंका देकर लकीर पाई है ।

उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥

ऊपर झूठ खाने वाले आकर बैठते हैं ।

मतु भिटै वे मतु भिटै ॥

कोई छुहे ना कोई छूहे ना कहते हैं ।

आसा दी वार (५२१)

सटीक

इहु अंनु असाडा फिटै ॥

यह अन्न हमारा नष्ट न हो जाये ।

तनि फिटै फेड़ करेनि ॥

शीर को नष्ट करने वाले काम करते हैं ।

मनि जूठै चुली भरेनि ॥

मन के जूठे चुलियां भरते हैं ।

कहु नानक सचु धिआईऐ ॥

नाम को याद करें

सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥

पवित्रता हो तब सच पाया जाता है ।

पउड़ी ॥

चितै अंदरि सभु को

हर कोई मालिक के चित चेते है

प्रासा दीवार (५२२)

सटीक

वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥

सब को नजर नीचे लंघाता है ।

आपे दे वडिआईआ

स्वयं ही बड़ाई देता है

आपे ही करम कराइदा ॥

अर काम कराता है ।

वडहु वडा वड मेदनी

स्वयं बड़ा दुनिया भी बड़ी

सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥

सिर सिर धन्धे लाता है ।

नदरि उपठी जे करे

यदि उलटी दृष्टि करे तब

सुलताना घाहु कराइदा ॥

पातशाह को मरवा देता है ।

आसा दी वार (५२३)

सटीक

दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥

दर २ मांगने वाले को भिक्षा भी नहीं मिलती ।

सलोक म० १ ॥

जे मोहा का घर मूहै

यदि चोर किसी का घर लूट कर

घर मुहि पितरी देइ ॥

पित्रों के नाम खिला देवे ।

अगै वसतु सियाणीऐ

तब वह वस्तु आगे सियाणी जाती है

पितरी चोर करेइ ॥

उलटा पित्रों को चोर बनाता है ।

वढीअहि हथ दलाल के

ब्राह्मण दलाल के हाथ आगे काटे जायेंगे

आसा दी वार (५२४)

सटीक

मुसफी एह करेइ ॥

यह न्याय आगे जाकर होगा ।

नानक अगै सो मिलै

भाइयो ! आगे वह मिलेगा

जि खटे घाले देइ ॥१॥

जो कमाई करके दिया जाये ।

म० १ ॥

जिउ जोरू सिर नावणी

जिस प्रकार स्त्री को

आवै वारो वार ॥

बार २ ऋतु आती है ।

जूठे जूठा मुखि वसै

इसी प्रकार भूठों के मुख में बुराई बसती है

नित नित होइ खुआरु ॥

वह नित्य २ खुआर होते हैं ।

सूचे एहि न आसीअहि

वह पवित्र नहीं कहे जाते

बहनि जि पिंडा धोइ ॥

जो शरीर धो कर बैठते हैं ।

सूचे सेई नानका

वह सूचे हैं

जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥

जिनके मन में ईश्वर बसा है ।

पउड़ी ॥

तुरे पलाणे पउण वेग

हवा की तरह भागने वाले घोड़े काठियों साथ सवारे हों

आसा दी वार (५२६)

सटीक

हर रंगी हरम सवारिआ ॥

और स्त्रियों के लिए सुन्दर तथा ऊंचे महल हों ।

कोठे मंडप माड़ीआ

कोठे, मंडप, मड़ियों में

लाइ बैठे करि पासारिआ ॥

पसारे लगा कर बैठे हैं ।

चीज करनि मनि भावदे

मन इच्छे तमाशे करते हैं

हरि बुझनि नाही हारिआ ॥

ईश्वर को नहीं समझते ।

करि फुरमाइसि खाइआ

जिन्हों ने हुक्म करके खाया है

वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥

महिलों को देख कर मृत्यु भुला दी ।

आसा दी वार (५२७)

सटीक

जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥

बुढेपा आ गया, जवानी चली गई ।

सलोक म० १ ॥

जे करि सूतकु मंनीऐ

यदि सूतक मानें

सभ तै सूतकु होइ ॥

तब हर स्थान सूतक होता है ।

गोहे अतै लकड़ी

गोहे और लकड़ी में भी

अंदरि कीड़ा होइ ॥

कीड़ा होता है ।

जेते दाणे अन्न के

जितने अन्न के दाने हैं

आसा दी वार (५२८)

सटीक

जीआ बाभु न कोइ ॥

जीव के बिना कोई नहीं ।

पहिला पाणी जीउ है

प्रथम पानी ही जीव है

जितु हरिआ सभु कोइ ॥

जिस से हर कोई हरा है ।

सूतकु किउ करि रखीऐ

सूतक से किस प्रकार अपना आप बचाया जाए ।

सूतकु पवै रसोइ ॥

सूतक तो अवश्य ही रसोई में आ पड़ता है ।

नानक सूतकु एव न उतरै

सूतक इस प्रकार नहीं उतरता

गिआनु उतारै धोइ ॥१॥

ज्ञान ही धोकर उतारता है ।

म० १ ॥

मनका सूतकु लोभु है

मन का सूतक लोभ करना है

जिहवा सुतकु कूड़ु ॥

जिहवा का सूतक झूठ बोलना है ।

अखी सूतकु वेखणा

आखों का सूतक

पर त्रिअ पर धन रूपु ॥

पराई स्त्री के रूप अर धन को देखना है ।

कंनी सूतकु कंनि पै

कानों का सूतक

लाइतबारी खाहि ॥

चुगली खानी या सुननी है ।

आसा दी वार (५३०)

सटीक

नानक हंसा आदमी

यह कसाई मनुष्य

बधे जम पुरि जाहि ॥२॥

यम पुर को बन्धे जाते हैं ।

म० १ ॥

सभो सूतकु भरसु है

सूतकों का मानना एक भ्रम है

दूजै लगै जाइ ॥

जीव इस में फंस कर दूसरी ओर जा लगता है ।

जंमणु मरणा हुकमु है

जन्म और मृत्यु मालिक का हुक्म है

भाणै आवै जाइ ॥

और हुक्म में ही आता जाता है ।

आसा ही वार (५३१)

सटीक

खाणा पीणा पवित्र है

खाना पीना पवित्र है

दितोनु रिजकु संबाहि ॥

जो वह सब को रोखी पहुंचाता है ।

नानक जिनी गुरमुखि बुझिआ

जिन गुरमुखों ने गुरु द्वारा जान लिया है

तिना सूतकु नाहि ॥३॥

उन को सूतक नहीं है ।

पउड़ी ॥

सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ

गुरु को बड़ा करके शलाघा करो

जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥

जिस में बहुत बढ़ाई हैं ।

आसा दी बार (५३२)

सटीक

सहि मेले ता नदरी आईआ ॥

हरि मेले तो गुर की बड़ाईयां दृष्टि में आती हैं ।

जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥

सिख गुरु को अच्छा लगे तो बड़ाई मन में बसती है

करि हुकमु मसतकि हथु धरि

गुरु ने सिख के मस्तक ऊपर हाथ रख कर

विचहु मारि कठीआ बुरिआईआ ॥

उसकी बुराईयां अन्दर से मार कर निकाल दीं ।

सहि तुठै नउनिधि पाईआ ॥१८॥

हरि खुश हुआ तो नौ निधियां पा ली हैं ।

सलोक म० १ ॥

पहिला सूचा आपि होइ

प्रथम स्वयं सूचा हो कर

आसा दी वार

(५३३)

सटीक

सूचै बैठा आइ ॥

सूचे चौके में आ बैठा ।

सूचे अगै रखिओनु

सूचे रसोईवाले ने मनमुखआगे सूचा थाल रख दिया

कोइ न भिटिओ जाइ ॥

आज तक उस अन्न को कोई छूहा नहीं था ।

सूचा होइकै जेविआ

बेमुख ने सूचा होकर अन्न खाया

लगा पड़णि सलोकु ॥

अर खा कर श्लोक पढ़ने लगा ।

कुहथी जाई सटिआ

उस अन्न को बुरी जगह जा पखाने फिर दिया ।

किसु एहु लगा दोखु ॥

फिर बताओ! यह पाप किसको लगा ।

आसा दी बार (४३४)

सटीक

अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता

अन्न, पानी, अग्नि,

लूण पंजवा पाइआ घिरनु ॥

निमक, घी यह सब देवते हैं ।

ता होआ पाकु पवितु ॥

इन्हों से ही अन्न पवित्र होता है ।

पापी सिउ तनु गडिआ

पापी के शरीर साथ छूह कर

थुका पईआ तितु ॥

उस अन्न को थूकें पड़ें ।

जितु मुख नामु न ऊचरहि

जिस मुख साथ नाम ना कहा जाय

बिनु नावै रस खाहि ॥

आर नाम के बिना अन्न खाय ।

आसा दी वार (५३५)

सटीक

नानक एवै जाणीऐ

इसी प्रकार समझो

तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥

उस मुख ऊपर भी थूकें पड़ती हैं ।

म० १ ॥

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ

स्त्री से बच्चा पैदा होता है स्त्री के अन्दर टिकता है

भंडि मंगणु वीआहु ॥

स्त्री साथ ही मंगना विवाह होता है ।

भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥

स्त्री साथ प्रेम अर स्त्री करके ही रास्ते पड़ते हैं ।

भंडु मुआ भंडु भालीऐ

यदि एक स्त्री मृत्यु हो जाय तो और स्त्री दूँढते हैं

आसा दी बार

(५३६)

सटीक

भंडि होवै बंधानु ॥

स्त्री द्वारा ही बंधन पड़ते हैं ।

सो किउ मंदा आखीऐ

उसको बुरा क्यों कहें

जितु जंमहि राजान ॥

जिस स्त्री से राजे जनमें ।

भंडहु ही भंडु ऊपजै

स्त्री से ही स्त्री पैदा होती है

भंडै बाभु न कोइ ॥

स्त्री सिवा कोई नहीं है ।

नानक भंडै बाहरा

स्त्री के बिना

एको सचा सोइ ॥

एक वह ही सच्चा है ।

आसा दी वार (५३७)

सटीक

जितु मुखि सदा सलाहीऐ

जिस मुख साथ सदा मालिक की शलाघा करिए

भागा रती चारि ॥

वह कर्मो वाला है ।

नानक ते मुखि ऊजले

वह मुख उजले होंगे ।

तितु सचै दरवारि ॥२॥

उस सच्चे दरवार में ।

पउड़ी ॥

सभु को आखै आपणा

ईश्वर को हर कोई आपना कहता है ।

जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥

जो नहीं कहता उसको चुन कर निकाल दो ।

आसा दी बार (५३८)

सटीक

कीता आपो आपणा

आपना बुरा अच्छा काम किया
आपे ही लेखा संधीए ॥

आप ही लेखा देना पड़ेगा ।
जा रहणा नाही ऐतु जगि

यदि इस संसार में नहीं रहना
ता काइतु गारबि हंडीए ॥

तब हंकार में क्यों फिरें ।
मंदा किसै न आखीए

किसी को बुरा न कहें
पड़ि अखरु एहो बुझीए ॥

यह अक्षर पढ़ कर समझ लें ।
मूरखे नालि न लुझीए ॥१६॥

मूर्ख साथ न भागड़े ।

आसा दी वार (५३६)

सटीक

सलोकु म० १ ॥

नानक फिकै बोलिऐ

यदि फीके बोल बोलें

तनु मनु फिका होइ ॥

बब तन मन फीका हो जाता है ।

फिको फिका सदीऐ

फीके को फीका कहा जाता है

फिके फिकी सोइ ॥

उस फीके की फीकी ही शोभा है ।

फिका दरगह सटीऐ

फीका दरगाह में वगाह के मारा जाता है

मुहि थुका फिके पाइ ॥

फीके के मुख ऊपर फटकारें पड़ती हैं ।

आसा दी वार (५४०)

सटीक

फिका मूरखु आखीए

फीका मूर्ख कहा जाता है

पाणा लहै सजाइ ॥१॥

वह जूनों की सजा लेता है ।

म० १ ॥

अंदरहु भूठे पैज बाहरि

मनमुख अन्दर से भूठे हैं

दुनीआ अंदरि फैलु ॥

बाहर जगत में उनकी बड़ाई फैली हुई है ।

अठसठि तीरथ जे नावहि

यदि वह अठाठ तीर्थों पर स्नान करें

उतरै नाही मैलु ॥

तो भी उसकी मैल नहीं उतरती ।

जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदडु

जिसके अन्दर रेशम अर बाहर गोदड़ी है

ते भले संसारि ॥

वह संसार में अच्छे हैं ।

तिन्ह नेहु लगा रब सेती

उनका प्यार प्रमेश्वर के

देखन्हे वीचारि ॥

देखने अर विचारने में लगा हुआ है ।

रंगि हसहि रंगि होरवहि

वह प्रेम में ही हंसते, रोते हैं

चुप भी करि जाहि ॥

अर चुप भी कर जाते हैं ।

परवाह नाही किसै केरी

उनको किसी की परवाह नहीं

आसा दी वार (५४२)

सटीक

बाभु सचे नाह ॥

सच्चे नाम के बिना ।

दरि वाट उपरि खरचु मंगा

प्रमेश्वर के दरवाजे ऊपर बैठे खर्च मांगते हैं

जबै देइ त खाहि ॥

अर कहते हैं जब देवेगा तब खाएंगे ।

दीवानु एको कलम एका

दरगाह अर कलम एक है

हमा तुम्हा मेलु ॥

हमारा तुम्हारा वहां जोड़ तोड़ हो जाएगा ।

दरि लए लेखा पीड़ि छुटै

फिर जिन्हों ओर लेखा निकलेगा

नानका जिउ तेलु ॥२॥

उनको तिलों की तरह पीस कर तेल निकाला जाएगा

आसा दी वार (५४३)

सटीक

पउड़ी ॥

आपे ही करणा कीओ

मालिक ने आप ही संसार बनाया है

कल आपे ही तै धारीऐ ॥

आप ही आपनी उसमें शक्ति रखी है ।

देखहि कीता आपणा

आपने बनाए संसार को

धरि कची पकी सारीऐ ॥

और अच्छे बुरे को देखता है ।

जो आइआ सो चलसी

जो संसार में आया है वह यहां से चला जाएगा

सभु कोई आई वारीऐ ॥

हर कोई अपनी २ वारी जाएगा ।

आसा दी वार (५४४)

सटीक

जिसके जीअ पराण हहि

जिखके जीव प्राण हैं

किउं साहिबु मनहु विसारीऐ ॥

उसको क्यों भुलायें ।

आपण हथी आपणा

आपने हाथों आपना

आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥

काम आप संवार लें ।

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही आसकी

यह आशकी क्या हुई

दूजै लगै जाइ ॥

जो मालिक को छोड़ कर दूसरों साथ जा लगे ।

आसा दी वार (५४५)

सटीक

नानक आसकु कांठीऐ

वह आशक कहा जाता है

सदही रहै समाइ ॥

जो सदा साथ मिल रहता है ।

चंगै चंगा करि मंने

अच्छे मालिक का भाना अच्छा माने

मंदै मंदा होइ ॥

अर आप बुरे से बुरा बने ।

आसकु एहु न आखीऐ

वह आशक नहीं कहे जाते

जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥

जो अपने प्यारे साथ लेखा करने लग पड़े ।

आसा दी वार (५४६)

सटीक

महला २ ॥

सलामु जबाबु दोवै करे

जो सलाम जबाब करता है

मुंढहु घुथा जाइ ॥

वह आरम्भ से ही घुथा जाता है ।

नानक दांवै कूड़ीआ

उसकी दोनों बातें भूठी हैं

थाइ न काई पाइ ॥२॥

कोई स्थान नहीं मिलवा ।

पउड़ी ॥

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ

जिसकी सेवा साथ सदा सुख मिलता है

आसा दी वार

(५४७)

सटीक

सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥

उसको सदा याद रखें ।

जितु कीता पाईऐ आपणा

जब अपने किये हुए काम का फल मिल जाना है

सा घाल बरी किउ घालीऐ ॥

तो बुरा काम क्यों किया जाये ।

मंदा मूलि न कीचई

बुरा काम कभी न करो

दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥

यदि दूर तक दृष्टि डालें ।

जिउ साहिब नालि न हारीऐ

जिस करके मालिक के आगे न हारें ।

तेवेहा पासा ढालीऐ ॥

वैसा पासा फैंकें

मासा दी बार (५४८)

सटीक

किछुलाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

कुछ लाभ वाली कमाई कर के साथ ले जायें ।

सलोक महला २ ॥

चाकरु लगै चाकरी

दास बन कर सेवा में लगै

नाले गारबु वाहु ॥

अर अहंकार साथ भगड़ा करने लग पड़े ।

गला करे घणोरीआ

नाह वाह बहुत बातें करे

खसमु न पाए साहु ॥

वह मालिक का स्वाद नहीं पाएगा ।

आपु गवाह सेवा करे

आपा दूर करके सेवा करे

आसा दी वार (५४६)

सटीक

ता किछु पाए मानु ॥

तब ही कुछ मान (आदर) पाएगा ।

नानक जिसनो लगा तिसु मिलै

जो अपने साथ प्रेम करके लगा रहेगा

लगा सो परवानु ॥१॥

वह ही मालिक के दरवाजे प्रवान होगा ।

महत्ता १ ॥

जो जीह होइ सु उगवै

जो अन्दर होता है वह बाहर आ जाता है

मुह का कहिआ वाउ ॥

मुख का कहा वायु की भांति हो जाता है ।

बीजे बिखु मंगै अमृतु

जो बीजे कड़वा घर मांगे मीठा

वेखहु एहु निआउ ॥२॥

यह न्याय देखे ।

महला २ ॥

नालि इआणे दोसती

मूर्ख साथ प्रेम लगा कर

कदे न आवै रासि ॥

कभी भी ठीक नहीं आती ।

जेहा जाएँ तेहो वरतै

जैसा २ स्वभाव होता है वैसा वर्तान करता है

वेखहु को निरजासि ॥

बेशक तुम निर्णय करके देख लो ।

वसतू अंदरि वसतु समावे

किसी वर्तन में तब ही वस्तु पड़ सकती है

आसा दी वार

(५५१)

सटीक

दूजी होवै पासि ॥

जब बर्तन की आगे की वस्तु बाहर निकाल ली जाए ।

साहिब सेती हुकमु न चलै

मालिक साथ हुकम नहीं चल सकता

कही बणै अरदासि ॥

वेनती करनी बनती है ।

कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै

भूठ कमाने वाला भूठा होता है

नानक सिफति विगासि ॥३॥

बड़ाई करके प्रसन्नता है ।

महला २ ॥

नालि इआणै दोसती वडारु सिउनेहु ॥

मूर्ख साथ दोसती करनी राही साथ प्यार है ।

पाणी अंदरि लीकी जिउ

जिस प्रकार पानी में लीक होती है

तिसदा थाउ न थेहु ॥४॥

उसका कोई पता नहीं ।

महला २ ॥

होइ इआणा करे कंसु

जो अज्ञाना काम करता है

आणि न सकै रासि ॥

वह ठीक नहीं कर सकता ।

जे इक अध चंगी करे

यदि थोड़ा बहुत चंगा भी करे

दूजी भी बेरासि ॥५॥

वह तब भी ठीक नहीं होता ।

आसा दी बार (५५३)

सटीक

पउड़ी ॥

चाकरु लगै चाकरी

जो सेवक सेवा में लगा रहता है

जे चलै खसमै भाइ ॥

मालिक के हुकम में चलता है ।

हुरमति तिसनो अगली

तब उसकी बड़ी बड़ाई होती है

ओहु वजहु भि दुणा खाइ ॥

उसको बेतन भी मिलेगा वेशक दुगना चौगना खाये ।

खसमै करै बराबरी

जो मालिक की तुलना करता है

फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥

वह फिर शरम में पड़ता है ।

वजहु गवाए अगला

वह सारा रोजीना खो बैठता है

मुहे मुहि पाणा खाइ ॥

और मुंह ऊपर जूतियां खाता है ।

जिसदा दिता खावणा

जिसका दिया सदा खाया जाए

तिसु कहीऐ सावासि ॥

उसको सदा गाया करें ।

नानक हुकमु न चलई

मालिक साथ हुकम नहीं चलता

नालि खसमु चलै अरदासि ॥२२॥

बेनती करनी बनती है ।

आसा दी वार (५५५)

सटीक

सलोक महला २ ॥

एह किनेही दाति

यह दात क्या है

आपस ते जो पाईऐ ॥

जो अपने आप पा लई जाती है ।

नानक सा करमाति

वह दात करामात है

साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥

जो मालिक की प्रसन्नता से मिलती है ।

महला २ ॥

एह किनेही चाकरी

वह नौकरी क्या हुई

जितु भउ खसम न जाइ ॥

यदि मालिक का डर ही न गया ।

नानक सेवकु काढीऐ

वह दास कहा जाता है

जि सेती खसम समाइ ॥२॥

जो मालिक के साथ ही मिल जाये ।

पउड़ी ॥

नानक अंतु न जापन्ही

उस मालिक का अन्त नहीं पाया जाता

हरि ताके पारावार ॥

उसका आर पार बहुत बड़ा है ।

आपि कराए साखती

आप ही सखताई कराता है

आसा ही बार (५५७)

सटीक

फिरि आपि कराए मार ॥

अर आप ही मार कराता है ।

इकन्हा गली जंजीरीआ

कईयों के गले में फाहीयां हैं

इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥

अर कई अच्छे घोड़ों पर चढ़े हुए हैं ।

आपि कराए करे आपि

मालिक आप ही सब कुछ कर रहा है

हउ कैसिउ करी पुकार ॥

हम किस आगे जाकर बेनती करें ।

नानक करणा जिनि कीआ

जिसने जगत बनाया है

फिरि तिसही करणी सार ॥२३॥

वह ही सम्भाल करता है ।

सलोकु म० १ ॥

आपे भांडे साजिअनु

आपे जीव बरतन बनाता है

आपे पूरण देह ॥

स्वयं ही मालिक धन साथ भरता है ।

इकन्ही दुधु समाईए

कईयों में दूध डालता है

इकि चुल्है रहन्हि चढ़े ॥

कईयों को चूले ऊपर चढ़ाता है ।

इकि निहाली पै सवन्हि

कई नरम बिछौनों पर लेटते हैं

इकि उपरि रहनि खड़े ॥

और एक सारी रात सरहाने खड़े रहते हैं ।

आसा दी वार (५५६)

सटीक

तिना सवारे नानका

उन्हों को संवार लेता है

जिन कउ नदरि करे ॥१॥

जिन्हों पर कृपा करता है ।

महला २ ॥

आपे साजे करे आपि

आपे मालिक पांच तत्व बनाता है

जाई भि रखै आपि ॥

आपे उनमें जगह रखता है ।

तिसु विचि जंत उपाइकै

तीनों लोकों में जीवों को पैदा करके

देखै थापि उथापि ॥

फिर पैदा किये हुआओं को मार डालता है ।

किसनो कहीऐ नानका

अब कहैं किसको

सभु किछु आपे आपि ॥२॥

वह आप ही आप सब कुछ हुआ ।

पउड़ी ॥

बडे कीआ बडिआईआ

बडे की बडाईयां बड़ी हैं

किछु कहणा कहणु न जाइ ॥

कुछ उनका कहना कहा नहीं जाता ।

सो करता कादर करीसु

वह सब का करने वाला मालिक

दे जीआ रिजकु संवाहि ॥

सब जीवों को रोखी देता है ।

आसा दी वार (५६१)

सटीक

साई कार कमावणी

वह ही कार करनी अच्छी है

धुरि छोडी तिनै पाइ ॥

जो आदि से उसने जीवों के हिसाब में पा छोड़ी है ।

नानक एकी बाहरी

एक मालक के सिवा

होर दूजी नाही जाइ ॥

और कोई दूसरी बात नहीं है ।

सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥

वह ही कार करता है जो उसकी इच्छा होती है

॥ सुधु ॥

१ ओं सतिगुरप्रसादि ।

सलोक महला ९

गुन गोविंद गाइओ नही

गोविन्द के गुन न गाए

जनमु अकारथ कीन ॥

जन्म व्यर्थ खो दिया ।

कहु नानक हरि भजु मना

हे मन ! इस प्रकार हरि को याद कर

जिहि विधि जल को मीन ॥१॥

जिस विधि साथ मच्छी पानी को करती है ।

बिखिअन सिउ काहे रचिओ

बिष्यों में क्यों लगा हैं

सल्लोक महला ६ (५६३)

सटीक

निमख न होहि उदास ॥

पल भर भी भिन्न नहीं होता ।

कहु नानक भजु हरि मना

मना हरि को याद कर

परै न जम की फास ॥२॥

तुझे यम फाही नहीं पड़ेगी ।

तरनापो इउ ही गइओ

जवानी का समय तो इस तरह व्यतीत हो गया

लीओ जरा तनु जीति ॥

अब बुढ़ेपे ने आकर पकड़ लिया ।

कहु नानक भज हरि मना

मना हरि को याद कर

अउध जातु है बीति ॥३॥

तेरी आयु व्यतीत होती जाती है ।

विरध भइओ सूझै नही

वृद्ध हो गया सूझता कुछ नहीं है

कालु पहूचिओ आन ॥

मृत्यु ने डे आ गई है ।

कहु नानक नर बावरे

ओ बावरे मनुष्य !

किउ न भजे भगवान ॥४॥

तू अब भगवान को क्यों नहीं भजता ।

धनु दारा संपत्ति सगल

धन, स्त्री, घर की सारी स्मयी

जिनि अपुनी करि मानि ॥

जिसने अपनी करके मानी है ।

इन मै कछु संगी नही

इनमें से कोई भी साथी नहीं होना

सलोक महला ६ (५६५)

सटीक

नानक साची जानि ॥५॥

यह बात साची करके मान ले

पतित उधारन भै हरन

पापियों के तारने वाला अर डर का नासक है

हरि अनाथ के नाथ ॥

वह हरि गरीबों का मालक है ।

कहु नानक तिह जानीऐ

इस प्रकार उसको जानो

सदा बसतु तुम साथ ॥६॥

कि वह सदा तुम्हारे साथ बसता है ।

तनु धनु जिह तोकउ दीओ

जिसने तुमको तन, धन दिया है ।

ता सिउ नेहु न कीन ॥

उस साथ तुम प्रेम क्यों नहीं करते।

कहु नानक नर बावरे

ओ बावरे मनुष्यो

अब किउ डोलत दीन ॥७॥

अब क्यों गरीबों को भांति भागते फिरते हो ।

तनु धनु संपै सुख दोओ

जिसने तुमको तन, धन अर सुख दिया है

अरु जिह नीके धाम ॥

अर और भी घर के आराम दिये हैं ।

कहु नानक सुन रे मना

सुन मना

सिमरत काहि न राम ॥८॥

उस राम को क्यों नहीं सिमरता

सभ सुख दाता रामु है

राम सब सुखों का दाता है ।

सलोक महला ६ (५६७)

सटीक

दूसर नाहि न कोइ ॥

दूसरा और कोई नहीं है ।

कहु नानक सुनि रे मना

सुन मना

तिह सिमरत गति होइ ॥६॥

उसको सिमरने से गति होती है ।

जिह सिमरत गति पाईऐ

जिसके सिमरने मे गति होती है

तिहि भजु रे तै मीत ॥

हे मित्र ! उसको याद कर ।

कहु नानक सुन रे मना

सुन मना

अउध घटत है नीत ॥१०॥

नित नित आयु कम होती जाती है ।

पांच तत को तनु रचिओ

यह शरीर पांच तत्वों का बनाया है ।

जानहु चतुर सुजान ॥

हे सिआनियो समझो ।

जिह ते उपजिओ नानक

जहां से हुआ है

लीन ताहि मै मान ॥११॥

वहां ही समा जाता है ।

घटि घटि मै हरि जू बसै

सब जीवों अन्दर हरि बसता है ।

संतन कहिओ पुकारि ॥

संतों ने पुकार कर कहा है ।

कहु नानक तिह भजु मना

मना ! उसको याद कर

सलोक महला ६ (५६६)

सटीक

भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥

तूं संसार डरावने समुद्र से पार उतर जाएंगा ।

सुख दुख जिह परसै नही

जिसको सुख दुःख अर

लोभ मोह अभिमानु ॥

लोभ, मोह, हंकार नहीं बूढ़ता।

कहु नानक सुन रे मना

मना सुन

सो मूरत भगवान ॥१३॥

वह भगवान की मूर्ति है ।

उसतति निदिआ नाहि जिहि

जिसमें स्तुति निन्दा नहीं है ।

कंचन लोह समानि ॥

अर जिसको सोना, लोहा बराबर है ।

कहु नानक सुनि रे मना

मना सुन

मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥

वह मनुष्य मुक्त हुआ हुआ है।

हरख सोग जाके नही

जिसको खुशी गमी की कोई परवाह नहीं है

बैरी भीत समान ॥

अर मित्र, शत्रु भी बराबर है।

कहु नानक सुनि रे मना

मना सुन

मुकति ताहि तै जान ॥१५॥

तू उसको बन्धनों से खुला समझ

भै काहू कउ देत नहि

ना किसी को भय देता है

सलोक महला ६ (५७१)

सटीक

नहि भै मानत आनि ॥

अर ना किसी का भय मानता है ।

कहु नानक सुनि रे मना

मना सुन

गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

उसको ज्ञानी कहा जाता है ।

जिहि बिखिआ सगली तजी

जिसने सारी कुड़तन त्यागी है

लीओ भेख बैराग ॥

अर प्रेमियों का रूप बना लिया है।

कहु नानक सुन रे मना

मना सुन

तिह नर माथै भाग ॥ १७ ॥

उस मनुष्य के साथे के भाग्य अच्छे हैं ।

जिहि माइआ ममता तजी

जिसने माया ममता दूर फैंक दी है ।

सभ ते भइआ उदास ॥

अर सारे पदार्थों से भिन्न हो गया है ।

कहु नानक सुन रे मना

मना सुन

तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥

उसके अंदर हरि ने वासा किया है ।

जिह प्रानी हउमै तजी

जिस मनुष्य ने हंगता छोड़ दी है

करता राम पछान ॥

अर राम को कर्ता पछान लिया है ।

कहु नानक वहु मुक्ति नरु

वह मनुष्य मुक्त हुआ है ।

सलोक महला ६ (५७३)

सटीक

इह मन साची मान ॥१६॥

हे मना ! यह सच जान

मै नासन दुरमति हरन

यह डर अर खोटी अकल को हरता है

कलि मै हरि को नाम ॥

यह जो कलि अन्दर हरि नाम है ।

निस दिनि जो नानक भजै

जो इसको दिन रात याद करता है

सफल होहि तिह काम ॥२०॥

उसके सारे काम पूरे हो जाते हैं ।

जिहवा गुन गोविंद भजहु

जबान साथ हरि के गुन गाओ ।

करन सुनहु हरि नाम ॥

अर कानों साथ हरि का नाम सुनों ।

सलोक महला ६ (५७४)

सटीक

कहु नानक सुन रे मना

मना सुन

परहि न जम कै धाम ॥२१॥

फिर तूँ यम के घर नहीं जाएगा ।

जो प्राणी ममता तजै

जो प्राणी ममता अर

लोभ मोह अहंकार ॥

लोभ, मोह, हंकार त्यागता है ।

कहु नानक आपन तरै

वह स्वयं भी तर जाता है

अउरन लेत उधार ॥२२॥

अर औरों को भी तार लेता है ।

जिउ सुपना अरु पेखना

जिसप्रकारसुपना अर रात को कोईतमाशा देखाजाता है

सलोक महला ६ (५७५)

सटीक

ऐसे जग कउ जानि ॥

इस प्रकार संसार को जान लो ।

इन मै कछु साचो नही

इस में कोई भी सच्चा नहीं

नानक बिनु भगवान ॥२३॥

भगवान के बिना ।

निसि दिनि माइआ कारने

आठों पहर माया के लिए

प्रानी डोलत नीत ॥

मूर्ख भागा फिरता है ।

कोटन मै नानक कोऊ

करोड़ों में कोई एक है

नाराइन जिह चीति ॥२४॥

जिसके हृदय में ईश्वर है ।

सलोक महला ६ (५७६)

सटीक

जैसे जल ते बुदबुदा

जिस प्रकार बुलबुला पानी से

उपजै बिनसै नीत ॥

पैदा हो कर फिर बीच में चला जाता है ।

जग रचना तैसे रची

संसार की रचना इसी भांति रची है

कहु नानक सुन मीत ॥२५॥

हे मित्र ! सुन

प्राणी कछू न चेतई

प्राणी कुछ भी चेतें नहीं करता

मद माइआ कै अंध ॥

माया के हंकार में अन्धा हुआ हुआ है ।

कहु नानक बिनु हरि भजन

हरि भजन के बिना

परत ताहि जम फंध ॥२६॥

इसके गले में यम के फंदे पड़ेगे

जउ सुख कउ चाहै सदा

अगर सदा सुख चाहता हूँ

सरनि राम की लेहि ॥

तो राम की शरण ले ।

कहु नानक सुन रे मना

मना सुन!

दुरलभ मानुख देह ॥२७॥

यह मनुष्य शरीर दुर्लभ है ।

माइआ कारनि धावही

माया लिये भागे फिरते हैं

मूरख लोग अजान ॥

अञ्जाने मूर्ख लोग ।

सलोक महला ६ (५७८)

सटीक

कहु नानक बिनु हरि भजनि

हरि के भजन के बिना

विरथा जनमु सिरान ॥२८॥

निसफल ही जन्म खो देते हैं ।

जो प्राणी निसि दिनि भजे

जो मनुष्य आठों पहर हरि को भजता है

रूप राम तिह जानु ॥

वह उसका स्वरूप हो जाता है ।

हरि जन हरि अंतरु नही

हरि और उसमें कोई भिन्नता नहीं है

नानक साची मानु ॥२९॥

यह बात सत्य मानो ।

मनु माइआ मै फधि रहिआ

मन माया में फंस गया है

विसरिओ गोविंद नाम ॥

गोविंद का नाम भूल गया है ।

कहु नानक बिनु हरि भजन

बिना हरि भजन के

जीवन कउने काम ॥३०॥

जीवन किस काम है ।

प्राणी राम न चेतई

प्राणी राम को नहीं याद करता

मदि माइआ कै अंध ॥

साया में अन्धा हुआ २ है ।

कहु नानक हरि भजन बिनु

हरि भजन के बिना

परत ताहि जम फंध ॥३१॥

इसको जमों के फाहे पड़ेगे ।

सलोक महला ६ (५८०)

सटीक

सुख मै बहु संगी भए

सुख में अधिक मित्र बन जाते हैं

दुख मै संगि न कोइ ॥

दुःख में कोई नहीं ।

कहु नानक हरि भजु मना

मना ! हरि को याद कर

अंति सहाई होइ ॥३२॥

जो तेरी अंत सहायता करेगा ।

जनम जनम भ्रमत फिरिओ

जन्मों जन्मों में भ्रमता रहा

मिटिओ न जम को त्रासु ॥

यमों का डर न गया ।

कहु नानक हरि भजु मना

मना ! हरि को याद कर

निरभै पावहि बासु ॥३३॥

फिर तू भय बिना वासा पाएंगा ।

जतन बहुतु मै करि रहिआ

मैं बड़े उपाय किये

मिटिआ न मन को मानु ॥

फिर भी मन का मान दूर न हुआ ।

दुरमति सिउ नानक फधिआ

यह जीव खोटी अकल साथ बंधा हुआ है ।

राखि लेहु भगवानि ॥३४॥

हे भगवान ! रक्षा करो

बाल जुआनी अरु बिरध फुनि

बाल, जवानी अरु बुढ़ेपा

तीन अवस्था जानि ॥

यह जो तीन हालतें हैं ।

सलोक सहला ६ (५८२)

सटीक

कहु नानक हरि भजन विनु

हरि भजन बिना

विरथा सभ ही मान ॥३५॥

यह सब ही व्यर्थ जाती हैं ।

करणो हुतो सु न कीओ

जो करना था वह न किया

परिओ लोभ कै फंध ॥

लोभ के फंदों में पड़ा रहा ।

नानक समिओ रमि गइओ

इसी प्रकार समय खो दिया

अब किउ रोवत अंध ॥३६॥

हे अन्धे! अब क्यों रोता है।

मनु माइआ मै रमि रहिओ

मन माया में फंसा हुआ है

निकसत नाहिनि भीत ॥

हे मित्र! अब निकलता नहीं है।

नानक मूरति चित्र जिउ

जिस प्रकार दीवार ऊपर लिखी तस्वीर होती है

छाडित नाहिनि भीत ॥३७॥

वह उसको छोड़ नहीं सकती।

नर चाहत कछु अउर

मनुष्य कुछ और चाहता है

अउरै की अउरै भई ॥

हो कुछ और का और जाता है।

चितवत रहिओ ठरगउ

यह दूसरों को ठगना चितवता रहता है

नानक फासी गलि परी ॥३८॥

उल्टी फाही इसी के गले पड़ती है।

सलोक महला ६ (५८४)

सटीक

जतन बहुत सुख के कीए

सुख के बड़े यत्न किये

दुख को कीओ न कोइ ॥

दुःख का कोई नहीं किया ।

कहु नानक सुन रे मना

सुन मना !

हरि भावै सो होइ ॥३६॥

जो हरि को अच्छा लगता है वही होता है ।

जगतु भिखारी फिरतु है

संसार भांगता फिरता है

सभ को दाता राम ॥

सब का दाता राम है ।

कहु नानक मन सिमरु तिह

मना ! उसको याद कर

पूरन होवहि काम ॥४०॥

तेरे सब काम पूरे हो जायेंगे ।

भूठै मानु कहा करै

तू भूठा हंकार क्यों करता है

जगु सुपने जिउ जान ॥

संसार को सुपने भांति समझ ।

इन मै कछु तेरो नही

इस में कुछ भी तेरा नहीं है

नानक कहिओ बखान ॥४१॥

सच्च कहा है ।

गरबु करतु है देह को

जिस शरीर का तू हंकार करता है

बिनसै छिन मै मीति ॥

मित्र ! यह तो पल में नाश हो जायेगा

सलोक महला ६ (५८६)

सटीक

जिह प्रानी हरि जसु कहिओ

जिस जीव ने हरि यस कहा है

नानक तिहि जगुजीति ॥४२॥

वह संसार में जीत गया है ।

जिह घटि सिमरनु राम को

जिस मन अन्दर राम का स्मरण है

सो नरु मुकता जानु ॥

वह मनुष्य मुक्त है ।

तिहि नर हरि अंतरु नही

उस मनुष्य अर हरि में कोई अन्तर नहीं

नानक साची मानु ॥४३॥

यह सत्य मानों ।

एक भगति भगवान

एक भगवान की भक्ति

जिह प्रानी कै नाहि मन ॥

जिस मनुष्य के अन्दर नहीं है ।

जैसे सूकर सुअन

शूर, कूकर की भांति

नानक मानो ताहि तन ॥४४॥

तुम उसका शरीर समझो ।

सुआमी को गृहु जिउ सदा

जिस प्रकार मालक का घर

सुआन तजत नही नित ॥

कूकर नहीं छोड़ता है ।

नानक इह विधि हरि भजहु

इसी प्रकार तुम भी हरि सिमरो

इक मन हुइ इकि चित ॥४५॥

मन चित्त एक करके ।

सलोक महला ६ (५८८)

सटीक

तीरथ वरत अरु दान करि

तीर्थ वरत अर दान करके

मन मै धरै गुमानु ॥

जो मन में हंकार करता है ।

नानक निहफल जात तिहि

उसका सब व्यर्थ जाता है

जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

हाथी के स्नान की भांति

सिरु कंपिओ पग डगमगै

सिर कांपने लगा पांव डावां डोल हो गये

नैन जोति ते हीन ॥

नेत्रों से ज्योति खैंची गई ।

कहु नानक इह विधि भई

यह हालत आ गई

तऊ न हरि रस लीन ॥४७॥

फिर भी हरि रस नहीं लिया ।

निज करि देखिओ जगतु मै
मैंने संसार को बहुत अपना बना कर देखा
को काहू को नाहि ॥

परन्तु यहां किसी का कोई नहीं है ।

नानक थिरु हरि भगति है

एक हरि भक्ति है

तिह राखो मन माहि ॥४८॥

इसको मन में रखो

जग रचना सभ भूठ है

यह सारी जग रचना भूठ है

जानि लेहु रे मीत ॥

हे मित्र ! जान ले

सलोक महला ६ (४६०)

सटीक

कहि नानक थिरु नारहै

यह स्थिर नहीं रहेगी

जिउ बालू की भीत ॥४६॥

बालू की दीवार की भांति ।

राम गइओ रावनु गइओ

राम अर रावन चले गये हैं

जाकउ बहु परवार ॥

जिन का बहुत परिवार था ।

कहु नानक थिरु कछु नही

यहां रहन वाला कुछ नहीं है ।

सुपने जिउ संसार ॥५०॥

यह संसार स्वपने भांति है ।

चिंता ताकी कीजीऐ

चिंता उस की करनी चाहिये

जो अनहोनी होइ ॥

जो बात अनहोनी हो।

इह मारगु संसार को

इस संसार के रास्ते अन्दर तो

नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

टिका रहने वाला कोई नहीं।

जो उपजिआ सो बिनसि है

जो पैदा हुआ है वह नाश रूप है

परो आजु क काल ॥

आज कल में पड़ा हुआ है।

नानक हरि गुण गाइले

हरि के गुन गा लो

छाडि सगल जंजाल ॥५२॥

सारे जंजाल छोड़ दो।

सलोक महला ६ (५६२)

सटीक

दोहरा ॥

बलु छुटकिआ बंधन परे

जोर सारा जाता रहा और सारे बन्धन आ पड़े

कछू न होत उपाइ ॥

कोई यत्न नहीं हो सकता ।

कहु नानक अब ओट हरि

अब तो हरि की टेक है

गजि जिउ होहु सहाइ ॥५३॥

हे हरि ! हाथी की भांति सहाई हो ।

बलु होआ बंधन छुटे

बल भी है बन्धन भी सारे छूट गये हैं

सभ किछु होत उपाइ ॥

यत्न भी सारे हो सकते हैं ।

नानक सभ किछु तुमरै हाथ मै

सब कुछ तुम्हारे हाथ में है

तुम ही होत सहाइ ॥५४॥

तुम स्वयं अपनी सहायता कर सकते हो।

संग सखा सभ तजि गए

हमारे संगी साथी सब हमें छोड़ गये हैं

कोऊ न निबहिअो साथ ॥

कोई भी हमारे साथ नहीं निभा ।

कहु नानक इह बिपत मै

इस बिपता में

टेक एक रघनाथ ॥५५॥

एक ईश्वर का आश्रय है।

नामु रहिअो साधू रहिअो

नाम, संत

सलोक महला ६ (५६४)

सटीक

रहिओ गुर गोविंद ॥

गुरु गोविंद स्थिर है ।

कहु नानक इह जगत मै

इस संसार में किसी धिरले ने ही

किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥

गुरु मन्त्र लेकर नाम जपा है ।

राम नामु उरि मै गहिओ

मैंने राम का नाम मन अंदर बसा लिया है

जाकै सम नही कोइ ॥

जिसके समान और कोई नहीं है ।

जिह सिमरत संकट मिटै

जिसके स्मरण से दुःख दूर हो जाते हैं

दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

अर हे महाराज ! तेरा दर्शन हो जाता है ।

* सुखमनी साहिब *

गउड़ी सुखमनी म० ५

गउड़ी राग में सुखमनी नामक बानी
गुरु अर्जन देव जी ने रची है

सलोक

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है गुरु कृपा से मिलता है ।

आदि गुरए नमह ॥

श्री गुरु नानक देव जी ।

जुगादि गुरए नमह ॥

श्री गुरु अंगद देव जी ।

सुखमनी साहिब (५६६)

सटीक

सतिगुरए नमह ॥

श्री गुरु अमरदास जी ।

श्री गुरदेवए नमह ॥१॥

श्री गुरु रामदास जी को नमस्कार हो ।

असटपदी

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ

मन बानी साथ चेते करके सुख पावो

कलि कलेश तन माहि मिटावउ ॥

शरीर के कल्पना वाले कलेश को दूर कर लो ।

सिमरउ जासु बिसंभर एकै ॥

संसार के मालक एक हरि को चेते करो ।

नामु जपत अगनत अनेकै ॥

उस बेगिन्त नाम को अनेकों जपके तर गये ।

वेद पुरान सिमृति सुधाख्यर ॥

वेदों पुरानों सिमृतियों के शुद्ध अक्षरों को पढ़ा है ।

कीने राम नाम इक आख्यर ॥

एक अक्षर राम नाम जगत ने प्रसिद्ध किया है ।

किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥

थोड़ा जैसा किनका जिसने मन अन्दर बसा लिया है ।

ताकी महिमा गनी न आवै ॥

उसकी महिमा गिनी नहीं जाती ।

कांखी एकै दरस तुहारो ॥

जो एक तेरे दर्शन के चाहवान हैं

नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥

उन साथ मिला कर मुझे तार ले ।

सुखमनी सुखु अमृत प्रभ नामु ॥

हरि के नाम का सुख इस बानी में है

सुखमनी साहिब (५६८)

सटीक

भगत जना कै मनि बिस्राम ॥रहाउ॥

इसका टिकाओ संतों के मन अंदर है ।

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥

प्रभु के स्मरण करने से गर्भ अंदर नहीं जाता ।

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥

प्रभु के स्मरण करने से यम का दुःख दूर हो जाता है ।

प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥

प्रभु के याद करने से मृत्यु दूर हो जाती है ।

प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥

प्रभु के स्मरण करने से शत्रु का भय चला जाता है ।

प्रभ सिमरत कहु बिघनु न लागै ॥

प्रभु को याद करने से कुल बिघ्न नहीं पड़ता ।

प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥

प्रभु को याद करने से जीव रात दिन जागता है ।

सुखमनी साहिब (५६६)

सटीक

प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥

प्रभु को याद करने से कोई डर नहीं ब्रूह सकता ।

प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥

प्रभु को याद करने से कोई दुःख संताप नहीं देता ।

प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥

प्रभु को याद करना संतों के संग से मिलता है ।

सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥

सुखों के भंडार हरि के प्रेम अन्दर हैं ।

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउनिधि ॥

प्रभु के स्मरण से रिधियां सिधियां निधियां मिलती हैं ।

प्रभकैसिमरनिगिआनुधिआनुततुबुधि ॥

हरि की याद से सही अकल का ज्ञान होता है ।

प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥

हरि की याद से जपों तपों के फल मिलते हैं ।

सुखमनी साहिब (६००)

संटीक

प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥

हरि की याद से दूसरा भाव नाश हो जाता है ।

प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥

हरि की याद से तीर्थों का स्नान हो जाता है ।

प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥

हरि की याद से दरगाह में मान होता है ।

प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥

हरि की याद से भला होता है ।

प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥

हरि की याद से अच्छे फलों से फलता है ।

से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥

वह याद करता है जिसको आप याद कराये ।

नानक ताकै लागउ पाए ॥३॥

हम उनकी चरणी लगते हैं ।

सुखमनी साहिब (६०१)

सटीक

प्रभ का सिमरनि सभ ते ऊंचा ॥

हरि का याद करना सब से ऊंचा है ।

प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥

हरि को याद करने से बहुत लोग तरे हैं ।

प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥

हरि को याद करने से तृणा बुझ जाती है ।

प्रभ कै सिमरनि सभ किछु सुझै ॥

हरि याद करने से सब कुछ नजर आ जाता है ।

प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥

प्रभु को याद करने से यमों का डर नहीं होता ।

प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥

प्रभु को याद करने से सब लोड़ें पूरी हो जाती हैं ।

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥

प्रभु को याद करने से मन की मैल उतर जाती है ।

सुखमनी साहिब (६०२)

सटीक

अमृत नामु रिद माहि समाह ॥

प्रभु का अमृत नाम मन अन्दर आ जाता है ।

प्रभ जी बसहि साथ की रसना ॥

प्रभु भक्तों की रसना ऊपर बसता है ।

नानक जन का दासनि दसना ॥४॥

मैं प्रभु के दासों का दास हूँ ।

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥

हरि को याद करने वाले धनवान् हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥

उसको याद करने वाले इज्जत वाले हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥

उसको याद करने वाले माने प्रमाने हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥

उसको याद करने वाले बहुत बड़े मनुष्य हैं ।

सुखमनी साहिब (६०३)

सटीक

प्रभ कउ सिमरहि से वेमुहताजे ॥

उसको याद करने वाले किसी के मुहताज नहीं हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि से सब के राजे ॥

उसको याद करने वाले सब के राजे हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥

उसको याद करने वाले सुखी बनते हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि सदा अविनासी ॥

उसको याद करने वाले मरते नहीं हैं ।

सिमरन ते लागें जिन आपि दइआला ॥

वही सिमरते हैं जिन्हों पर आप दयालू होवे ।

नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥

मैं उन के चरणों की धूल मांगता हूँ ।

प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥

हरि का स्मरण करने वाले परउपकारी हैं ।

सुखमनी साहिब (६०४)

सटीक

प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥

जो हरि को याद करते हैं मैं उनसे बलहार जाता हूँ ।

प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥

जो हरि को याद करते हैं वह मुख सुन्दर लगते हैं ।

प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥

जो हरि को याद करते हैं उनकी आयु सुखी है ।

प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥

जो हरि को याद करते हैं उन्होंने ने मन को जीता है ।

प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

जो हरि को याद करते हैं उनकी रीत निर्मल है ।

प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥

हरि को याद करने से बहुत आनन्द मिलता है ।

प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥

हरि को याद करने वाले उसके पास बसते हैं ।

सुखमनी साहिब (६०५)

सटीक

संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥

संतों की कृपा से जीव रात दिन जागता है ।

नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥

पूरण भागों से स्मरण मिलता है ।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥

हरि को याद करने से सारे काम ठीक हो जाते हैं ।

प्रभकै सिमरनि कबहु न भूरे ॥

हरि को याद करने से जीव भूरता नहीं है ।

प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥

हरि को याद करने से गुणों की रंगत आ जाती है ।

प्रभ कै सिमरनि सहज समानी ॥

हरि को याद करने से वाशना सहज में समा जाती है ।

प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥

हरि को याद करने से मन टिक जाता है ।

सुखमनी साहिब (६०६)

सटीक

प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥

हरि को याद करने से हृदय खिड़ जाता है ।

प्रभ कै सिमरनि अनहद भुनकार ॥

हरि को याद करने से अनाहद शब्द का रस होता है ।

सुख प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥

हरि को याद करने से सुखों का अन्त नहीं है ।

सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥

जिन्हों ऊपर कृपा करे वही उसको याद करते हैं ।

नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥

मैं उन की शरण पड़ता हूँ ।

हरि सिमरनि करि भगत प्रगटाए ॥

हरि को याद करने से भक्त पैदा होते हैं ।

हरि सिमरनि लगि वेद उपाए ॥

हरि को याद करने से ऋषियों ने वेद बनाये हैं ।

सुखमनी साहिब (६०७)

सटीक

हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥

हरि को याद करने से सिद्ध, जती, दाते हो गए हैं ।

हरि सिमरनि नीच चहु कुंठ जाते ॥

हरि को याद करने से नीच हर पासे जानिया है ।

हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥

हरि को याद करने से सारी पृथ्वी खड़ी है ।

सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥

सारे कामों के करने वाले को हर समय याद करो ।

हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥

सारा संसार हरि स्मरण लिए बनाया गया है ।

हरि सिमरनि महि आपि निरंकारा ॥

हरि को याद करने वाले के अन्दर हरि बसता है ।

करि किरग जिसे आपि बुझाइआ ॥

हरि कृपा करके जिसको आप समझा देता है ।

मुखमनी साहिब (६०८)

सटीक

नानक गुरमुखि हरि सिमरनुतिनि पाइ आ ॥ ८ ॥ १ ॥

उस गुरमुख ने हरि के स्मरण को पा लिया है ।

सलोक ॥

दीन दरद दुख भंजना

गरीबों के दर्द, दुःख नाश करने वाले

घटि घटि नाथ अनाथ ॥

निमानियों के अन्दर वासा करने वाले मालिक !

सरनि तुमारी आइओ

मैं आपकी शरण आया हूँ ।

नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥

हे गुरु के अङ्ग सङ्ग रहने वाले ईश्वर !

मुखमंजी साहिब (६०६)

सटीक

असटपदी

जह मातपिता सुत मीत न भाई ॥

जहां माता, पिता, पुत्र, मित्र भाई सहाई नहीं
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥
हे मन ! वहां हरि का नाम तेरी सहायता करेगा ।

जह महा भइआन दूत जमदलै ॥

जहां बड़े डर देने वाले यम दूत होंगे
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥

वहाँ एक हरि का नाम तेरे साथ सहाई होगा ।

जह मुसकल होवै अति भारी ॥

जहाँ बहुत कठिनता आ जाएगी
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥

वहाँ एक नाम पल में तार लेगा ।

सुखमनी साहिब (६१०)

सटीक

अनिक पुनह चरन करत नही तरै ॥

अनेकों भले काम करने वाले भी नहीं तरेंगे ।

हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥

हरि नाम करोड़ों पाप नाश करने वाला है ।

गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥

हे मन ! गुरु द्वारा नाम को जप ।

नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥

तब तुझे अनेकों सुख मिलेंगे ।

सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥

सारी दुनिया का राजा दुखिया है ।

हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥

हरि नाम जपने वाला सुखी होता है ।

लाख करौरी बंधुन परै ॥

यदि मनुष्य को अनेकों दुःख आ पड़े हों ।

मुखमनी साहिव (६११)

सटीक

हरि का नामु जपत निसतरै ॥

तब वह हरि नाम जप कर तर सकता है ।

अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥

माया के अनेकों तमाशे प्यास नहीं दूर कर सकते ।

हरि का नामु जपत आघावै ॥

हरि नाम जप कर जीव तृप्त हो जाता है ।

जिह मारग इहु जाति इकेला ॥

जिस रास्ते से मनुष्य अकेला जाता है

तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥

वहां जीव का सहाई हरि नाम होता है ।

ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥

हे मन ! ऐसा नाम सदा स्मरण कर ।

नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥

गुरु की कृपा से मुक्ति पाई जाती है ।

सुखमनी साहिब (६१२)

सटीक

छूटत नही कोटि लख बाही ॥

जहां बहुत लोगों की सहायता से भी नहीं बचता

नामु जपत तह पारि पराही ॥

वहां नाम जपकर जीव पार हो जाता है ।

अनिक विघन जह आइ संघारै ॥

जहां अनेकों विघन आ पड़ते हैं

हरि का नामु ततकाल उधारै ॥

वहां हरि का नाम शीघ्र ही बचा लेता है ।

अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥

अनेकों यूनियों में जन्मता अर मरता है

नामु जपत पावै बिस्राम ॥

नाम जप कर आराम साथ बैठ जाता है ।

हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥

हंकारी मैला मैल कभी नहीं धो सकता ।

हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥

हरि का नाम करोड़ों पापों को दूर करता है ।

ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥

हे मन ! ऐसा नाम प्रेम से याद कर ।

नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥

संतों के संग से नाम मिल जाता है ।

जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥

जिस रास्ते के कोह नहीं गिने जाते ।

हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥

वहां ईश्वर का नाम साथ खर्च होता है ।

जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥

जिस रास्ते बहुत ही अन्धेरा है ।

हरि का नामु संगि उजीआरा ॥

वहां ईश्वर के नाम से रोशनी होती है ।

सुखमनी साहिब (६१४)

सटीक

जहा पंथि तेरा को न सिजानू ॥

जहां तेरा कोई जानने वाला नहीं होता

हरि का नामु तह नालि पछानू ॥

वहां हरि का नाम तेरे जानने वाला होगा ।

जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥

जहां बहुत तेज धूप पड़ती है

तह हरि के नाम की तुम ऊपर छाम ॥

वहां हरि के नाम की ऊपर छांव होगी ।

जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥

जहाँ प्यास तुझे आकर दुःखी करेगी

तह नानक हरि हरि अमृतु बरखै ॥४॥

वहाँ हरि का नाम आकर वर्षा करेगा ।

भगत जना को बरतनि नामु ॥

भगत्तों की बर्तन हरि का नाम है ।

सुखमनी साहिब (६१५)

सटीक

संत जना कै मनि बिसामु ॥

नाम का टिका संतों के मन में है ।

हरि का नामु दास की ओट ॥

हरि का नाम सेवकों का आश्रय है ।

हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥

हरि के नाम द्वारा बहुत तर गए हैं ।

हरि जसु करत संत दिनु राति ॥

संत दिन रात हरि का यश करते हैं ।

हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥

हरि नाम की औषधि संत ही कमाते हैं ।

हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥

संतों के पास हरि का नाम ही खजाना है ।

पारब्रह्मि जन कीनो दान ॥

यह दान हरि ने अपने दासों को दिया है ।

सुखमनी साहिब (६१६)

सटीक

मन तन रंगि रते रंग एकै ॥

मन, तन करके एक प्रेम में रंगे रहते हैं ।

नानक जनकै बिरति बिबेकै ॥५॥

प्रेमियों की वृत्ति में विचार अर अकल है ।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥

हरि का नाम सेवकों की मुक्ति की जुक्ति है ।

हरि कै नामि जनकउ तृपति भुगति ॥

हरि का नाम जपने से दास प्रसन्न हो जाते हैं

हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥

हरि का नाम दासों का रंग रूप है ।

हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥

हरि नाम जपने से कोई विघ्न नहीं पड़ता ।

हरि का नामु जनकी बडिआई ॥

दासों की बड़ाई हरि का नाम ही है ।

सुखमनी साहिब (६१७)

सटीक

हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥

दासों ने हरि नाम करके ही शोभा पाई है ।

हरि का नाम जन कउ भोग जोग ॥

हरि नाम ही दासों को भोग अर जोग है ।

हरि नामु जपत कछु नाहि बिअोगु ॥

हरि नाम जपने से कभी बिछोड़ा नहीं होता ।

जनु राता हरि नाम की सेवा ॥

दास नाम सेवा में रत्ता है ।

नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥

उस प्यारे को सारे देवते पूजते हैं ।

हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥

हरि का नाम ही संतों पास भंडारा है ।

हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥

जो आप हरि ने संतों को बरुशा है ।

सुखमनी साहिब (६१८)

सटीक

हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥

संतों को हरि के जर वाली ओट है ।

हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥

हरि प्रताप करके संत और किसी को नहीं जानते ।

ओति पोति जन हरि रसि राते ॥

इधर उधर के फेर से संत हरि संग ही जुड़े हैं ।

सुन समाधि नाम रस माते ॥

अफुर समाधी द्वारा नाम रस में लीन हैं ।

आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥

हरि का नाम संत आठों पहर जपते हैं ।

हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥

हरि भक्त प्रकट होकर छिपता नहीं ।

हरि की भगति मुक्ति बहु करे ॥

हरि की भक्ति बहुतों को मुक्त कर देती है ।

नानक जन संगि केते तरे ॥७॥

हरि जनों साथ लग कर कई तर गए हैं ।

पारजातु इहु हरि को नाम ॥

हरि का नाम हर वस्तु देने वाला वृत्त है ।

काम धेन हरि हरि गुण गाम ॥

हरि का गुण गाना यह काम धेन गाय है ।

सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥

हरि की कथा सब से अच्छी है ।

नामु सुनत दरद दुख लथा ॥

नाम सुन कर दुःख (पीड़ा) हट जाते हैं ।

नाम की महिमा संत रिद बसै ॥

सन्तों के हृदय अन्दर नाम की महिमा बसती है ।

संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥

संतों के प्रताप से सारे दुःख चले जाते हैं ।

सुखमनी साहिब (६२०)

सटीक

संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥

बड़े भागों से संतों का साथ मिलता है ।

संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥

संतों की सेवा करके नाम याद किया जाता है ।

नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥

नाम के बराबर कुछ नहीं होता ।

नानकगुरमुखिनामुपावैजनुकोइ ॥२॥

गुरु कृपा द्वारा नाम को कोई ही पा सकता है ।

सलोक

बहु सासत्र बहु सिमृती

बहुत शास्त्र बहुत स्मृतियां

पेखे सरब ढढोल

अच्छी तरह खोज कर देखे हैं ।

पूजसि नाही हरि हरे

इसके बराबर कोई नहीं पहुँच सकता

नानक नाम अमोल ॥१॥

हरि नाम अमोलक है ।

असटपदी ॥

जाप ताप गिअन सभि धिअन ॥

जप तप सारे ज्ञान ध्यान करके

खट सामत्र सिमति वखिअन ॥

छः शास्त्र सताई स्मृतियों का व्याख्यान करना ।

जोग अभिआस करम ध्रम फिरिआ ॥

योग अभ्यास और कर्मों धर्मों को करना

सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥

सब कुछ छोड़कर उजाड़ में भ्रमता फिरा ।

अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥

अनेक प्रकार के उपाय किये ।

पुंन दान होमे बहु रतना ॥

पुनन, दान, होम किये बहुत रत्न दान दिये ।

सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥

शरीर को माशा २ आग में लूहा ।

वरत नेम करै बहु भाती ॥

अनेक व्रत, नेम, साधन भी किये ।

नही तुलि राम नाम बीचार ॥

पर हरि नाम के बराबर कोई भी नहीं ।

नानकगुरमुखिनामुजपीऐइकबार ॥१॥

गुरु साथ मिल कर एक बार नाम जपो ।

नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥

नौ खंड पृथ्वी में फिरे बहुत समय जीते रहे ।

महा उदासु तपीसरु थाँवै ॥

बड़ा उदासी बन कर तप वाला हो जाए ।

अगनि माहि होमत परान ॥

प्राणों को आग में फूंक देवे ।

कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥

सोना, हाथी, घोड़े, पृथ्वी दान देवे ।

निउली करम करै बहु आसन ॥

योगियों वाले काम, बहुत आसन भी लगावे ।

जैन मारग संजम अति साधन ॥

जैनियों के रास्ते चलने वाले कठिन काम भी करे ।

निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥

थोड़ा २ तन भी कटावे ।

तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥

तब भी हंगता की मैल नहीं जाती ।

हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥

हरि के नाम बराबर कुछ नहीं है

नानकगुरमुखिनामुजपतगतिपाहि॥२॥

गुरु द्वारा नाम जप कर गति होगी ।

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥

मन कामना तीर्थ ऊपर शरीर छूट जाए

गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥

फिर भी हकार इस मन से दूर नहीं होता ।

सोच करै दिनसु अरु राति ॥

चाहे रात दिन बहुत ही पवित्र होता रहे

मन की मैलु न तन ते जाति ॥

फिर भी मन की मैल तन से नहीं जाती।

इसु देही कउ बहु साधना करै ॥

इस नन के लिए चाहे बहुत यत्न करता रहे ।

सुखमनी साहिब (६२५)

सटीक

मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥

मन से कभी भी पापों की ज़हर नहीं उतरेगी ।

जलि धोवै बहु देह अनीति ॥

इस शरीर को बहुत पानी साथ धोवे ।

सुध कहा होइ काची भीति ॥

फिर बताओ काची दीवार किस प्रकार साफ होवे ।

मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥

हे मन ! हरि नाम की महिमा बड़ी ऊँची है

नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥

बहुत बड़े पापी नाम करके तर गये हैं ।

बहुतु सिआएप जम का भउ बिआपै ॥

बहुत सियानपों साथ यमों का भय आ लगता है ।

अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै ॥

अनेकों उपाय करे पर तृष्णा वाला नहीं रजता ।

भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥

बहुते भेखों में जाने से मन की अग्नि नहीं बुझती ।

कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥

करोड़ों यत्न करे दरगाह में सुख नहीं पाता ।

छूटसि नाही ऊभ पइआल ॥

नीचे ऊपर भाग जाय परन्तु छूट नहीं सकता ।

मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥

मोह करके माया का जाल आ लगता है ।

अवर करतूति सगली जमु डानै ॥

और करतूतों से यम आकर डण्डे लगाता है ।

गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥

हरि भजन बिना एक तिल भी नहीं मानता ।

हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥

हरि नाम जपने से सब दुःख भाग जाते हैं ।

सुखमनी साहिब (६२७)

सटीक

नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥

गुरु जी सदा शीतल स्वभाव में बोलते हैं ।

चारि पदारथ जेको मागै ॥

यदि कोई सारे सुख चाहता है

साध जना की सेवा लागै ॥

तो वह संत सेवा में ततपर हो जाय ।

जेको अपुना दूखु मिटावै ॥

यदि कोई अपना दुःख मिटाना चाहता है

हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥

तो सदा हरि नाम हृदय में गाय ।

जोको अपनी सोभा लोरै ॥

यदि कोई अपनी बड़ाई चाहता है

साध संगि इह हउमै छोरै ॥

तो साध संगत में जाकर हंकार छोड़े ।

जेको जनम मरन ते डरै ॥

जो कोई जन्म मृत्यु से डरता है

साध जना की सरनी परै ॥

तो वह हरि जनों की शरण पड़ जाय ।

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥

जिस हरि जन को ईश्वर के देखने की लोड़ है

नानक ताँकै बलि बलि जासा ॥५॥

मैं उससे बलिहार जाता हूँ ।

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥

सब मनुष्यों से वह बड़ा मनुष्य है

साध संगि जाका मिटै अभिमानु ॥

साध संगत में जिसका हंकार मिट गया हो ।

आपस कउ जो जाएँ नीचा ॥

जो आप को नीचा जानता है

सुखमनी साहिब (६२६)

सटीक

सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥

वह सब से बड़ा गिना जाता है ।

जाका मन होइ सगल की रीना ॥

जिसका मन सब के चरणों की धूल होती है

हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥

उसने सब के मन अन्दर नाम को बसा लिया है ।

मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥

जिसने अपने मन से बुरा ख्याल निकाल दिया है

पेखै सगल सृसटि साजना ॥

उसने सारी दुनिया को साजन देखा है ।

सूख दूख जन सम दसरेता ॥

जो दुःख सुख बराबर समझता है ।

नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥

उसको पाप पुनन नहीं लगता ।

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥

हे दाता ! तेरा नाम गरीबों का धन है ।

निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥

तेरा नाम गरीबों का स्थान है ।

निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥

निमाने को तेरा नाम ही आदर दिवाता है ।

सगल घटा कउ देवहु दानु ॥

तुम सारे जीवों को दान देते हो ।

करन करावन हार सुआमी ॥

तुम स्वयं करन अर करावन वाले हो ।

सगल घटा के अंतरजामी ॥

सब के अन्दर की जानते हो

अपनी गति मिति जानहु आपे ॥

अपनी गति की मर्यादा आप ही जानता है ।

सुखमनी साहिब (६३१)

सटीक

आपन संगि आपि प्रभ राते ॥

तुम अपने साथ आप ही प्रेम करते हो

तुमरी उसतति तुम ते होइ ॥

तुम्हारी उपमा तुम्हारे से ही हो सकती है

नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥

और कोई तुम्हारी उपमा कर ही नहीं सकता ।

सरब धरम महि स्रैसट धरमु ॥

सारे धर्मों से यह धर्म अच्छा है ।

हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥

जो हरि नाम जपना है यह अच्छा काम है ।

सगल कृआ महि ऊतम किरिआ ॥

सब क्रिया से यह क्रिया अच्छी है

साध संगि दुरमति मलु हिरिआ ॥

जो संतों साथ मिलकर बुरी अकल का नाश करे ।

सगल उदम महि उदमु भला ॥

सब यत्नों से यह यत्न अच्छा है ।

हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥

सदा हृदय से हरि नाम को जपना चाहिये ।

सगल बानी महि अमृत बानी ॥

सब बानियों से यह बानी अच्छी है ।

हरिको जसु सुनि रसन बखानी ॥

हरि नाम रसना द्वारा जपना चाहिये ।

सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥

सब स्थानों से यह स्थान अच्छा है ।

नानक जिह घटि वसै हरिनामु ॥८॥३॥

जिसके अन्दर सदा हरि का नाम बसता है ।



सुखमनी साहिब (६३३)

सटीक

सलोक

निरगुनीआर इआनिआ

हे निर्गुनआरे वे समझ जीवा !

सो प्रभु सदा समालि ॥

उस प्रभु को सदा स्मरण कर

जिनि कोआ तिसु चीति रखु

जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया है उसको याद रख

नानक निबही नालि ॥१॥

वह सदा तेरे साथ चलेगा ।

असटपदी

रमईआ के गुन चेति परानी ॥

हे प्राणी ! राम के गुणों को स्मरण कर

कवन मूल ते कवन दसटानी ॥

जिस निकंमे स्थान से तेरी यह बनत बनाई है

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥

जिसने तुझे अच्छी तरह संवार कर शृंगारा है ।

गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥

जिसने तुझे गर्भ की आग से बचा कर रखा ।

बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥

बाल आयु में तुझे दूध प्यारा था वह दिया ।

भरि जोवन भोजन सुख सूध ॥

युवा अवस्था में अच्छे खानेअर सुख की सोभी कराई

विरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥

वृद्ध होने पर घर वालों ने आकर राखी की ।

मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥

बैठे को मुंह में खाना देते हैं ।

सुखमनी साहिब (६३५)

सटीक

इहु निरगुण गुण कछू न बूझै ॥

यह मूर्ख हरि के भले को नहीं समझता ।

बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥

इसको बखशों तो इसकी गति होगी ।

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥

जिसकी कृपा से पृथ्वी पर सुखी बसता है ।

सुत भ्रात मीत बनिता संगि हमहि ॥

पुत्र, भाई, मित्र और स्त्री साथ हंसता है ।

जिह प्रसादि पीवहि शीतल जला ॥

जिसकी मेहर साथ शीतल पानी पीता है ।

सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥

सुख देने वाली पवन और आग अमोलक मिली है ।

जिह प्रसादि भोगहि समि रसा ॥

जिस हरि की मेहर साथ सारे सवाद लेता है ।

सगल समग्री संगि साथि बसा ॥

सारे पदार्थो अर घर वालों के संग बसता है ।

दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥

तुम्हे हाथ, पैर, कंन, आंखें, रसना सुन्दर इन्द्रे दिये हैं

तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥

उसको त्याग कर और किसी के साथ न लग ।

ऐसे दोख मूढ़ अंध बिआपे ॥

इस प्रकार के दोष मूर्ख अन्धों को आ लगते हैं ।

नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥

हैं प्रभु ! इस जीव को नरकों से राखो

आदि अंति जो राखन हारु ॥

जो जन्म से मृत्यु तक राखा है ।

तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥

यह मूर्ख उस से प्रीति नहीं करता ।

जाकी सेवा नवनिधि पावै ॥

जिसकी सेवा से नौ निधियां पाता है

ता सिउ मूढ़ा मनु नही लावै ॥

मूर्ख उस के साथ मन नहीं लगाता ।

जो ठाकुरु सद सदा हजूरै ॥

जो हरि हर समय अंग संग है ।

ताकउ अंधा जानत दूरै ॥

अन्धा जीव उसको दूर जानता है ।

जाकी टहल पावै दरगह मानु ॥

जिसकी सेवा से दरगाह में मान पाता है ।

तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥

व्याकुल जीव उसको भूल बैठता है ।

सदा सदा इहु भूलनहारु ॥

हे दयालु ! यह सदा भूलता आया है

नानक राखन हारु अपारु ॥३॥

तुम बड़े मालिक रखने वाले हो ।

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥

नाम रत्न को छोड़ कर कौडीयों साथ प्रेम करता है ।

साचु छोडि भूठ संगि मचै ॥

सत्त्व को छोड़ कर भूठ साथ खुश होता है ।

जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥

जो पदार्थ चले जाना है टिका रहने वाला मानता है ।

जो होवनु सो दूरि परानै ॥

जो होना है उसको ना होने वाला मानता है ।

छोडि जाइ तिसका समु करै ॥

जो छोड़ जाना है उस के लिए खपता मरता है ।

संगि सहाई तिसु परहरै ॥

जो सहाई सदा साथ है उसको त्याग देता है ।

चंदन लेपु उतारै धोइ ॥

चंदन का लेप धाकर उतार देता है ।

गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥

गधे की प्रीति खाक साथ है ।

अंध कूप महि पतित बिकराल ॥

डरावने अन्धे कूप में गिरता जाता है ।

नानक काढि लेहु प्रभ दहअल ॥४॥

हे प्रभु ! आप निकाल लो ।

करतूति पसू की मानस जाति ॥

है तो मनुष्य परन्तु काम पशुओं के हैं ।

लोक पचारा करै दिनु राति ॥

दिन रात लोगों का दिखावा करता है ।

बाहरि भेख अंतरि मलु माहआ ॥

अंदर माया की मैल है बाहरों सुन्दर है ।

छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥

छुपने का बड़ा यत्न करता है पर छुपता नहीं ।

बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥

बाहर से ज्ञानी ध्यानी स्नानी है ।

अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥

अंदर लोभ कुत्ता चमड़ता है ।

अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥

अंदर गुस्सेकीआगऔर बाहरशरीरऊपरराख लगाईहै

गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥

गले साथ पत्थर है बड़ा समुद्र किस प्रकार तरेगा ।

जाकै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥

जिसके अन्दर आप मालिक बसता है

नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥

वह हरि जन सहज में समाता है ।

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥

अन्धा सुन कर रास्ता किस प्रकार ढूँढे ।

करि गहि लेहु ओड़ि निवहावै ॥

आप हाथ पकड़ो और अन्त तक साथ चलो ।

कहा बुभारत बूझै डोरा ॥

बहरा किस प्रकार बातें बूझ ले

निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥

यदि रात कहें तो वह दिन समझता है ।

कहा बिसन पद गावै गुंग ॥

गूंगा किस प्रकार बिंशपदे (छंद) सुनाये

जतन करै तउ भी सुर भंग ॥

यदि यत्न करे भी तो भी उसका सुर टूट जाता है ।

कह पिंगुल परबत पर भवन ॥

पिंगला किस प्रकार पहाड़ ऊपर सैर को जाए

नही होत ऊहा उसु गवन ॥

उसका तो वहां जाना ही नहीं हो सकता ।

करतार करुणामैदीनु बेनती करै ॥

कृपा करने वाले पास यह प्रार्थना करे

नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥

हे प्रभु ! यह तेरी कृपा से तर सकता है ।

संगि सहाई सु आवै न चीति ॥

जो हरि सहाई है वह याद ही नहीं आता ।

जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥

जो शत्रु है उस साथ प्रीति करता है ।

बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥

बालू के घर अन्दर रहता है ।

अनद केल माइआ रंगि रसै ॥

माया का प्रेम नाश रूप है उस साथ रस लेता है ।

दृढ़ करि मानै मनहि प्रतीति ॥

रेत के घर की पक्की प्रीति मन में मानता है ।

कालु न आवै मुड़े चीति ॥

मूर्ख को मृत्यु तो याद ही नहीं है ।

वैर विरोध काम क्रोध मोह ॥

वैर, विरोध, काम, क्रोध, मोह है ।

भूठ बिकार महा लोभ धोह ॥

भूठ बोलना विकारों में रहना लोभ करना

इआह जुगति बिहाने कई जनम ॥

इन्हीं कामों में कई जन्म व्यतीत हो गए ।

नानक राखि लेहु आपन करिकरम ॥७॥

हे प्रभु ! अपनी मेहर द्वारा बचा लो ।

तू ठाकुर तुम पहि अरदास ॥

तू हमारा गुसाईं हैं तेरे आगे बेतती है ।

जोउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥

यह जीव शरीर सभी तेरी दात है

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥

तुम माता पिता हो हम तुम्हारे बालक हैं ।

तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥

तेरी मेहर अन्दर बड़े सुख हैं ।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥

तेरा अन्त कोई नहीं जानता ।

ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥

हे भगवान ! तुम ऊंचे से ऊंचे हो

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥

सारी दुनिया तुम्हारी शक्ति रस साथ बांधी हुई है ।

तुमते होइ सु आगिआकारी ॥

सारी दुनिया तुम्हारी आज्ञाकार है ।

सुखमनी साहिब (६४५)

सटीक

तुमरो गति मिति तुमही जानी ॥

तुम अपनी गति और मर्यादा आप ही जानते हो ।

नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

मैं दास तो सदा कुर्बान हूँ ।

सलोक ॥

देनहारु प्रभ छोडिकै

जीव देन वाले मालिक को त्याग कर

लागहि आन सुआइ ॥

और स्वादों में रचते हैं ।

नानक कहू न सीझई

उन को कहीं भी सुख नहीं

बिनु नावै पति जाइ ॥१॥

उन की नाम बिना इज्जत जाती है ।

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥

बहुत वस्तुएं लेकर हरि को भुला बैठता है ।

एक बसतु कारनि विखोटि गवावै ॥

यदि कोई चीज न मिले तो मन खोटा कर लेता है ।

एकभी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥

यदि हरि एक भी न देवे और शेष भी खोह ले

तउ मूढ़ा कहु कहा करेइ ॥

तो बताओ कि मूर्ख फिर क्या करेगा ।

जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥

जिस ईश्वर साथ कोई चारा नहीं चलता

ताकउ कीजै सद नमसकारा ॥

उसको सदा नमस्कार करना चाहिए ।

जाकै मनि लागा प्रभु मीठा ॥

जिसके मन को हरि प्यारा लगता है

सरब सुख ताहू मनि वूठा ॥

सारे सुख उस के अन्दर आ बसते हैं ।

जिसुजन अपना हुकमु मनाइआ ॥

जिस सेवक को हरि ने अपनी आज्ञा मनाई है

सरब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥

दुनिया के सारे पदार्थ उसको मिल गए हैं ।

अगनत साहु अपनी दे रासि ॥

शाह बेगिनत पदार्थों की रास देता है

खात पीत बरतै अनद उलासि ॥

जीव खाता पीता आनन्द करता है

अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥

अपनी अमानत में से शाह कुछ ले लेता है

अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥

तो अज्ञानी मन में बड़ा गुस्सा करता है ।

अपनी परतीति आप ही खोवै ॥

उलटा अपनी प्रतीति आप ही खोह लेता है

बहुरि उसका बिस्वासु न होवै ॥

फिर हरि उस पर भरोसा नहीं रखता ।

जिसकी बसतु तिसु आगै राखै ॥

जिसकी वस्तु है उसके आगे रख देवे

प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥

प्रभु की आज्ञा सिर माथे पर माने।

उस ते चउगुन करै निहालु ॥

फिर प्रभु उसको चौगुना प्रसन्न करता है ।

नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥

मालिक तो सदा ही दयालू है ।

सुखमनी साहिब (६४६)

सटीक

अनिक भाति माइआ के हेत ॥

जो बहुत प्रकार के प्यार हैं

सरपर होवत जानु अनेत ॥

समझो कि यह नाश हो जाने वाले हैं ।

विरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥

जो वृक्ष की छांव से प्रेम लगाता है

ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥

वह नाश हो जाती है और मूर्ख पछताता है ।

जो दीसै सो चालनहारु ॥

जो दीरवता है यह सब नाश रूप है

लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥

अन्धा मनुष्य इस से लिपटता जाता है ।

बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥

जो मुसाफिर साथ प्यार लगाता है

ताकउ हाथि न आवै केह ॥

उसके हाथ क्या आता है।

मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥

हे मन ! हरि के नाम की प्रीति सुखदाई है

करि किरपा नानक आपिलए लाई ॥३॥

प्रभु अपनी कृपा करके प्रीति लगाता है।

मिथिआ तनु धनु कुंटबु सबाइआ ॥

यह तन धन परिवार सारा ही भूठा है

मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥

हंकार और माया की इच्छा भी भूठी है।

मिथिआ राज जोवन धन माल ॥

राज, यौवन, धन माल भी भूठा है

मिथिआ काम क्रोध विकराल ॥

काम क्रोध डरावने भी भूठे हैं।

सुखमनी साहिब (६५१)

सटीक

मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥

रथ, हाथी, घोड़े, वस्त्र भी भूठे हैं

मिथिआरंगसंगि माइआपेखि हसता ॥

माया साथ प्रेम करके हंसता है यह भी भूठ है ।

मिथिआ धोह मोह अभिमानु ॥

छल, मोह, हंकार करना भी भूठ है ।

मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥

अपने ऊपर हंकार करना भी भूठ है ।

असथिरु भगति साध की सरन ॥

भक्तों की शरण जाना यह स्थित है ।

नानक जपि जपिजीवै हरि के चरन ॥४॥

मैं हरि के चरणों को जप कर जीता हूँ ।

मिथिआ सवन पर निंदा सुनहि ॥

पराई निन्दा सुनने वाले कान भी भूठे हैं ।

मिथिआ हसत परदरब कउ हिरहि ॥

पराया धन खोहने वाले हाथ भी भूठे हैं ।

मिथिआ नेत्र पेखत परत्रिअ रूपाद ॥

पराई स्त्री को देखने वाली आंखें भी भूठी हैं ।

मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद ॥

और स्वाद लेने वाली जिहवा भी भूठी है ।

मिथिआ चरन पर विकार कउ धावहि ॥

पराये विचारों में जाने वाले पाओं भी भूठे हैं ।

मिथिआ मन पर लोभु लुभावहि ॥

पराये पदार्थों का लोभी मन भी भूठा है ।

मिथिआ तन नही परउपकारा ॥

परोपकार से हीन शरीर भी भूठा है ।

मिथिआ बासु लेत विकारा ॥

विकारों की सुगंधि लेने वाली नासिका भी भूठी हैं ।

बिनु बूभे मिथिआ सभ भए ॥

समझ बिना सारे इन्द्रे झूठे है ।

सफल देह नानक हरिहरिनाम लए ॥५॥

हरि नाम लेने वाला शरीर सफल है ।

बिरथी साकत की आरजा ॥

मूर्ख की सारी आयु ही व्यर्थ है ।

साच बिना कह होवत सूचा ॥

सच्च बिना कभी सूचा नहीं होता ।

बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥

नाम के बिना अन्धा शरीर भी व्यर्थ है ।

मुखि आवत ताकै दुरगंध ॥

उसके मुख में से बुरी दुरगंधि आती है ।

बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥

भजन बिना दिन रात व्यर्थ जाते हैं ।

मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥

वर्षा बिना जिस प्रकार सारी खेती व्यर्थ जाती है ।

गोविंद भजन बिनु बृथे सभ काम ॥

इस प्रकार भजन बिना जीव के सारे काम व्यर्थ ही हैं ।

जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥

जिस प्रकार कंजूस का धन व्यर्थ जाता है ।

धंनि धंनि ते जन

वह मनुष्य धन है ।

जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥

जिसके अन्दर हरि का वास है

नानक ताकै बलि बलि जाउ ॥६॥

मैं उस से कुर्बान जाता हूँ ।

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥

रहिनी और है और कमाता कुछ और है ।

मनि नही प्रीति मुखहु गंढलावत ॥

मन में प्रेम नहीं मुख से प्रेम की गांठे लगाता है ।

जाननहार प्रभू परबीन ॥

प्रभु चतुर है इस के खोट को समझता है ।

बाहरि भेख न काहू भीन ॥

हरि बाहर के भेख करके नहीं रोझता ।

अवर उपदेसै आपि न करै ॥

औरों को उपदेश करता है और आप नहीं कमाता

आवत जावत जनमै मरै ॥

वह आता जाता जन्मता मरता है ।

जिसकै अंतरि बसै निरंकारु ॥

जिसके मन अंदर हरि बसता है ।

तिसकी सीख तरै संसारु ॥

उसकी शिक्षा से जगत तरता है ।

जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥

जो प्रभु को अच्छे लगे हैं उन्होंने उस को जाता है ।

नानक उन जन चरन पराता ॥७॥

मैं उन जनों के चरणों से प्रीति करता हूँ ।

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥

अंदर की जानने वाले पास बेनती करो ।

अपना कीआ आपहि मानै ॥

अपने बनाये भक्तों की आप मानता है ।

आपहि आप आपि करत निबेरा ॥

आपने आप ही निबेड़ा करता है ।

किसै दुरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥

किसी को नेड़े किसी को दूर जनाता है ।

उपाव सिआनप सगल ते रहता ॥

यत्न और चतुरता सब से रहित है ।

सुखमनी साहिब (६५७)

सटीक

सभु किछु जानै आतम की रहत ॥

मन की रहत आदि वह सब कुछ जानता है ।

जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥

जिसको अच्छा समझता है उसको लड़ लगा लेता है

थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥

स्थानों और स्थानों वालों में मिला जुला है ।

सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥

वह उसका सेवक है जिस ऊपर उसकी मेहरबानी हो।

निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥

वह सेवक पल पल ईश्वर को जपता है ।

सलोक ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह

काम, क्रोध, लोभ, मोह

बिनसि जाइ अहंमेव ॥

और हंकार यह सारे विकार नाश हो जायें ।

नानक प्रभ सरणागती

हम आप की शरण आये हैं

करि प्रसादु गुरुदेव ॥१॥

हे गुरुदेव ! कृपा कर ।

असटपदी

जिह प्रसादि छतीह अमृत खाहि ॥

जिसकी कृपा से बड़ा स्वादी अन्न खाता है

तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥

उस प्रभु को मन में याद रख ।

जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥

जिसकी कृपा से शरीर को सुगंधि लगाता हैं

सुखमनी साहिब (६५६)

सटीक

तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥

उसको याद करके परम गति पा लेगा ।

जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥

जिस की कृपा से मंदिरों में सुख से बसता है

तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥

उसको मन में स्मरण कर ।

जिह प्रसादि गृह संगि सुख बसना ॥

जिसकी कृपा से घर में सुखी बसता है

आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥

उसको आठों पहर जिहवा द्वारा याद रख ।

जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥

जिसकी मेहर से आनंद मानता है ।

नानकसदाधिआईऐधिआवनजोग ॥१॥

उस ध्याने योग को सदा ध्याना चाहिये ।

सुखमनी साहिब (६६०)

सटीक

जिह प्रसादि पाट पटंबर हठावहि ॥

जिसकी कृपा से अच्छे वस्त्र पहनता है ।

तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥

उसको छोड़कर और तरफ खोजता है ।

जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥

जिसकी कृपा से सेजा ऊपर सुखी सोता है ।

मन आठ पहर ताका जसु गावीजै ॥

हे मन ! आठों पहर उसका यश गा ।

जिह प्रसादि तुझु समु कोऊ मानै ॥

जिसकी कृपा से हर कोई तुझे मानता है ।

मुखि ताको जसु रसन बखानै ॥

जिहवा द्वारा उसका यश गाया कर ।

जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥

जिसकी कृपा से तेरा धर्म बना रहता है ।

मन सदा धिआइ केवल पारब्रह्म ॥

हे मन ! उस हरि को सदा स्मरण कर ।

प्रभ जो जपत दरगह मानु पावहि ॥

प्रभु को जपकर दरगाह में इज्जत पावेगा ।

नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥

इज्जत से घर को जाएंगा ।

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥

जिसकी कृपा से निरोग शरीर स्वर्ण जैसा है ।

लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥

उस प्रेमी राम से चित्त की वृत्ति को लगा ।

जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥

जिसकी मेहर से तेरा पर्दा छुपा रहे ।

मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥

हे मन ! हरि का यश कर, तुझे सुख मिलेगा ।

जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥

जिसकी कृपा से सारे औगुन छुपे रहते हैं ।

मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ताके ॥

हे मन ! उस प्रभु की शरण पड़ जा ।

जिह प्रसादि तुझु को न पहुँचै ॥

जिसकी मेहर से शत्रु दुःख नहीं दे सकता ।

मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊँचे ॥

हे मन ! उस ऊँचे प्रभु को स्वास २ स्मरण कर ।

जिह प्रसादि पाई दुरलभ देह ॥

जिसकी कृपा से अमोलक शरीर पाया है ।

नानक ताकी भगति करेह ॥३॥

मना ! उस प्रभु की भक्ति कर

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥

जिसकी कृपा से भूषण पाये हैं ।

सुखमनी साहिब (६६३)

सटीक

मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥

उसको जपने से आलस क्यों करता है ।

जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥

जिसकी कृपा से घोड़े, हाथियों ऊपर चढ़ता है ।

मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥

मन ! उस हरि को कभी न भुलाना

जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥

जिसकी कृपा से बाग, मुलक और धन मिले हैं ।

राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥

मना ! उस हरि को मन में परो ले ।

जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥

मना ! जिसने तेरी सुन्दरता रची है

ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥

ऊठता बैठता उसको स्मरण कर ।

तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥

जो एक अलख है उसको स्मरण कर ।

ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥

जो यहां वहां तेरी रक्षा करेगा ।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान ॥

जिसकी कृपा से पुन्न दान करता है

मन आठ पहर करि तिसका धिआन ॥

मना ! आठों पहर उस हरि का ध्यान कर ।

जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥

जिसकी कृपा से अच्छे कामों का व्यापारी हैं ।

तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥

मना ! उस प्रभु का श्वास २ स्मरण कर ।

जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूप ॥

जिसकी कृपा से तेरा सुन्दर रूप है ।

सुखमनी साहिब (६६५)

सटीक

सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥

उस सुन्दर प्रभु को याद कर

जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥

जिसकी कृपा से तेरी सुन्दर जाति है ।

सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥

उस प्रभु को दिन रात याद कर

जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥

जिसकी मेहर से तेरी इज्जत रहती है ।

गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥

गुरु की कृपा द्वारा उसका यश कर ।

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥

जिसकी कृपा से कानों द्वारा राग सुनता हैं ।

जिह प्रसादि पेखहि विसमाद ॥

जिसकी कृपा से सुन्दर चीजों को देखता हैं ।

जिह प्रसादि बोलहि अमृत रसना ॥

जिसकी कृपा से जिहवा से मीठे बोल बोलता हैं ।

जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥

जिसकी कृपा से सहजे ही सुखी बसता हैं ।

जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥

जिसकी मेहर से तेरे हाथ पाओं काम करते हैं ।

जिह प्रसादि संपूरन फलहि ॥

जिसकी कृपा से सम्पूर्ण फलों साथ फला हैं ।

जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥

जिसकी कृपा से परमगति पाता हैं ।

जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥

जिसकी कृपा से सुख में टिकता हैं ।

ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥

ऐसा प्रभु त्याग कर और कहां लगते हो ।

सुखमनी साहिब (६६७)

सटीक

गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥

गुरु कृपा द्वारा सदा जागता रह ।

जिह प्रसादि तू प्रगटु संसारि ॥

जिसकी कृपा से जगत में प्रकट हुआ हैं ।

तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥

उस प्रभु को मन से कभी न भूल ।

जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥

जिसकी कृपा से तेरा प्रताप बना है ।

रे मन मूढ़ तू ताकउ जापु ॥

हे मूर्ख ! तुम उसको स्मरण करो

जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥

जिसकी कृपा से तेरे काम संवरते हैं ।

तिसहि जानु मन सदा हजूर ॥

मना ! उसको आपने निकट जान

जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥

जिसकी कृपा से तूं सच को पा लेगा ।

रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥

मना ! उसके साथ रच जा

जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥

जिसकी कृपा से सब की गति होती है ।

नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥

जीव सदा उसका जाप जप जप कर सुख पाएगा

आपि जपाए जपै सो नाउ ॥

जिसको आप जपाता है वह उसका नाम जपता है

आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥

जिसको आप जपाता है वह ही गुण गाता है ।

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥

हरि की कृपा से जीव को प्रकाश होता है ।

सुखमनी साहिब (६६६)

सटीक

प्रभू दइआ ते कमल विगासु ॥

हरि की दया से मन का कंवल खिड़ता है ।

प्रभ सु प्रसन्न बसै मनि सोइ ॥

जिस ऊपर खुश होता है उसके मन में बसता है ।

प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥

हरि की कृपा से बुद्धि ऊंची हो जाती है ।

सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥

हे हरि ! तेरी दया में सारे खजाने हैं ।

आपहु कछु न किनहू लइआ ॥

आप किसी ने भी कुछ लिया नहीं है ।

जितु जितुलावहु तितु लगहि हरिनाथ ॥

हे हरि ! जहां आप लगाते हो वहां हम लगते हैं ।

नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

इन जीवों के वश कुछ नहीं है ।

सलोक ८

अगम अगाधि

उस हरि के निकट कोई नहीं जा सकता

पारब्रह्म सुख ॥

वह वेअंत और परे रहने वाला है ।

जो जो कहै सु मुकता होइ ॥

जो उसका नाम कहता है वह मुक्त हो जाता है ।

सुनि मीता नानकु विनवन्ता ॥

मैं बेनती करता हूँ ।

साध जना की अचरज कथा ॥१॥

हरि जपने वाले संतों की कथा आश्चर्य है ।

सुखमनी साहिब (६७१)

सटीक

असटपदी

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥

संतों के सङ्ग से मुख उजला होता है ।

साध संगि मलु सगली खोत ॥

संतों के सङ्ग से सारी मैल नाश हो जाती है ।

साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥

संतों के सङ्ग से हंकार नाश हो जाता है ।

साध कै संगि प्रगटै सु गिआनु ॥

संतों के सङ्ग से ज्ञान प्रकट होता है ।

साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥

संतों के सङ्ग से हरि निकट जाना जाता है ।

साध संगि सभु होत निवेरा ॥

संतों के सङ्ग से सारा निवेड़ा हो जाता है ।

साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥

संतों के सङ्ग से नाम रत्न मिल जाता है ।

साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥

संतों के सङ्ग से एक ऊपर ही यत्न रह जाता है ।

साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥

कौन जीव संतों की बड़ाई कर सकता है ।

नानकसाधकीसोभाप्रभमाहिसमानी ॥१॥

संतों की सिफ्त हरि में ही समाई हुई है ।

साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥

संतों के संग करके ईश्वर मिल जाता है ।

साध कै संगि सदा परफुलै ॥

संतों के संग करके सदा फूला फला रहता है ।

साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥

संतों के संग करके पांचों विषय वश में आ जाते हैं ।

सुखमनी साहिब (६७३)

सटीक

साध संगि अमृत रसु भुं चा ॥

संतों के संग करके हरि के रस को मानता है ।

साध संगि होइ सभ की रेन ॥

संतों के संग करके सब की चरण धूल हो जाता है ।

साध कै संगि मनोहर बैन ॥

संतों के सङ्ग करके मीठे बोल बोलता है ।

साध कै संगि न कतहूं धावै ॥

संतों के सङ्ग करके वाशना कहीं नहीं भागती ।

साध संगि असथिति मनु पावै ॥

संतों के सङ्ग करके मन आराम पाता है ।

साध कै संगि माइआ ते भिन ॥

संतों के सङ्ग करके माया से भिन्न रहता है ।

साध संगि नानक प्रभ सु प्रसन्न ॥२॥

संतों के सङ्ग करके हरि प्रसन्न होता है ।

साध संगि दुसमन सभि मीत ॥

संतों का साथ करके शत्रु मित्र बन जाते हैं ।

साधू कै संगि महा पुनीत ॥

संतों का साथ करके सदा निर्मल होता है ।

साध संगि किस सिउ नही बैरु ॥

संतों का साथ करके किसी साथ शत्रुता नहीं होती ।

साध कै संगि न बीगा पैरु ॥

सन्तों का साथ करके बुरे रास्ते नहीं जाता ।

साध कै संगि नाही को मंदा ॥

संतों का साथ करके कोई बुरा नहीं दीखता ।

साध संगि जाने परमानंदा ॥

संतों का साथ करके परमानंद को जान लेता है ।

साध कै संगि नाही हउ तापु ॥

संतों का साथ करके हज्जता और ताप नहीं होता ।

सुखमनी साहिब (६७५)

सटीक

साध कै संगि तजै सभु आपु ॥

संतों का साथ करके वैर भाव छोड़ देता है ।

आपे जानै साध बडाई ॥

प्रभु संतों की बड़ाई आप ही समझता है ।

नानक साध प्रभू बनिआई ॥ ॥३॥

संतों की प्रभु से प्रीति बन आई है ।

साध कै संगि न कबहू धावै ॥

संतों का साथ करके मन कभी नहीं दौड़ता ।

साध कै संगि सदा सुख पावै ॥

संतों का साथ करके सदा सुख पाता है ।

साध संगि बसतु अगोचर लहै ॥

संतों के साथ से अलभ वस्तु मिल जाती है ।

साधू कै संगि अजरु सहै ॥

संतों का साथ करके अजर को जर लेता है ।

साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥

संतों का साथ करके ऊँचे स्थान पर जा बसता है ।

साधू कै संगि महलि पहुँचै ॥

सन्तों का साथ करके असल रूप को मिल पड़ता है ।

साध कै संगि दृढ़ै सभि धरम ॥

संतों का साथ करके धर्म को पक्का कर लेता है ।

साध कै संगि केवल पारब्रह्म ॥

संतों का साथ करके एक प्रभु को ही जानता है ।

साध कै संगि पाए नाम निधान ॥

संतों का साथ करके नाम खजाने को पा लेता है ।

नानक साधू कै कुरबान ॥४॥

प्रभु संतों पर कुर्बान होता है ।

साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥

संतों का साथ करके सब कुलों को तार लेता है ।

सुखमनी साहिब (६७७)

सटीक

साधसंगि साजन मीतकुटंब निसतारै ॥

संतों का साथ करके साजन मित्र कुटंब को तारता है

साधू कै संगि सो धनु पावै ॥

संतों का साथ करके नाम धन को पा लेता है ।

जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥

जिस धन से हर कोई प्रसन्न होता है ।

साधसंगि धरमराइ करे सेवा ॥

संतों का साथ करके धर्म राजा सेवा करता है ।

साधकै संगि सोभा सुर देवा ॥

संतों का साथ करके इन्द्र बड़ाई करता है ।

साधू कै संगि पाप पलाइन ॥

संतों का साथ करके पाप नाश हो जाते हैं ।

साधसंगि अमृत गुन गाइन ॥

संतों का साथ करके मीठे गुण गाता है ।

साध कै संगि सब थानि गंमि ॥

सन्तों का साथ करके सब स्थानों में पहुँच जाता है

नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥५॥

सन्तों का साथ करके जन्म सफल हो जाता है ।

साध कै संगि नही कछु घाल ॥

सन्तों का साथ करके कठिन काम नहीं करना पड़ता ।

दरसनु भेटत होत निहाल ॥

दर्शन करते ही बहुत प्रसन्न होता है ।

साध कै संगि कलूखत हरै ॥

संतों का साथ करके पाप नष्ट हो जाते हैं ।

साध कै संगि नरक परहरै ॥

सन्तों का साथ करके नरकों को छोड़ देता है ।

साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥

सन्तों का साथ करके यहां वहां सुखी रहता है ।

सुखमनी साहिब (६७६)

सटीक

साध संगि बिछुरत हरि मेला ॥

सन्तों का साथ करके बिछड़ा हुआ मिल पड़ता है।

जो इछै सोई फलु पावै ॥

जो चाहे फल प्राप्त कर लेता है।

साध कै संगि न बिरथा जावै ॥

सन्तों का सङ्ग व्यर्थ नहीं जाता।

पारब्रह्म साध रिद बसै ॥

ईश्वर सन्तों के मन में बसता है।

नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥

सन्तों के रसदायक बोल सुनके तर जाता है।

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥

सन्तों का साथ करके हरि का नाम सुनो।

साध संगि हरि के गुन गाउ ॥

सन्तों का साथ करके हरि के गुणों को गाओ।

साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥

सन्तों का साथ करके हरि मन से नहीं भूलता ।

साध संगि सर पर निसतरै ॥

संतों का साथ करके अवश्य तर जाता है ।

साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥

सन्तों का साथ करके मालिक प्यारा लगता है ।

साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥

संतों का साथ करके सब के हृदय की जानता है ।

साध संगि भए आगिआकारी ॥

संतों का साथ करके आज्ञा मानने वाले हो गये हैं ।

साध संगि गति भई हमारी ॥

संतों का साथ करके अच्छी गति हो गई है ।

साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥

संतों का साथ करके रोग नाश हो गये हैं ।

सुखमनी साहिव (६५१)

सटीक

नानक साध भेटे संजोग ॥७॥

संत पिछले मिलाप करके ही आ मिलते हैं ।

साध की महिमा वेद न जानहि ॥

संतों की बड़ाई वेद नहीं जान सकता ।

जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥

जितना सुनता है उतना कह छोड़ता है ।

साध की उपमा तिहु गुन ते दूरि ॥

संतों की बड़ाई तीनों गुणों से परे है ।

साध की उपमा रही भरपूरि ॥

संतों की बड़ाई सारे भरपूर है ।

साध की सोभा का नाही अंत ॥

संतों की बड़ाई का कोई अन्त नहीं ।

साध की सोभा सदा बेअंत ॥

संतों की बड़ाई सदा बिअंत है ।

साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥

संतों की बड़ाई ऊंची से ऊंची है ।

साध की सोभा मूच ते मूची ॥

संतों की बड़ाई बहुत से बहुत है ।

साध की सोभा साध बनिआई ॥

संतों की बड़ाई संत को ही बन आई है ।

नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥

परमेश्वर और संत में कोई भेद नहीं ।

सलोक ॥ ८

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥

मन और मुख में वह साचा ही ईश्वर है ।

अवरु न पेखै एकसु विनु कोइ ॥

एक हरि विना और किसी को ना देखे ।

सुखमनी साहिब (६८३)

सटीक

नानकइहलछएब्रहमगिआनीहोइ ॥१॥

असल ब्रह्मज्ञानी के यह चिन्ह हैं ।

असटपदी ॥

ब्रहमगिआनी सदा निरलेप ॥

हरि का प्यारा सदा माया से अलग है ।

जैसे जल महि कमल अलेप ॥

जिस प्रकार पानी में कंबल फूल अलग रहता है ।

ब्रहमगिआनी सदा निरदोख ॥

हरि का प्यारा दोषों से निरारा है ।

जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥

जिस प्रकार सूर्य सब को सुकाता है ।

ब्रहमगिआनी कै दृसटि समानि ॥

हरि के प्यारे की दृष्टि बराबर है ।

जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥

जिसप्रकार गरीब और राजेको एक जैसी वायु लगती है

ब्रह्मगिआनी कै धीरजु एक ॥

हरि के प्यारे को एक ऊपर पक्का भरोसा है ।

जिउबसुधाकोऊ खोदे कोऊ चंदन लेप ॥

जिसप्रकारपृथ्वीकोकोईखोदेऔरकोईचंदनकापोचापाए

ब्रह्मगिआनी का इहै गुनाउ ॥

हरि के प्यारे में यह बड़ा गुण है ।

नानक जिउपावक का सहज सुभाउ ॥१॥

जिस प्रकार आग का सहज सुभा होता है

ब्रह्मगिआनी निरमल ते निरमला ॥

हरि का प्यारा साफ से साफ है ।

जैसे मैलु न लागै जला ॥

जिस प्रकार पानी को मैल नहीं लग सकती ।

सुखमनी साहिब (६८५)

सटीक

ब्रह्मगिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥

हरि के प्यारे में प्रकाश है ।

जैसे धरि ऊपरि आकासु ॥

जिस प्रकार पृथ्वी और आकाश है

ब्रह्मगिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥

हरि के प्यारे को शत्रु मित्र बराबर हैं ।

ब्रह्मगिआनी कै नाही अभिमान ॥

हरि के प्यारे को हंकार नहीं होता ।

ब्रह्मगिआनी ऊच ते ऊचा ॥

हरि का प्यारा ऊंचे से ऊंचा है ।

मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥

वैसे सब नीचों से नीचा है ।

ब्रह्मगिआनी से जन भए ॥

हरि के प्यारे वही होते हैं

नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥

जिन ऊपर हरि स्वयं कृपा करता है ।

ब्रह्मगिआनी सगल की रीना ॥

हरि का प्यारा सब की धूल है ।

आत्म रसु ब्रह्म गिआनी चीना ॥

हरि के प्यारे ने आत्म रस को बूझ लिया है ।

ब्रह्मगिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥

हरि के प्यारे की सब ऊपर कृपा है ।

ब्रह्मगिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥

हरि के प्यारे से बुरा हो ही नहीं सकता ।

ब्रह्मगिआनी सदा समदरसी ॥

हरि का प्यारा एक बराबर देखता है ।

ब्रह्मगिआनी की दसटि अमृतुवरसी ॥

हरि के प्यारे की दृष्टि में अमृत बसता है ।

सुखमनी साहिब (६८७)

सटीक

ब्रह्मगिआनी बंधन ते मुक्ता ॥

हरि का प्यारा बन्धनों से रहित है ।

ब्रह्मगिआनी की निरमल जुगता ॥

हरि के प्यारे की जुगति साफ है ।

ब्रह्मगिआनी का भोजनु गिआन ॥

हरि के प्यारे का खाना ज्ञान का है ।

नानकब्रह्मगिआनीकाब्रह्मधिआनु॥३॥

हरि के प्यारे का परमेश्वर में ध्यान रहता है ।

ब्रह्मगिआनी एक ऊपरि आस ॥

हरि के प्यारे को एक ईश्वर ऊपर आशा है ।

ब्रह्मगिआनी का नही विनास ॥

हरि के प्यारे का नाश नहीं होता ।

ब्रह्मगिआनी कै गरीबी समाहा ॥

हरि प्यारे के मन में गरीबी रहती है ।

ब्रह्मगिआनी परउपकार उमाहा ॥

हरि प्यारे को परोपकार में खुशी होती है ।

ब्रह्मगिआनी कै नाही धंधा ॥

हरि प्यारे को कोई बगार नहीं होती ।

ब्रह्मगिआनी ले धावतु बंधा ॥

हरि प्यारा दौड़ते मन को रोक लेता है ।

ब्रह्मगिआनी कै होइ सु भला ॥

हरि प्यारे को जो होता है अच्छा लगता है ।

ब्रह्मगिआनी सुफल फला ॥

हरि प्यारा अच्छे फलों से फलता है ।

ब्रह्मगिआनी संगि सगल उधारु ॥

हरि प्यारे साथ मिल कर सारे तर जाते हैं ।

नानकब्रह्मगिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥

हरि प्यारे को सारा जगत जयता है ।

सुखमनी साहिब (६८६)

सटीक

ब्रह्मगिआनी कै एकै रंग ॥

हरि प्यारा एक आनंद में रहता है ।

ब्रह्मगिआनी कै बसै प्रभु संग ॥

हरि प्यारे के साथ ईश्वर बसता है ।

ब्रह्मगिआनी कै नामु आधारु ॥

हरि प्यारे को एक नाम का आश्रय है ।

ब्रह्मगिआनी कै नामु परवारु ॥

हरि प्यारे का एक नाम ही परिवार है ।

ब्रह्मगिआनी सदा सद जागत ॥

हरि प्यारा सदा ही जागता है ।

ब्रह्मगिआनी अहंबुधि तिआगत ॥

हरि प्यारा हंकार वाली बुद्धि त्याग देता है ।

ब्रह्मगिआनी कै मनि परमानंद ॥

हरि प्यारे के अन्दर पूरा आनंद बसता है ।

सुखमनी साहिब (६६०)

सटीक

ब्रह्मगिआनी कै घरि सदा अनंद ॥

हरि प्यारे के हृदय अन्दर सदा खुशी है ।

ब्रह्मगिआनी सुख सहज निवास ॥

हरि प्यारे का निवास सहज सुख में है ।

नानकब्रह्मगिआनीकानहीबिनास॥५॥

हरि प्यारे का नाश कभी नहीं होता ।

ब्रह्मगिआनी ब्रह्म का बैता ॥

हरि प्यारा ईश्वर के जानने वाला है ।

ब्रह्मगिआनी एक संगि हेता ॥

हरि प्यारे का एक साथ प्यार होता है ।

ब्रह्मगिआनी कै होइ अचिंत ॥

हरि प्यारे के मन में बेफिकरी होती है ।

ब्रह्मगिआनी का निरमल मंत ॥

हरि प्यारे का मन्त्र निर्मल होता है ।

सुखमनी साहिब (६६१)

सटीक

ब्रह्मगिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥

हरि प्यारा वह है जिसको प्रभु आप बनाये ।

ब्रह्मगिआनी का बड परताप ॥

हरि प्यारे का प्रताप बड़ा भारा है ।

ब्रह्मगिआनी का दरसबडभागी पाईऐ ॥

हरि प्यारे का दीदार बड़े भागों से पाया जाता है ।

ब्रह्मगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥

हरि प्यारे से सदा बलहार जाईए ।

ब्रह्मगिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥

हरि प्यारे को शिवजी आदि ढूँडते फिरते हैं ।

नानकब्रह्मगिआनीआपि परमेसुर ॥६॥

हरि प्यारा तो स्वयं ही ईश्वर हैं ।

ब्रह्मगिआनी की कीमति नाहि ॥

हरि प्यारे की कीमति नहीं पाई जाती ।

सुखमनी साहिब (६६२)

सटीक

ब्रह्मगिआनी कै सगल मन माहि ॥

हरि प्यारे के मन अन्दर सब कुछ है ।

ब्रह्मगिआनी का कउन जानै भेदु ॥

हरि प्यारे का भेद कौन जान सकता है ।

ब्रह्मगिआनी कउ सदा अदेसु ॥

हरि प्यारे को सदा मस्तक निवाना चाहिये ।

ब्रह्मगिआनी का कथिआन जाइ अथरुयरु

हरि प्यारे का आधा अक्षर भी नहीं कहा जाता ।

ब्रह्मगिआनी सब का ठाकुरु ॥

हरि प्यारा सब का मालिक है ।

ब्रह्मगिआनी की मिति कउन बखानै ॥

हरि प्यारे की मर्यादा कौन कह सकता है ।

ब्रह्मगिआनी की गति ब्रह्मगिआनी जानै

हरि प्यारे की गति हरि प्यारा ही जानता है ।

ब्रह्मगिआनी का अंतु न पारु ॥

हरि प्यारे के पार उरार का अन्त नहीं ।

नानक ब्रह्मगिआनी कउसदानमसकारु ७

हरि प्यारे को सदा नमस्कार है ।

ब्रह्मगिआनी सभ सृसटि का करता ॥

हरि प्यारा सारी दुनिया का कर्ता है ।

ब्रह्मगिआनी सद जीवै नही मरता ॥

हरि प्यारा सदा जीता है वह मरता नहीं ।

ब्रह्मगिआनी मुक्ति जुगति

हरि प्यारा मुक्ति युक्ति और

जीअ का दाता ॥

जीवों का दाता है ।

ब्रह्मगिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥

हरि प्यारा पूरा फल देने वाला है ।

ब्रह्मगिआनी अनाथ का नाथु ॥

हरि प्यारा सब गरीबों का मालिक है ।

ब्रह्मगिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥

हरि प्यारे का सब के सिर पर हाथ है ।

ब्रह्मगिआनी का सगल अकारु ॥

हरि प्यारे का रूप यह सारा संसार है ।

ब्रह्मगिआनी आपि निरंकारु ॥

हरि प्यारा आप ही निरंकार है ।

ब्रह्मगिआनी की सोभा

हरि प्यारे की बड़ाई

ब्रह्मगिआनी बनी ॥

हरि प्यारे को ही शोभा देती है ।

नानकब्रह्मगिआनी सरबकाधनी ॥८८॥

हरि प्यारा सब का धनि है ।

सुखमनी साहिब (६६५)

सटीक

सलोक ॥

उरिधारै जो अंतरि नामु ॥

जो मन अन्दर नाम को धारे

सब मै पेखै भगवानु ॥

और सब में परमेश्वर को देखे ।

निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥

छिन छिन में परमेश्वर को बंदना करे ।

नानक ओहु अपरसु

वह अपरस कहाता है ।

सगल निसतारै ॥१॥

और सब को तारने वाला है ।

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥

जिसकी जिहवा को भूठ नहीं छूहता ।

मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥

परमेश्वर के दर्शन की मन में प्रीति है ।

पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥

पराई स्त्री को आंखों से नहीं देखता ।

साध की टहल संत संगि हेत ॥

संतों की सेवा प्यार से करता है ।

करन न सुनै काहू की निंदा ॥

कानों द्वारा किसी की निन्दा नहीं सुनता ।

सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥

सब से अपने आप को नीचा जानता है ।

सुखमनी साहिब (६६७)

सटीक

गुर प्रसादि विखिआ परहरै ॥

गुरु कृपा द्वारा विषय विकारों को त्यागता है ।

मन की वासना मन ते टरै ॥

मन की वाशना मन से रोकता है ।

इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥

इन्द्रियां जीत कर पांचों दोषों से रहत है ।

नानक कोटि मधे को ऐसाअपरस ॥१॥

करोड़ों में से कोई ऐसा अपरस कहाता है ।

वैसनो सो जिसु ऊपरि सु प्रसंन ॥

वैशनो वह है जिस ऊपर ईश्वर खुश हो ।

विसन की माइआ ते होइ भिन ॥

ईश्वर की माया से भिन्न है ।

करम करत होवै निहकरम ॥

कर्म कर्ता हुआ निहकर्मों है ।

तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥

उस वैशनो का धर्म बड़ा साफ है ।

काहू फल की इच्छा नहीं बाछै ॥

किसी फल की इच्छा नहीं करता ।

केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥

एक हरि की भक्ति और यश गाने ओर लग जाता है

मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥

मन तन अन्दर ईश्वर की याद है ।

सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥

सब ऊपर कृपालू है ।

आपि दृढ़ै अवरह नामु जपावै ॥

नाम को आप पक्का करे और दूसरों को भी कराये

नानक ओह बैसनो परमगति पावै ॥२॥

वह वैशनो परमगति पाता है ।

सखमनी साहिब (६६६)

सतीक

भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥

भगवती वह है जिसको ईश्वर का रंग लगा है ।

सगल तिआगै दुसट का संगु ॥

सार दुष्टों का संग त्यागता है ।

मन ते बिनसै सगला भरमु ॥

उस के मन से सारा भ्रम दूर हो गया है ।

करि पूजै सगल पारब्रह्मु ॥

सब को ईश्वर जान कर पूजता है ।

साध संगि पापा मलु खोवै ॥

संतों के संग करके पापों की मैल दूर करता है ।

तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥

उस भक्त की अक्ल उत्तम होती है ।

भगवंत की टहल करै नितनीति ॥

नित्य २ ईश्वर की सेवा करता है ।

मनु तनु अरपै विसन परीति ॥

मन तन हरि की सेवा में अर्पन कर देता है ।

हरि के चरन हिरदै बसावै ॥

हरि के चरण हृदय में बसाये ।

नानकऐसा भगउती भगवंतकउपावै॥३॥

ऐसा भक्त प्रभु को पा लेता है ।

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥

वही पंडित है जो मन को समझाए ।

राम नामु आतम महि सोधै ॥

प्रभु के नाम को अपने मन में विचारे ।

राम नाम सारु रसु पीवै॥

राम के नाम का निचोड़ (तत) रस पीता है ।

उसु पंडित कै उपदेशि जगु जीवै ॥

उस पंडित के उपदेश से जग जीता है ।

सुखमनी साहिब (७०१)

सटीक

हरि की कथा हिरदै बसावै ॥

हरि की कथा हृदय में बसाता है ।

सो पंडित फिरि जोनि न आवै ॥

वह पंडित जूनियों में नहीं फंसता ।

वेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥

वेद, पुराण, स्मृतियों का आदि समझ ले ।

सूखम महि जाने असथूठु ॥

छोटे ईश्वर में बड़े जगत को समझे ।

बहु वरना कउ दे उपदेसु ॥

चारों वर्णों को एक जैसा उपदेश देवे ।

नानक उस पंडित कउ सदाअदेसु ॥४॥

उस पंडित को सदा नमस्कार करते हैं ।

बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥

सब मंत्रों का बीज एक ज्ञान है ।

सुखमनी साहिब (७०२)

सटीक

बहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥

चार वर्णों में से कोई जपे ।

जो जो जपै तिसकी गति होइ ॥

जो जपेगा उसकी मुक्ति होवेगी ।

साध संगि पावै जनु कोइ ॥

संतों के मेल से कोई ही प्रेमी पाता है ।

करि किरपा अंतरि उरधारै ॥

जिस ऊपर कृपा करे वह नाम को धारता है ।

पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥

वह पशुओं, प्रेतों, मूर्खों, पत्थरों को तारता है ।

सरब रोग का अउखधु नामु ॥

सब रोगों का दारु एक नाम है ।

कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥

मंगल मई गुणों को गाना सुख रूप है ।

सुखमनी साहिब (७०३)

सटीक

काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥

धर्म किसी युक्ति से कहीं भी नहीं मिलता ।

नानक तिसु मिलै जिसु लिखिा'

उसको मिलता है

धुरि करमि ॥५॥

जिसके ऊपर धुर से कृपा हो ।

जिसकै मनि पारब्रह्म का निवासु ॥

जिसके मन में प्रभु का निवास है।

तिसका नामु सति राम दासु ॥

उसका नाम ठीक करके रामदास है ।

आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥

आत्म रूप राम उसको दृष्टि आ गया है ।

दास दसंतन भाइ तिनि पाइआ ॥

दासों के प्यारे से उसने हरि को ढूंढा है ।

सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥

उस हरि को सदा निकट से निकट जान ।

सो दासु दरगह परवानु ॥

वही सेवक दरगाह में मान पाएगा ।

अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥

अपने सेवक ऊपर आप ही कृपा करता है ।

तिसु दास कउ सभ सोभी परै ॥

उस दास को सारी सूझ पड़ जाती है ।

सगल संगि आतम उदासु ॥

सारे पदार्थों से मन को भिन रखता है ।

ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥

ऐसी श्रुति वाला राम दास कहा जाता है ।

प्रभकी आगिआ आतम हितावै ॥

जिसको मालिक की आज्ञा अच्छी लगती है ।

सुखमनी साहिब (७०५)

सटीक

जीवन मुक्ति सोऊ कहावै ॥

वह जीता ही मुक्त हुआ कहाता है ।

तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥

उसको आनंद और शोक एक जैसा है ।

सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥

उसको सदा आनंद है वह आनंद से भिन्न नहीं होता

तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥

उसको मिट्टी और स्वर्ण एक जैसा है ।

तैसा अमृत तैसी बिखु खाटी ॥

उसको अमृत और विष एक जैसी है ।

तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥

मान और अभिमान होना उसको एक है ।

तैसा रंकु तैसा राजानु ॥

उसको गरीब और धनि एक है ।

सलोक ॥

उसतति करहि अनेक जन

बहुत ही मनुष्य उसकी स्तुति करते हैं

अंतु न पारा वार ॥

जिन का कोई अन्त नहीं है

नानक रचना प्रभि रची

मालिक ने इस प्रकार की बनत बनाई है

बहु विधि अनिकप्रकार ॥१॥

जिसका कोई हिसाब नहीं है ।

असटपदी ॥ १०

कई कोटि होइ पूजारी ॥

कई कोटि आचार विउहारी ॥

वेअन्त कर्मों धर्मों के विहारी हैं ।

कई कोटि भए तीरथ वासी ॥

वेअन्त तीर्थों ऊपर निवास करने वाले हैं ।

कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥

अनेक जंगलों में उदास फिरते हैं ।

कई कोटि वेद के स्रोते ॥

अनेक वेदों को श्रवण करने वाले हैं ।

कई कोटि तपीसुर होते ॥

अनेक बड़े बड़े तप करने वाले हैं ।

कई कोटि आत्म धिआनु धारहि ॥

अनेक आत्म ध्यान के धारने वाले हैं ।

कई कोटि कवि काब बीचारहि ॥

अनेक कवि लोग काव्य को पढ़ते फिरते हैं ।

कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥

वेअन्त नया नया नाम ध्याते हैं

नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥

पर फिर भी करते का अन्त नहीं पा सकते ।

कई कोटि भए अभिमानी ॥

वेअन्त हंकार करने वाले हैं ।

कई कोटि अंध अगिआनी ॥

वेअंत मूर्ख अनजान मूढ़ हैं ।

कई कोटि किरपन कठोर ॥

वेअंत कंजूस पत्थर जैसे मन वाले हैं ।

कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥

वेअंत आत्मा करके न भीगने वाले कोरे हैं ।

कई कोटि परदरब कउ हिरहि ॥

अनेकों पराया माल चुराते हैं ।

कई कोटि परदूखना करहि ॥

अनेकों पराया दूषण निकालते फिरते हैं ।

कई कोटि माइआ सम माहि ॥

अनेकों माया का बड़ा यत्न करते हैं ।

कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥

अनेकों विदेशों में भटकते फिरते हैं ।

जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥

जिधर तुम लगाओ उधर लगे फिरते हैं ।

नानककरते की जानैकरता रचना ॥२॥

बनाने वाला अपनी रचना को आप ही जानता है ।

कई कोटि सिध जती जोगी ॥

अनेकों सिद्ध, जती, जोगी हुये हैं ।

कई कोटि राजे रस भोगी ॥

अनेकों राजे रसों को भोगने वाले हैं ।

कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥

अनेकों सांप, जानवर मालिक ने पैदा किये हैं ।

कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥

अनेकों पत्थर और वृक्ष पैदा किये हैं ।

कई कोटि पवन पानी बैसंतर ॥

अनेकों पवन, पानी, आग पैदा की है ।

कई कोटि देस भू मंडल ॥

अनेकों देश और जमीनें पड़ी हैं ।

कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥

अनेकों चांद, सूर्य, तारे हैं ।

कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥

अनेकों देवते, दैत, इन्द्र सिर छत्र धारी हैं ।

सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥

सारी दुनिया अपनी ताकत रूपी रस्सी से बांधी है ।

सुखमनी साहिब (७१३)

सटीक

नानकजिसुजिसुभावैतिसुतिसुनिसतारै॥३॥

जिसको चाहे उसको तार लेता है ।

कई कोटि राजस तामस सातक ॥

अनेकों रजो, तमो, सतो गुण वाले हैं ।

कई कोटि वेदपुरानसिमृतिअरु सासत॥

अनेकों वेद, पुराण, सिमृतियां शास्त्र हैं ।

कई कोटि कीए रतन समुद ॥

अनेकों समुद्र रचना समेत रचे पड़े हैं ।

कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥

अनेकों प्रकार के जीव जंत हैं ।

कई कोटि कीए चिरजीवे ॥

अनेकों बड़ी आयु वाले हैं ।

कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥

अनेकों स्वर्ण के पहाड़ और सुमेर पर्वत हैं ।

कई कोटि जरूय किंनर पिसाच ॥

अनेकों यख किन्नर पिसाच हैं ।

कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥

अनेकों भूत प्रेत सूर और शेर बने हुये हैं ।

सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥

सब से दूर और निकट से निकट भी है ।

नानकआपिअलिपतुरहिआभरपूरि॥४॥

सब से भिन्न रहता भी बीच मिला है ।

कई कोटि पाताल के वासी ॥

अनेकों पातालों के वसनीक हैं ।

कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥

अनेकों नरक, स्वर्ग में रहने वाले हैं ।

कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥

अनेकों जन्मते, जीते, मृत्यु हो जाते हैं ।

कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥

अनेकों बहुत योनियों में फिरते हैं ।

कई कोटि बैठत ही खाहि ॥

अनेकों बैठे ही अन्न खाते पीते हैं ।

कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥

अनेकों कठिन काम करते थक जाते हैं ।

कई कोटि कोए धनवंत ॥

अनेकों धन वाले बनाये हुये हैं ।

कई कोटि माइआ महि चित ॥

अनेकों माया की चिंता में डूबे पड़े हैं ।

जह जह भाणा तह तह राखे ॥

यहां हरि को अच्छा लगता है वहां सब को रखता है ।

नानक सभु किछु प्रभु कै हाथे ॥५॥

सब कुछ उस प्रभु के हाथ में है ।

कई कोटि भए बैरागी ॥

अनेकों बैराग्य वाले हुये हैं ।

राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥

उनकी प्रीति हरि नाम से लगी है ।

कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥

अनेकों हरि को ढूँडते फिरते हैं ।

आतम महि पारब्रह्म लहंते ॥

अन्दर से ही मालिक को टोल (ढूँड) लेते हैं ।

कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥

अनेकों को मालिक के दर्शन की प्यास लगी है ।

तिन कउ मिलिओ प्रभु अविनास ॥

उनको ना मरन वाला ईश्वर मिल गया है ।

कई कोटि मागहि सतसंगु ॥

अनेकों संतों के को ढूँडते फिरते हैं ।

सुखमनी साहिब (७१७)

सटीक

पारब्रह्म तिन लागा रंगु ॥

उनको हरि की रंगत चढ़ गई है ।

जिन कउ होए आपि सु प्रसन्न ॥

जिन ऊपर मालिक खुश हुआ है

नानक ते जन सदा धनि धनि ॥६॥

वह मनुष्य सदा धन्य धन्य है ।

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥

वेअंत कानों वाले देश हैं ।

कई कोटि अकास ब्रह्मंड ॥

वेअन्त आकाश और ब्रह्मण्ड हैं ।

कई कोटि होए अवतार ॥

वेअन्त अवतार संसार में हुए हैं ।

कई जुगति कीनो बिसथार ॥

कई युक्तियों से यह पसारा पसरिया है ।

कई बार पसरिओ पासार ॥

यह संसार पासारा कई बार पसरिया है ।

सदा सदा इकु एकंकार ॥

वह प्रभु सदा एक आप ही है ।

कई कोटि कीने बहु भाति ॥

वेअन्त बहुत प्रकार से बनाये गए हैं ।

प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥

प्रभु से होकर प्रभु में ही लीन हो गए ।

ताका अंतु न जानै कोइ ॥

उसका अन्त कोई नहीं जान सकता ।

आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥

वह मालिक आप से आप फैला है ।

कई कोटि पारब्रह्म के दास ॥

वेअन्त मालिक के दास हैं ।

सुखमनी साहिब (७१६)

सटीक

तिन होवत आतम परगास ॥

उन के अंदर मालिक का प्रकाश है ।

कह' कोटि तत के बेते ॥

वेअन्त तत वस्तु के बोलने वाले हैं ।

सदा निहारहि एको नेत्रे ॥

सदा एक को ही आंखों से देखते हैं ।

कह' कोटि नाम रसु पीवहि ॥

वेअन्त नाम रस को पीते हैं ।

अमर भए सद सद ही जीवहि ॥

वह मृत्यु से बिना होकर सदा जीते हैं ।

कह' कोटि नाम गुन गावहि ॥

वेअन्त नाम के गुणों को गाते हैं ।

आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥

वह आत्मानंद के सहज रस में समाते हैं ।

अपुने जन कउ सासि सासि समारे॥

अपने दास को स्वास स्वास याद रखता है ।

नानकओइ परमेशुरके पियारे॥८॥१०॥

ऐसे गुरुमुख हरि के प्यारे हैं ।

सलोक ॥

करण कारण प्रभु एकु है

करन करावने वाला एक ही मालिक है

दूसर नाही कोइ ॥

दूसरा कोई नहीं ।

नानक तिसु बलिहारणै

मैं उस से बलिहार जाता हूं

जलि थलि महीअलि सोइ॥१॥

जलों, थलों, आकाशों में पूर रहिया है ।

असटपदी ॥

११

करन करावन करनै जोगु ॥

हर काम के करने कराने योग्य एक मालिक है

जो तिसु भावै सोई होगु ॥

जो उसको अच्छा लगता है वही होता है ।

खिन महि थापि उथापन हारा ॥

एक क्षण में बनाकर नाश करने वाला है ।

अंतु नही किछु पारावारा ॥

उसके पार उरार का कोई अन्त नहीं ।

हुकमे धारि अधर रहावै ॥

हुकम में पृथ्वी रखी है और स्वयं निराश्रय है

हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥

हुकम में दुनिया बनती और उजड़ती है ।

हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥

हुकम में ही ऊंचे नीचे का व्यवहार होता है ।

हुकमे अनिक रंग परकार ॥

हुकम में ही अनेक प्रकार के तमाशे होते हैं ।

करिकरि देखै अपनी वडिआई ॥

अपनी बड़ाई आप ही बना कर देखता है ।

नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥

वह सब में मिला जुला है ।

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥

मालिक को अच्छा लगे तब मनुष्य गति को पा लेता है ।

प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥

मालिक को अच्छा लगे तो पत्थरों को तरा देता है ।

सुखमनी साहिब (७२३)

सटीक

प्रभ भावै विनु सास ते राखै ॥

मालिक को अच्छा लगे तो बिना स्वास राख लेता है ।

प्रभ भावै ता रहि गुण भाखै ॥

मालिक को भा जाये तो जीव हरि गुण गाता है ।

प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥

मालिक को भा जाये तो बुरों का उद्धार करता है ।

आपि करै आपन बीचारै ॥

स्वयं ही कर्ता और आप ही विचार करता है ।

दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥

दोनों ओरों का आप ही मालिक है ।

खेलै बिगसै अंतरजामी ॥

वह मालिक खेलता और खुश होता है ।

जो भावै सो कार कसावै ॥

वही कार कराता है जो उसको अच्छी लगे ।

तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥

उसको जल्दी से हर ओर प्रकट कर देता है ।

जाकउ अपुनी करै बखसीस ॥

जिसको अपनी दात करता है

ताका लेखा न गनै जगदीस ॥

जगत का स्वामी उसका लेखा नहीं लेता ।

जीउ पिंडु सभ तिसकी रासि ॥

जीव, शरीर सब उसकी रास है ।

घटि घटि पूरन ब्रह्म प्रगास ॥

परमेश्वर सब में प्रकाश करता है ।

अपनी बणत आपि बनाई ॥

दुनिया की बनत आपने आप ही बनाई है ।

नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥

मैं उसकी बड़ाई देख कर जीता हूँ ।

इस का बलु नाही इसु हाथ ॥

इसका जोर इसके हाथ नहीं है ।

करन करावन सरब को नाथ ॥

सब का मालिक करने कराने को सामर्थ है ।

आगिआकारी बपुरा जीउ ॥

यह जीव विचारा तो आज्ञा मानने वाला है ।

जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥

जो उसको अच्छा लगता है वही होता है ।

कबहू ऊच नीच महि बसै ॥

कभी ऊंची नीची योनी में जा गिरता है ।

कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥

कभी शोक कभी खुशी के आनंद में हंसता है ।

कबहू निंद चिंद बिउहार ॥

कभी निंदा कभी बड़ाई के व्यवहार में पड़ता है ।

कबहू ऊभ अकास पइआल ॥

कभी ऊंचे आकाश और कभी पाताल को जाता है ।

कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥

कभी ज्ञानवान हो कर विचार करता है ।

नानक आपि मिलावणहार ॥५॥

परमेश्वर आप ही मिलाने वाला है ।

कबहू निरति करै बहु भाति ॥

कभी बहुत प्रकार के नाच करता है ।

कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥

कभी दिन रात सोता रहता है ।

कबहू महा क्रोध बिकराल ॥

कभी भयानक क्रोध में आ जाता है ।

कबहू सरब की होत रवाल ॥

कभी सब के पैरों की धूल बन जाता है ।

सुखमनी साहिब (७२६)

सटीक

कबहु होइ वहै बड राजा ॥

कभी बड़ा राजा बन बैठता है ।

कबहु भेखारी नीच का साजा ॥

कभी मंगता नीचे साज वाला होता है ।

कबहु अपकीरति महि आवै ॥

कभी निन्दा में आ जाता है ।

कबहु भला भला कहावै ॥

कभी भला भला बुलवाता फिरता है ।

जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥

जैसा प्रभु रखता है वैसा ही रहता है ।

गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥

गुरु की कृपा द्वारा यह बोल गुरु जी बोलते हैं ।

कबहु होइ पंडितु करे बख्यानु ॥

कभी पंडित होकर उपदेश करता है ।

कबहू मोनि धारी लावै धिआनु ॥

कभी चुप होकर ध्यान लगाता है ।

कबहू तट तीरथ इसनान ॥

कभी तीर्थों के किनारे जाकर स्नान करता है ।

कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥

कभी सिद्ध साध होकर मुख से ज्ञान करता है ।

कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥

कभी कीड़ा, हाथी, पतंग अनेक जीव होता फिरता है ।

अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥

अनेक योनियों में भरमाया फिरता है ।

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥

जैसे स्वांगी अनेकों रूप दिखाता फिरता है ।

जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥

जिस प्रकार मालिक को अच्छा लगता है उसी तरह नचाता है

जो तिसु भावै सोई होइ ॥

जो उसको अच्छा लगता है वह होता है ।

नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥

उस परमेश्वर के बिना दूसरा और कोई नहीं ।

कबहु साध संगति इहु पावै ॥

कभी यह साध संगत को पा लेता है ।

उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥

उस स्थान से फिर मुड़ मुड़ कर नहीं आता ।

अंतरि होइ गिआन परगासु ॥

इसके अन्दर ज्ञान का चानण हो जाता है ।

उसु असथान का नही बिनासु ॥

उस स्थान का फिर नाश नहीं होता ।

मन तन नामि रते इक रंगि ॥

नाम के एक रंग में तन मन करके लगे रहते हैं ।

सदा बसहि पारब्रह्म कै संगि ॥

जो हरि के साथ सदा बसते हैं ।

जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥

जैसे पानी साथ पानी मिल जुल जाता है ।

तिउ जोती संगि जोति समाना ॥

तैसे ज्योति से ज्योति समा जाती है ।

मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥

आना जाना खो दिया और आराम पा लिया ।

नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

मैं उस मालिक से सदा कुरबान हूँ ।

सलोक ॥

सुखी बसै मसकीनीआ

गरीब सुखी बसते हैं ।

आपु निवारि तले ॥

जो आपा गुआ कर नीचे होकर बसते हैं ।

बड़े बड़े अहंकारीआ

जो बड़े से बड़े हंकार वाले हैं

नानक गरबि गले ॥१॥

वह हंकार में ही गल गये हैं ।

असटपदी ॥

जिसकै अंतरि राज अभिमानु ॥

जिसके अन्दर राज का अभिमान है

सो नरक पाती होवत सुआनु ॥

वह कुत्ता नरक में पड़ता है ।

जो जानै मै जोबनवंतु ॥

जो जानता है मैं बड़ी जवानी वाला हूँ

सो होवत बिसटा का जंतु ॥

वह गंदगी का कीड़ा बनता है ।

आपस कउ करमवंतु कहावै ॥

जो अपने आप को करने वाला कहाता है

जनमि मरै बहु जोनि भूमावै ॥

वह जन्मता मरता और यूनियों में फिरता है ।

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥

जो धन और ज़मीनों का मान करता है ।

सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥

वह मूर्ख अन्धा और बेसमझ है ।

करि किरपां जिसकै हिरदै

जिसके मन में कृपा करके

गरीबी बसावै ॥

गरीबी बसाता है ।

सुखमनी साहिब (७३५)

सटीक

नानक ईहा मुकतु आगै सुखुपावै॥१॥

वह मुक्त होकर आगे सुख पाता है ।

धनवंता होइ करि गरबावै ॥

धन वाला होकर गुमान करता है ।

तृण समानि कछु संगि न जावै ॥

तिनके जितना भी साथ कुछ नहीं जाता ।

बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस॥

जब फौजें हों तो मनुष्यों ऊपर आशा रखे ।

पल भीतरि ताका होइ विनास ॥

उसका एक पल में नाश हो जाता है ।

सब ते आप जानै बलवंतु ॥

जो सब से अपने आपको ताकत वाला समझता है ।

खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥

एक पल में राख हो जाता है ।

किसै न बदै आपि अहंकारी ॥

जो हंकारी किसी को कुछ नहीं समझता
धरमराइ तिसु करे खुआरी ॥

यम उसको बड़ा खवार करता है ।

गुरप्रसादि जाका मिटै अभिमानु ॥

गुरु कृपा से जिनका हंकार मिट जाता है

सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥

वही दास दरगाह में माना जाता है ।

कोटि करम करै हउ धारे ॥

करोड़ों अच्छे काम करके भी हंकार करे ।

समु पावै सगले विरथारे ॥

बहुत दुःख पाता है और सारे काम व्यर्थ हैं ।

अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥

तप करके मन में हंकार करे ।

नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥

वह फिर फिर कर नरकों स्वर्गों में आता है ।

अनिक जतन करि आत्म नही द्रवै ॥

अनेकों यत्न करके भी जिसका हृदय कोमल नहीं

हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥

वह हरि की दरगाह में किस प्रकार पहुँच सकता है ।

आपस कउ जो भला कहावै ॥

जो आप ही भला कहाता है

तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥

भलाई उसके निकट नहीं आती ।

सरब की रेन जाका मनु होइ ॥

जिसका मन सबकी धूलि बन जाता है ।

कहुनानक ताकी निरमल सोइ ॥३॥

उस मनुष्य की सोभा बड़ी पवित्र है ।

जब लगु जानै मुझ ते कुछ होइ ॥

जब तक जानता है कि मुझ से कुछ हो सकता है

तब इस कउ सुख नाही कोइ ॥

तब तक इसको कोई सुख नहीं हो सकता ।

जब इह जानै मै किछु करता ॥

जब तक जानता है कि मैं कुछ कर सकता हूँ

तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥

तब तक यह योनियों में भटकता फिरता है ।

जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥

जब तक यह किसी को शत्रु मित्र बनाता है

तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥

तब तक मन टिका आराम नहीं पाता ।

जब लगु मोह भगन संगि माइ ॥

जब तक मोह में मग्न हुआ है ।

तबलगु धरमराइ देह सजाइ ॥

तब तक इसको यम डंढे मारे गा ।

प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥

मालिक की कृपा से रस्से टूटते हैं ।

गुर प्रसादि नानक हुउ छूटै ॥४॥

गुरु की कृपा से हंगता छूट जाती है ।

सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥

हजारों कमा कर फिर लाखों को उठ दौड़ता है

तृपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥

धन जोड़ता तृप्त नहीं होता ।

अनिक भोग बिखिआ के करै ॥

बहुत विषयों के भोग कर्ता तृप्त नहीं होता ।

नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥

खप खप मरता है संतोष नहीं करता ।

बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥

बिना संतोष से कोई तृप्त नहीं होता ।

सुपन मनोरथ बृथे सब काजै ॥

स्वपन के मनोरथ जैसे सारे काम व्यर्थ हैं ।

नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

नाम का आनंद सारे सुखों की जड़ है ।

बडभागी किसै परापति होइ ॥

जो बड़े कर्मों से किसी को मिलता है ।

करन करावन आपे आपि ॥

प्रभु आप ही करने कराने को सामर्थ है ।

सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥

उस हरि को सदा सदा जपा कर ।

करन करावन करने हारु ॥

सारे कामों के करने कराने वाला आप ही है ।

इसकै हाथि कहा बीचारु ॥

इस विचारे के हाथ में क्या है

जैसी दृष्टि करे तैसा होइ ॥

जिस प्रकारकी दृष्टि करता है उसी प्रकारका हो जाता है।

आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥

वह परमेश्वर आप ही आप है

जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥

जो काम करता है अपनी इच्छा से करता है ।

सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥

वह सब से निकट और सब से दूर भी है ।

बूझै देखै करै विवेक ॥

समझता देखता विचार करता है ।

आपहि एक आपहि अनेक ॥

आप ही एक और आप ही अनेकों रूप हैं ।

मरै न विनसै आवै न जाइ ॥

मरता जन्मता, आता जाता नहीं ।

नानक सदही रहिआ समाइ ॥६॥

वह सभ में मिला हुआ है ।

आपि उपदेसै समझै आपि ॥

प्रभु आप ही उपदेशता और आप ही समझता है ।

आपे रचिआ सभ कै साथि ॥

आप ही सब में मिला हुआ है ।

आपि कीनो आपन विसथारु ॥

अपने आप का आप ही पसारा किया है ।

सभु कछु उसका ओहु करनैहारु ॥

सारा कुछ उसका है, वह बनाने वाला है ।

उसते भिन कहहु किछु होइ ॥

बताओ उससे भिन्न कुछ हो सकता है ।

थान थनंतरि एकै सोइ ॥

स्थानों और स्थानों के अन्दर भी वह एक आप ही है

अपने चलित आपि करणैहार ॥

अपने खेल तमाशे वह आप ही करता है ।

कउतक करै रंग आपार ॥

वह रंग तमाशे करता है जिनका कोई अंत नहीं ।

मन महि आपि मन अपुने माहि ॥

वह मन में बसता है और मन उसमें बसता है ।

नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥

उस सुख रूप की कोई गिनती नहीं ।

सति सति सति प्रभु सुआमो ॥

मालिक तीनों समयों में सा वा है ।

गुर परसादि किनै वखिआनी ॥

गुरु की कृपा से यह बात किसी ने कही है ।

सचु सचु सचु सभु कीना ॥

तीनों समयों में उसने सब सचच किया है ।

कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥

करोड़ों में किसी एक ने जाना है ।

भला भला भला तेरा रूप ॥

तेरा रूप तीनों समयों में भला है ।

अति सुंदर अपार अनूप ॥

हे अपार अनूप ! तू बहुत ही सुन्दर है ।

निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥

तेरी बाणी तीनों समयों में साफ है ।

घटि घटि सुनी स्रवन बरूयाणी ॥

कानों से सुनी अर कथन की है ।

पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥

कहने सुनने और सुनाने वाले सब पवित्र हैं ।

नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

यह जीव मन की प्रीति द्वारा नाम जपता है ।

सलोक ॥

संत सरनि जो जनु परै

जो मनुष्य संतों की शरण पड़ा है

सो जनु उधरनहार ॥

वह तर गया है ।

संत की निंदा नानका

जो मनुष्य संतों की निन्दा करता है

बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

वह फिर फिर कर जन्मों के दुःखों में पड़ता है

असटपदी

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥

संतों को दोष लगाने से आयु कम होती है ।

संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥

संतों को दोष लगाने से जीव यमों से नहीं छूटता ।

संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥

संतों को दोष लगाने से सारा सुख चला जाता है ।

संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥

संतों को दोष लगाने से नरकों में पड़ता है ।

संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥

संतों को दोष लगाने से अकल मैत्री हो जाती है ।

संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥

संतों को दोष लगाने से शोभा से बिना हो जाता है ।

संत के हते कउ रखै न कोइ ॥

संतों के मारे हुए को कोई रख नहीं सकता ।

संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥

संतों को दोष लगाने से हृदय मैला हो जाता है ।

संत कृपाल कृपा जे करै ॥

यदि संत कृपालू कृपा कर देवे

नानक संत संगि निंदकु भी तरै ॥१॥

तो संत के साथ मिल कर निंदक भी सुख पाता है ।

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥

संतों को दोष लगाने से मुख टेढ़ा हो जाता है ।

संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

संतों को दोष लगाने से कव्वे की तरह कां र करता है ।

संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥

संतों को दोष लगाने से सर्प की योनि पाता है ।

असटपदी

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥

संतों को दोष लगाने से आयु कम होती है ।

संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥

संतों को दोष लगाने से जीव यमों से नहीं छूटता ।

संत कै दूखनि सुख सभु जाइ ॥

संतों को दोष लगाने से सारा सुख चला जाता है ।

संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥

सन्तों को दोष लगाने से नरकों में पड़ता है ।

संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥

संतों को दोष लगाने से अकल मैत्री हो जाती है ।

संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥

संतों को दोष लगाने से शोभा से बिना हो जाता है ।

संत के हते कउ रखै न कोइ ॥

संतों के मारे हुए को कोई रख नहीं सकता ।

संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥

संतों को दोष लगाने से हृदय मैला हो जाता है ।

संत कृपाल कृपा जे करै ॥

यदि संत कृपालू कृपा कर देवे

नानक संत संगि निंदकु भी तरै ॥१॥

तो संत के साथ मिल कर निंदक भी सुख पाता है ।

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥

संतों को दोष लगाने से मुख टेढ़ा हो जाता है ।

संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥

संतों को दोष लगाने से कव्वे की तरह कां २ करता है ।

संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥

संतों को दोष लगाने से सर्प की योनि पाता है ।

संत कै दूखनि तृगद जोनि किरमाइ॥

संतों को दोष लगाने से देढ़ियां योनियां पाता है ।

संतन कै दूखनि तृसना महि जलै॥

संतों को दोष लगाने से तृष्णाकी आग में जलता है ।

संत कै दूखनि सभु को छलै ॥

संतों को दोष लगाने से सब को छलता है ।

संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ॥

संतों को दोष लगाने से सारा तेज चला जाता है ।

संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥

संतों को दोष लगाने से नीचे से नीचा हो जाती है ।

संत दोखी का थाउ को नाहि ॥

संतों के दोखी को कोई स्थान नहीं ।

नानक संत भावै ता

यदि संतों को अच्छा लगे ।

ओइ भी गति पाहि ॥२॥

तो वह भी गति पा लेता है ।

संत का निंदकु महा अतताई॥

साध का निंदक बड़ा अपराधी है ।

संत का निंदकु खिनु टिकनु नपाई॥

साध का निन्दक थोड़ा जैसा भी आराम नहीं पाता ।

संत का निंदकु महा हतिआरा॥

साध का निन्दक बड़ा हत्यारा है ।

संत का निंदकु परमेशुरि मारा ॥

साध का निन्दक ईश्वर का मारा है ।

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥

साध का निन्दक राज से बिना है ।

संतका निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥

साध का निन्दक दुःखी और गरीब है ।

संत के निंदक कउ सरब रोग ॥

साध के निन्दक को सारे रोग लगते हैं ।

संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥

साध के निन्दक का कभी भी मिलाप नहीं होता ।

संत की निंदा दोख महि दोखु ॥

साध का निंदक दोखों और दोषों में ही पड़ता है ।

नानक संत भावै ता

यदि साध को अच्छा लगता है

उसका भी होइ मोखु ॥३॥

तब वह पापी भी सुख पाता है ।

संत का दोखी सदा अपवितु ॥

संत का दोखी सदा मैला है ।

संत का दोखी किसै का नही मितु ॥

संत का दोखी किसी का मित्र नहीं ।

संत के दोखी कउ डानु लागै ॥

संत के दोखी को डंडा लगता है ।

संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥

संत के दोखी को सारे छोड़ देते हैं ।

संत का दोखी महा अहंकारी ॥

संत का दोखी बड़ा अभिमानी है ।

संत का दोखी सदा बिकारी ॥

संत का दोखी सदा विपैई है ।

संत का दोखी जनमै मरै ॥

संत का दोखी जन्मता मरता है ।

संत की दूखना सुख ते टरै ॥

संत की दूषणा सुख से टाक देती है ।

संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥

संत के दोखी का कोई स्थान नहीं ।

नानक संत भावै ता लए मिलाइ॥४॥

संत को अच्छा लगे तो उसको भी साथ मिला ले ।

संत का दोखी अधबीच ते टूटै ॥

प्यारे का दोखी अध बीच से टूट जाता है ।

संत का दोखी कितै काजिन पहुँचै॥

प्यारे का दोखी किसी काम पर नहीं पहुँच सकता ।

संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ॥

प्यारे का दोखी जंगलों में टक्करें मारता है ।

संत का दोखी उभड़ि पाईऐ ॥

प्यारे का दोखी उजाड़ में पड़ता है ।

संत का दोखी अंतर ते थोथा॥

प्यारे का दोखी अन्दर से खाली है ।

जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥

जैसे बिना सांस मुर्दे की देही है ।

संत के दोखी की जड़ किछु नाहि॥

प्यारे के दोखी की कोई जड़ नहीं होती ।

आपन बीजि आपे ही खाहि ॥

यह अपने फल का आप ही दुःख भोगता है ।

संत के दोखी कउ अवरु न

प्यारे के दोखी को और कोई नहीं

राखन हारु ॥

रख सकता ।

नानक संत भावै ता लए उबारि॥५॥

प्यारे को अच्छा लगे तो उसको भी रख ले ।

संता का दोखी इउ बिललाइ ॥

संत का दोखी ऐसे कुर्ताता है

जिउ जल बिहून मछली तड़फड़ाइ॥

जैसे पानी बिना मछली तड़पती है ।

संत का दोखी भूखा नही राजै ॥

संत का दोखी भूखा रह कर तृप्त नहीं होता ।

जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥

जैसे आग लकड़ी से तृप्त नहीं होती ।

संत का दोखी छुटै इकेला ॥

संत का दोखी अकेला ही छोड़ा जाता है ।

जिउ वूआडुतिलु खेत माहि दुहेला ॥

जैसे खेती में बुआड़, तिल होता है ।

संत का दोखी धरम ते रहत ॥

संत का दोखी धर्म के बिना है ।

संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥

संत का दोखी सदा झूठ बोलता है ।

किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥

यह निंदक की कार धुर से ही पड़ी हुई है ।

नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥

उस हरि को जो अच्छा लगता है वह ही होता है ।

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ॥

संत के दोखी का रूप बिगड़ जाता है ।

संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ॥

संत के दोखी को दरगाह में सजा मिलती है ।

संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥

संत का दोखी सदा सहकता रहता है ।

संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ॥

न वह मरता है न जीता है ।

संत के दोखी की पुजै न आसा॥

संत के दोखी की कोई आशा पूर्ण नहीं होती ।

संत का दोखी उठि चलै निरासा॥

संत का दोखी दुनिया से निराश उठ जाता है ।

संत कै दोखि न तृसटै कोइ ॥

साध का दोखो कोई भी प्रसन्न नहीं होता ।

जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥

जैसा उसको भाता है वैसा हो जाता है ।

पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥

बुरा किरत पड़ा हुआ कोई नहीं मिटा सकता ।

नानक जानै सचा सोइ ॥७॥

इस सच्ची बात को सच्चा ही जान सकता है ।

सभ घट तिसके ओहु करनैहारु ॥

सारे घट उसके हैं वह सब का कर्ता है ।

सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥

सदा २ उसको नमस्कार है ।

प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥

दिन रात मालिक की बड़ाई करो ।

सुखमनी साहिब (७५७)

सटीक

तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥

उसको स्वास २ याद करो ।

सभु कह्यु वरतै तिसका कीआ ॥

उसका किया सारा कुछ हो रहा है ।

जैसा करे तैसा को थीआ ॥

जैसा कोई काम करे तैसा होता है ।

अपना खेल आपि करनेहारु ॥

अपने खेल आपही करता है ।

दूसर कउनु कहै बीचारु ॥

इस विचार को दूसरा कौन कर सकता है ।

जिसनो कृपा करैतिसु आपन नामु देइ ॥

जिस पर कृपा करे उसको अपना नाम देता है ।

बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

वह दास बड़े भागों वाला है ।

सलोक ॥

तजहु सिआनप सरिजनहु

हे अक्ल वालिओ ! त्याग दो सिआनपों को ।

सिमरहु हरि हरि राइ ॥

कारण करने वाले को याद करो ।

एक आस हरि मनि रखहु

एक हरि की आशा मन में रखो ।

नानक दूखु भरसु भउ जाइ ॥१॥

तब दुःख, भ्रम, भय नाश हो जायेंगे ।

असटपदी ॥

मानुख की टेक बृथी सभ जानु॥

मनुष्य की सारी ओट व्यर्थ समझो ।

देवन कउ एकै भगवानु ॥

देने वाला एक ईश्वर है ।

जिसकै दीऐ रहै अघाइ ॥

जिसके देने से तृप्त हो जाता है ।

बहुरि न तृसना लागै आइ ॥

फिर तृष्णा, भूख, आकर नहीं लगती ।

मारै राखै एको आपि ॥

एक आप ही मारने राखने वाला है ।

मानुख कै किछु नाही हाथि ॥

मनुष्य के हाथ (वश) कुछ नहीं है ।

तिसका हुकमु बूझि सुखु होइ ॥

उसका हुकम समझने से सुख होता है ।

तिसका नामु रखु कंठि परोइ ॥

उसका नाम गले में परो कर रखो ।

सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ॥

उस मालिक को सदा याद करो ।

नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥

सिमरन वाले को कोई विघन नहीं लगता ।

उसतति मन महि करि निरंकार॥

मन में एक ईश्वर की बड़ाई कर ।

करि मन मेरे सति बिउहार ॥

हे मेरे मन ! यही एक साचा व्यवहार है ।

निरमल रसना अमृतु पीउ ॥

जिह्वा को निंदा से बचा और नाम अमृत पी ।

सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥

अपनी आत्मा को सदा सुखी कर लो ।

नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥

उस मालिक के रंग तमाशे आंखों से देख ।

साध संगि बिनसै सभ संगु ॥

साध संगत करके सारे विकार नाश हो जाते हैं ।

चरन चलउ मारगि गोविंद ॥

पांव से ईश्वर का रास्ता चल ।

मिटहि पाप जपीअै हरि बिंद ॥

थोड़ा जेहा जपने से सब पाप नाश हो जाते हैं ।

कर हरि करम सवनि हरि कथा ॥

हाथों से हरि की कार कर कानों से हरि कथा सुन ।

हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥

तेरा दरगाह में मस्तक उजला होगा ।

वडभागी ते जन जग माहि ॥

दुनिया में वह दास बड़े भागों वाले हैं ।

सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥

जो सदा हरि के गुण गाते रहते हैं ।

राम नाम जो करहि विचार ॥

जो राम के नाम का विचार करते हैं

से धनवंत गनी संसार ॥

वह जगत में धन्यवान हैं ।

मनि तनि मुखि बोलहि हरि सुखी ॥

जो तन मन और मुख से हरि का नाम कहते हैं

सदा सदा जानहु ते सुखी ॥

जान लो वह सदा सुखी हैं ।

एको एकु एकु पछानै ॥

जो हर समय में एक हरि को ही जानता है

इत उत की ओहु सोभी जानै ॥

उसको इधर उधर की सूझ हो जाती है ।

नाम संगि जिसका मनु मानिआ ॥

जिसका मन नाम में पक्का हो गया

मुखमनी साहिब (७६३)

सटीक

नानक तिनहि निरंजनु जानिआ॥३॥

उन्हों ने माया रहित ईश्वर को जान लिया है ।

गुर प्रसादि आपन आपु सुभै ॥

गुरु कृपा से जिसको अपने आप दृष्टि आ गया

तिसकी जानहु तृप्तना बुभै ॥

जान लो उसकी सारी तृष्णा जाती रही ।

साध संगि हरि हरि जसु कहत ॥

जो साध संगत में जाकर हरियश करे

सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥

वह हरि जन सब रोगों से बिना है ।

अनदिनु कीरतनु केवल बख्यान ॥

जो दिन रात कीर्तन का कथन करता है

गृहसत महि सोई निरबानु ॥

वह मनुष्य घर में ही दुःख से बिना है ।

एक ऊपर जिसु जन की आसा ॥

जिस दास की एक ऊपर ही आशा है

तिसकी कटीऐ जम की फासा ॥

उसकी यमों की फाही काटी जाती है ।

पारब्रह्म की जिसु मनि भूख ॥

जिसके मन में ईश्वर की भूख है

नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥

उसको कोई दुःख नहीं लगता ।

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥

जिसको हरि मालिक मन में चेतै आता है

सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥

वह संत सुखी है किसी ओर नहीं डोलता ।

जिसु प्रभु अपुना किरपा करे ॥

जिस ऊपर मालिक कृपा करता है

सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥

बताओ ! वह दास किसी से डरता है ?

जैसा सा तैसा दसटाइआ ॥

जैसा प्रभु है वैसे दृष्टि में आ गया ।

अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥

अपने किये काम में आप भिला हुआ है ।

सोधत सोधत सोधत सीभिआ ॥

उसने विचार २ कर फिर विचार लिया है ।

गुर प्रसादि ततु सभु बूभिआ ॥

गुरु कृपा द्वारा सच्ची बात को जान लिया है ।

जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥

जब देखा तो सब मूल रूप वह ही है ।

नानक सो सुखम सोई असथूलु ॥५॥

गुणों वाला न गुणों वाला वह ही है ।

नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥

ना कुछ जन्मता है ना कुछ मरता है

आपन चलितु आप ही करै ॥

अपने तमाशे आप ही करता है ।

आवनु जावनु दसटि अनदसटि ॥

आने जाने देखने ना देखने वाली ।

आगिआकारी धारी सभ सृसटि ॥

सारी दुनिया आजाकारी पकड़ी हुई है ।

आपे आपि सगल महि आपि ॥

सब में आप ही आप मिला जुला है ।

अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥

अनेक युक्तियों से रचना रच कर नष्ट कर देता है ।

अविनासी नाही किछु खंड ॥

आप नहीं मृत्यु होता और नाही कोई उसका टुकड़ा है

धारन धारि रहिओ ब्रह्मंड ॥

दुनिया को धारण में धार रखा है ।

अलख अभेव पुरख परताप ॥

उस प्रभु का प्रताप देखा नहीं जाता ।

आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥

आप जपाए तो जपा जाता है ।

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥

जिसने मालिक को जाता है वह शोभा वाला है ।

सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥

सारा जगत उसकी शलाघा से तरता है ।

प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥

मालिक के दास सब को तारने वाले हैं ।

प्रभ के सेवक दूख बिसारन ।

मालिक के दास दुःखों को दूर करने वाले हैं ।

आपे मेलि लए किरपाल ॥
कृपालू आप ही अपने साथ मेल लेता है ।
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥

गुरु का शब्द जप कर प्रसन्न हो गये ।

उनकी सेवा सोई लागै ॥

उन की सेवा में वही लगता है

जिसनो कृपा करहि बडभागै ॥

जिस बड़े भागों वाले ऊपर कृपा करे ।

नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥

वह नाम जप कर आराम पा लेते हैं ।

नानक तिन पुरख कउ

उन मनुष्यों को

ऊतम करि मानु ॥७॥

उत्तम माना जाता है ।

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥

जो कुछ भी करे मालिक के हुक्म में करे ।

सदा सदा बसै हरि संगि ॥

वह भक्त प्रभु के साथ बसते हैं ।

सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥

जो सहज में होता है वह होता जानता है ।

करणैहारु पछाणै सोइ ॥

करने वाले को उसने पहचान लिया है ।

प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥

मालिक का किया दास को मीठा लगता है ।

जैसा सा तैसा दसटाना ॥

जैसा था वैसा देख लिया है ।

जिसते उपजे तिसु माहि समाए ॥

वह जिस से पैदा हुए उसी में समा गए ।

ओह सुखनिधान ओनहू बनि आए ॥

वह सुखों का खजाना संतों को मिल गया है ।

आपस कउ आपि दीनो मानु ॥

अपने आप को उन्हीं ने आप ही आदर दिया है ।

नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

मालिक और मालिक के प्यारे को एक जान लो ।

सलोक ॥

सरब कला भरपूर प्रभ

प्रभु सब शक्तियों से भरा हुआ है

विरथा जाननहार ॥

सब के दुःख को जानता है ।

जाकै सिमरनि उधरीऐ

जिसके याद करने से उद्धार होता है ।

सुखमनी साहिब (७७१)

सटीक

नानक तिसु बलिहार ॥१॥

मैं उस से बलिहार जाता हूं।

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गुोपाल ॥

मालिक टूटी को बनाने वाला है।

सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥

सब जीवों की पालना आप ही करता है।

सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥

सारी दुनिया की चिन्ता जिस के मन में है

तिसते विरथा कोई नाहि ॥

उस से खाली कोई नहीं रहता।

रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥

हे मेरे मन ! उस हरि को सदा जप

अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥

वह न मरने वाला आप ही आप है ।

आपन कीआ कछू न होइ ॥

उसका अपना किया कुछ नहीं होता ।

जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥

चाहे कोई मनुष्य सैंकड़ों विचार करता रहे ।

तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥

उस से बिना और कोई पदार्थ तेरे काम का नहीं ।

गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥

एक हरि नाम को जपने से गति होगी ।

रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥

यदि कोई सुन्दर होकर किसी को मोहित करना चाहे

प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥

मालिक की ज्योति सब के अन्दर सुन्दर लगती है ।

सुखमनी साहिब (७७३)

सटीक

धनवंता होइ किआ को गरबै ॥

धन वाला हो कर क्या कोई मान करे

जा सभु किछु तिसका दीआ दरबै ॥

जो सब धन उस हरि का दिया है ।

अति सूरज जे कोऊ कहावै ॥

यदि कोई बड़ा शूरवीर कहाता है

प्रभ की कला बिना कह धावै ॥

हरि की शक्ति बिना कहां धावा कर सकता है ।

जे को होइ बहै दातारु ॥

यदि कोई दाता बन बैठता है

तिसु देनहारु जानै गावारु ॥

तो उस मूर्ख को चाहिए वह दाते को समझे ।

जिसु गुरप्रसादि तूटै हउ रोगु ॥

गुरु कृपा द्वारा जिसका हंगता रोग दूटता है

नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥

वह दास सदा रोग से रहित है ।

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥

जिस प्रकार थम्म घर को थम्म रखता है

तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥

इसी प्रकार गुरु का शब्द मन को आश्रय देता है ।

जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥

जिस प्रकार पत्थर बेड़ी ऊपर चढ़ कर तर जाता है

प्राणी गुरचरण लगतु निसतरै ॥

इसी प्रकार मनुष्य गुरु के चरणी लगकर मुक्ति पाता है ।

जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥

जिस प्रकार अन्धेरे में दिये का प्रकाश होता है ।

गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥

इसी प्रकार गुरु दर्शन से मन खिलता है ।

सुखमनी साहिब (७७५)

सटीक

जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै॥

जैसे उजाड़ का भूला रास्ता हूँ ड ले

तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै॥

ऐसे साध संगत द्वारा ज्योति का प्रकाश होता है

तिन संतन की बाछउ धूरि ॥

मैं ऐसे संतों की चरण धूल को लोचता हूँ

नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥

सो दास की इच्छा पूरी कर दो ।

मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥

हे मूर्ख मन ! क्यों रोता है

पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥

अपने पहले लेखों से तुम ने पा लिया है ।

दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥

मालिक तो दुःख सुख देने वाला है

अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥

और बातों को छोड़ कर तू उसको याद कर ।

जो किछु करै सोई सुख मानु ॥

जो करता है उसको सुख करके मान ।

भूला काहे फिरहि अजानु ॥

हे मूर्ख ! क्यों भूला फिरता है ।

कउन वसतु आई तेरै संग ॥

कौन सी वस्तु तेरे साथ आई है ।

लपटि रहिआो रसि लोभी पतंग ॥

रसों से कीड़ियों की तरह चिमटा हुआ है ।

राम नाम जपि हिरदे माहि ॥

प्रभु का नाम मन में जप

नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥

इज्जत साथ अपने घर को चला जाएगा ।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥

तू जो सौदा लेने आया हैं

राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

वह नाम रूपी सौदा संतों के मन से प्राप्त होता है ।

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥

हंकार त्याग कर मन को बेच कर वह सौदा ले ।

राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

उस हरि नाम को मन में विचार

लादि खेप संतह संगि चालु ॥

सौदा उठा कर संतों साथ चला चल ।

अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥

और विषयों के धन्धे त्याग दे ।

धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥

फिर तुम्हें हर कोई धन्य धन्य कहेगा ।

मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥

हरि की दरगाह में मुख उज्जला होगा ।

इहु वापारु विरला वापारै ॥

इस सौदे को कोई बिरला ही लेता है ।

नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥

मैं उस से कुर्बान जाता हूँ ।

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥

संतों के चरण धो धो कर पी ।

अरपि साध कउ अपना जीउ ॥

संतों को अपना जीव अर्पण कर दे ।

साध की धूरि करउ इसनानु ॥

संतों की धूलि में स्नान कर ।

साध ऊपरि जाईऐ कुरवानु ॥

संतों से कुर्बान जाओ ।

साध सेवा बडभागी पाईऐ ॥

संतों की सेवा बड़े भागों से मिलती है ।

साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥

संतों संग मिल कर हरि कीर्तन गावो ।

अनिक बिघन ते साधू राखै ॥

संत अनेक विघनों से बचा रखता है ।

हरि गुन गाइ अमृत रसु चाखै ॥

हरि गुण गा कर अमृत रस लेता रह ।

ओट गही संतह दरि आइआ ॥

जिसने संतों के दरवाजे पर आकर उन की ओट ली है

सरब सुख नानक तिह पाइआ ॥६॥

उसने सारे सुख पा लिए हैं ।

मिरतक कउ जीवालनहार ॥

मृत्यु हुए को जीव दान देने वाला है ।

भूखे कउ देवत अधार ॥

भूखों को रोटी का सहारा देने वाला है ।

सरबनिधान जाकी दसटी माहि ॥

जिसकी दृष्टि में सारे खजाने हैं ।

पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥

पिछले कर्मों के लिखे अनुसार मिलता है ।

सभु किछु तिसका ओहु करनै जोगु ॥

उस करने योग का सब कुछ पदार्थ है

तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥

उस बिना दूसरा और न है न होगा ।

जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥

हे प्यारे ! दिन रात उसको जपता रह ।

सब ते ऊच निरमल इह करणी ॥

सब से यह ऊंची और सूची कार है ।

करि किरपा जिस कउ नामु दीआ
 उसने कृपा करके जिसको नाम दिया है
 नानक सो जनु निरमलु थीआ॥७॥

वह दास पवित्र हो गया है ।

जाकै मनि गुर की परतीति ॥

जिसके मन में गुरु का निश्चय है

तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

उस दास को हरि (मालिक) याद आ जाता है ।

भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥

तीनों लोकों में उसका नाम भक्त सुना जाता है

जाकै हिरदै एको होइ ॥

जिसके मन में एक प्रभु है ।

सचु करणी सचु ता की रहत॥

उसकी रहत और करनी सचची है

सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥

मन में भी सच है मुख में भी सच है ।

साचो दसटि साचा आकारु ॥

दृष्टि और सारा आकार भी सच्चा है ।

सचु वरतै साचा पासारु ॥

सच्चे पसारे में साच ही साच वरतता है ।

पारब्रह्मु जिनि सचु करि जाता ॥

प्रभु को जिसने सच करके जाना है

नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

वह दास सच्चे मालिक में मिल गया है।

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंगु किछु

जिसका रूप, शकल, निशान कोई नहीं

त्रिहु गुण ते प्रभ भिन ॥

वह मालिक तीनों गुणों से रहित है ।

तिसहि बुझाए नानका

उसको अपना आप बुझा देता है ।

जिखु होवै सु प्रसन्न ॥१॥

जिस ऊपर वह खुश होता है ।

असटपदी ॥

अविनासी प्रभु मन महि राखु ॥

न मरने वाले मालिक को मन में याद रखो ।

मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥

मनुष्य की प्रीति को त्याग दे ।

तिसते परै नाही किछु कोइ ॥

उस मालिक से दूर कुछ नहीं ।

सर्व निरंतरि एको सोइ ॥

भेद बिना सब में आप ही है ।

आपे बीना आपे दाना ॥

आप ही अन्दर बाहर की जाननहार है ।

गहिर गंभीर गहीरु सुजाना ॥

गाढ़ा, डूंगा, खजाना चतुर है ।

पारब्रह्म प्रमेशुर गोविंद ॥

दुनिया का मालिक प्रभु वेअन्त है ।

कृपा निधान दइआल बखसंद ॥

कृपा सागर बखशने को दयालू है ।

साध तेरे की चरनी पाउ ॥

मैं तेरे संतों की चरणी पड़ता हूँ ।

नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥

मेरे मन अन्दर यह बड़ा प्रेम है ।

मनसा पूरन सरना जोग ॥

मन की इच्छा पूरी करने वाला शरण योग्य है।

जो करि पाइआ सोई होगु ॥

जो जीव के हाथ ऊपर पा दिया है वह होता है।

हरन भरन जाका नेत्र फोरु ॥

एक आंख के फरकने में बनाता और नाश करता है

तिसका मंत्रु न जानै होरु ॥

उसके इरादे को और कोई नहीं जान सकता।

अनद रूप मंगल सद जाकै ॥

खुशी और आनंद जिसके घर में हैं

सरब थोक सुनीअहि घरि ताकै ॥

सारे पदार्थ उसके घर में हैं।

राज महि राजु जोग महि जोगी ॥

राजों में राजा योगियों में योगी है।

तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥

तपियों में तपी गृहस्थियों में गृहस्ती है ।

धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥

संतों ने स्मरण करके सुख पाया है ।

नानक तिसु पुरख का किनै

उस परमात्मा का किसी ने

अंतु न पाइआ ॥२॥

अन्त नहीं पाया ।

जा की लीला की मिति नाहि ॥

जिसके खेलों की कोई मर्यादा नहीं

सगल देव हारे अवगाहि ॥

उसका अन्त लेते हुये सारे देवते हार गये ।

पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥

पिता के जन्म का समय पुत्र क्या जान सकता है ।

सगल परोई अपुनै सूति ॥

सारी दुनिया उसने ताकत की रस्सी में परो रखी है

सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥

अच्छी अकल ज्ञान, ध्यान जिसको देता है

जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥

वह दासों का दास उसका नाम याद करता है ।

तिहु गुण महि जाकउ भरमाए ॥

जिसको तीनों गुणों में भरमा देता है

जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥

वह जन्मता, मरता आता, जाता है ।

ऊच नीच तिसके असथान ॥

नीचे ऊंचे सारे स्थान उसके बनाये हुये हैं ।

जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥

जैसे जराता है तैसे वह जान जाता है ।

नाना रूप नाना जाके रंग ॥

जिसके रूप रंग कई प्रकार के हैं ।

नाना भेख करहि इक रंग ॥

कई भेखों को बनाता एक रूप रहता है ।

नाना विधि कीनो बिसथारु ॥

कई प्रकार का पसारा पसरा है ।

प्रभु अविनासी एकंकारु ॥

वह बिना शकल ना मृत्यु होने वाला मालिक है ।

नाना चलित करे खिन माहि ॥

पल में अनेकों तमाशे बना देता है ।

पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥

सब स्थानों में रमा हुआ है ।

नाना विधि करि बनत बनाई ॥

अनेकों विधियों द्वारा संसार की बनत बनाई है ।

अपनी कीमति आपे पाई ॥

अपनी दुनिया की कीमत आप ही पाता है ।

सभ घट तिसके सभ तिसके ठाउ ॥

सारे स्थान और शरीर उसके ही हैं ।

जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥

मैं मालिक का नाम जप जप कर जीता हूँ ।

नाम के धारे सगले जंत ॥

सारे जीव नाम के आश्रय हैं ।

नाम के धारे खंड ब्रह्मंड ॥

सारे छोटे बड़े देश नाम के आश्रय हैं ।

नाम के धारे सिमृति वेद पुरान ॥

स्मृतियां, वेद, पुराण नाम के आश्रय हैं ।

नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥

ज्ञान, ध्यान सुनना नाम के आश्रय है ।

नाम के धारे आगास पाताल ॥

नीचा, ऊंचा स्थान नाम के आश्रय है ।

नाम के धारे सगल आकार ॥

सारा आकार ही नाम के आश्रय है ।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥

पुरियां और लोक सारे नाम के आश्रय हैं ।

नाम कै संगि उधरे सुनि सवन ॥

कानों से सुनकर नाम आश्रय तर गए ।

करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥

कृपा करके जिसको अपने नाम साथ लगाते ।

नानक चउथे पद महि

चौथे पद में पहुंच कर

सो जनु गति पाए ॥५॥

वह दास गति पाता है ।

रूप सति जाका सति असथानु ॥

जिसका रूप और स्थान भी सच्चा है

पुरखु सति केवल परधानु ॥

वह पुरुष एक साचा और बड़ा है।

करतूति सति सति जाकी बाणी ॥

जिसकी करनी और बाणी सच्ची है

सति पुरख सभ माहि समाणी ॥

वह सच्चा पुरुष सब में समाया हुआ है।

सति करमु जा की रचना सति ॥

उसका काम और रचना भी सच्ची है।

मूलु सति सति उत्पति ॥

प्रारम्भ भी सच्चा, पैदावार भी सच्ची है।

सति करनी निरमल निरमली ॥

जिसकी करनी पवित्र से पवित्र है।

जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥

जिसको समझावे उस को सब ठीक है ।

सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥

मालिक का सच्चा नाम सुखदाई है ।

बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥

हरि नाम और सच्चा भरोसा गुरु से मिलता है ।

सति बचन साधू उपदेस ॥

संतों का उपदेश और सच्चा बचन बलास ।

सति ते जन जाकै रिदै प्रवेस ॥

वह दास सच्चे हैं जिनके हृदय सच्च टिका हुआ है ।

सति निरति बूझै जे कोइ ॥

यदि कोई सच्च अच्छी तरह समझ ले

नाम जपत ताकी गति होइ ॥

नाम जपने से उसकी गति होगी ।

आपि सति कीआ सभु सति ॥

आप भी सच्चा और बनाया हुआ जगत भी सच्चा है

आपे जानै अपनी मिति गति ॥

अपनी मर्यादा की गति आप ही जानता है।

जिसकी सृष्टि सु करनेहारु ॥

जिसकी यह दुनिया वह आप ही करने वाला है।

अवर न बूझि करत वीचारु ॥

विचार करने से भी कोई नहीं समझ सकता।

करते की मिति न जानै कीआ ॥

करते की मर्यादा को जीव क्या जान सकता है

नानक जो तिसु भावै सोवरतीआ ॥७॥

जो उसको अच्छा लगता है वह ही होता है

बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥

जिन्होंने दर्शन किया वह आश्चर्य हो गए हैं।

जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥

जिन्हों ने समझा उन को मजा आया है ।

प्रभ कै रंगि राच जन रहे ॥

वह ही दास मालिक के रंग में रंगे हुये हैं ।

गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥

गुरु का हुक्म मान कर सारे पदार्थ दूँड लेते हैं ।

ओइ दाते दुख काटन हार ॥

वह दाते दुःखों के नाश करने वाले हैं ।

जाकै संगि तरै संसार ॥

उन के साथ मिल कर सारा संसार तर जाता है ।

जन का सेवकु सो वडभागी ॥

दासों का दास बड़े भागों वाला है ।

जन कै संगि एक लिवलागी ॥

दासों साथ मिल कर एक हरि में वृत्ति लगती है ।

गुन गोविंदु कीरतनु जनु गावै ॥

गोविंद के गुण कीर्तन दास गाता है ।

गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥

गुरु की कृपा से दास फल पाता है ।

सलोक ॥

आदि सचु जुगादि सचु

पहले भी सच्चा और युगों के आदि में भी सच्चा

हैमि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥

अब भी सच्चा है आगे भी सच्चा होगा ।

असटपदी ॥

१७

चरन सति सति परसनहार ॥

मालिक के चरण सच्चे और छूहने वाले भी सच्चे हैं ।

पूजा सति सति सेवदार ॥

पूजा भी सच्ची और पूजा करने वाले भी सच्चे हैं ।

दरसन सति सति पेखनहार ॥

दर्शन भी सच्चा और देखने वाले भी सच्चे हैं ।

नामु सति सति धिआवनहार ॥

नाम भी सच्चा है स्मरण करने वाला भी सच्चा है ।

आपि सति सति सभ धारी ॥

आप भी सच्चा और दुनिया भी सच्ची है ।

आपे गुण आपे गुणकारी ॥

आप ही गुणों वाला और आप ही गुणकारी है ।

सबदु सति सति प्रभु बकता ॥

शब्द भी सच्चा और यश करने वाला भी सच्चा है ।

सुरति सति सति जसु सनता ॥

सुरति(ध्यान)भी सच्चा और कीर्तनका सरोता भी सच्चा है ।

बुभनहार कउ सति सभ होइ ॥

ज्ञान वाले के लिये सब सच ही सच है ।

नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥

वह मालिक सच्चा ही सच्चा है ।

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥

जिसने सबे रूप वाले को मन में मान लिया है ।

करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥

उसने करने कराने वाले का मूल पछान लिया है ।

जाकै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥

जिस्के मन में मालिक का भरोसा आ गया है

ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥

उसके मन में तत ज्ञान प्रकट हो गया है ।

भै ते निरभउ होइ बसाना ॥

भय से बिना निरभय होकर जगत में बसता है ।

जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना॥

यहां से पैदा हुआ उसी में समा गया ।

बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥

एक वस्तु में जब दूसरी वस्तु मिला दी

ताकउ भिन न कहना जाई ॥

उसको फिर भिन्न नहीं कहा जाता ।

बूझै बूझनहारु विवेक ॥

कोई विचार वाला ही समझ सकता है ।

नाराइण मिले नानक एक ॥२॥

एक प्रभु से वह रत्न मिल गये ।

ठाकुर का सेवकु आगिआकारो ॥

मालिक का दास आज्ञा मानने वाला है ।

ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥

मालिक का दास पूजा में लगा रहता है ।

ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥

मालिक के दास के मन में भरोसा होता है ।

ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥

मालिक के दास की रीति साफ सुथरी है ।

ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥

मालिक को दास सदा साथ जानता है !

प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥

मालिक का दास नाम रंगण में रहता है ।

सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥

दास को मालिक पालने वाला है ।

सेवक की राखै निरंकारा ॥

दास की इज्जत मालिक रखता है ।

सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥

सेवक वह ही है जिस ऊपर मालिक दया करे ।

नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ।३।

उस दास को मालिक श्वास २ याद रखता है ।

अपने जन का परदा ढाकै ॥

अपने दास का परदा छुपाता है ।

अपने सेवक की सरपर राखै ॥

अपने दास की इज्जत रखता है ।

अपने दास कउ देइ वडाई ॥

अपने दास की शलाघा करता है ।

अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥

अपने दास को नाम जपाता है ।

अपने सेवक की आपि पति राखै ॥

अपने दास की आप इज्जत रखता है ।

ताकी गति मिति कोइ न लाखै ॥

उसकी गति मिति कोई नहीं जान सकता ।

प्रभ के सेवक कउ को न पहुँचै ॥

मालिक के दास की कोई बराबरी नहीं कर सकता ।

प्रभ के सेवक ऊँच ते ऊँचे ॥

मालिक के दास ऊँचे से ऊँचे हैं ।

जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥

जिसको प्रभु ने अपनी सेवा में लाया है

नानकसोसेवकुदहदिसिप्रगटाइआ॥४॥

वह दास सब ओर प्रसिद्ध हो गया है ।

नीकी कीरी महि कल राखै ॥

यदि अपनी शक्ति एक छोटी कीड़ी में रख दे

भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥

तब वह करोड़ों लाखों फौजों को राख कर देती है ।

जिसका सासु न काढत आपि ॥

जिसका स्वास आप न निकालना चाहे

ताकउ राखत दे करि हाथ ॥

उसको हाथ दे कर राख लेता है

मानस जतन करत बहु भाति ॥

मनुष्य कई प्रकार के यत्न करता है

जिसके करतब बिरथे जाति ॥

उसकी सब चतुराईयें व्यर्थ जाती हैं ।

मारै न राखै अवरु न कोइ ॥

मालिक से बिना मारने वाला कोई नहीं

सरब जीआ का राखा सोइ ॥

सब जीवों का राखा वह आप है ।

काहे सोच करहि रे प्राणी ॥

हे प्राणी ! तू क्यों सोचें सोचता है ।

जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥

जो बड़ा आश्चर्य है उसको जप ।

बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥

मुड़ र कर उस मालिक को जपो ।

पी अमृतु इहु मनु तनु धपीऐ ॥

अमृत पी कर इस मन, तन को तृप्त कर लो ।

नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥

जिस गुरमुख ने नाम रत्न पा लिया है

तिसु किछु अवरु नाही दिसटाइआ ॥

उसको और कुछ नहीं दृष्टि आया ।

नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥

रूप, रंग, धन उसका नाम ही नाम है ।

नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥

नाम ही सुख और नाम ही साथ जाता है ।

नाम रसि जो जन तृप्ताने ॥

जो दास नाम रस से तृप्त हो गए हैं

मन तन नामहि नामि समाने ॥

वह तन, मन करके नाम में ही समा गए हैं ।

ऊठत बैठत सोवत नाम ॥

उठते, बैठते, सोते हुए नाम जपना

कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥

मालिक के दास का हर समय यह ही काम है ।

बोलहु जसु जिहवा दिन राति ॥

जिह्वा से दिन रात मालिक का यश कहो

प्रभि अपने जन कीनी दाति ॥

यह ही दात मालिक ने अपने दासों ऊपर की है ।

करहि भगति आत्म कै चाह ॥

प्रेम से मन की खुशी करके भक्ति करते हैं ।

प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥

वह अपने मालिक से ही मिले रहते हैं ।

जो होआ होवत सो जानै ॥

जो होता है उसको ठीक हुआ जानते हैं ।

प्रभ अपने का हुक्म पछानै ॥

अपने मालिक का हुक्म पहचानते हैं ।

तिसकी महिमा कउन बखानउ ॥

उस दास की उपमा क्या कहें

तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥

उसका एक गुण भी मैं नहीं कह सकता ।

आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥

जो सदा मालिक के पास रहते हैं

कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥

वह ही पूरे महां पुरुष हैं ।

मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥

हे मेरे मन ! उनकी ओट ले

मनु तनु अपना तिन जन देहि॥

अपना मन, तन उस दास को अर्पन कर दे ।

जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥

जिस दास ने अपना मालिक पछान लिया है

सो जनु सरब थोक का दाता ॥

वह दास सब पदार्थों का दाता है ।

तिसकी सरनि सरब सुख पावहि ॥

उसकी शरण जाकर सारे सुख पा लिए हैं ।

तिसके दरसि सभ पाप मिटावहि ॥

उसके दर्शन से सारे पाप नाश हो जाते हैं ।

अवर सिआनप सगली छाडु ॥

और सारी चतुराई त्याग दे

तिसु जन की तू सेवा लागु ॥

उस दास की सेवा में ततपर हो जाओ ।

आवनु जानु न होवी तेरा ॥

तब तेरा आना जाना नहीं होगा ।

नानकतिसुजनकेपूजहुसदपैरा ॥८॥१७॥

उस दास के सदा चरण पूजो ।

सलोक ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ

जिसने चन्चे प्रभु को जाना है

सतिगुर तिसका नाउ ॥

उसका नाम गुरु है ।

तिस कै संगि सिखु उधरै

उसके साथ सिक्ख तर जाते हैं

नानक हरि गुन गाउ ॥१॥

हरि गुण गा कर ।

असटपदी ॥

सतिगुर सिख की करै प्रतिपाल ॥

गुरु सिक्ख की पालना करता है ।

सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥

गुरु दास ऊपर सदा दयालू है ।

सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥

गुरु सिक्ख की खोटी अकल की मैल धोता है ।

गुरबचनी हरिनामु उचरै ॥

फिर सिक्ख गुरु बचनां द्वारा हरि नाम कहता है ।

सतिगुर सिख के बंधन काटै ॥

गुरु सिक्ख के बन्धन काटता है ।

गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥

गुरु का सिक्ख विकारों से दूर हो जाता है ।

सतिगुरु सिख कउ नामु धनु देइ॥

गुरु सिख को नाम धन देता है

गुर का सिखु बडभागी हे ॥

बह गुरु का सिख बड़े भागों वाला है ।

सतिगुरु सिखका हलतु पलतु सवारै॥

गुरु सिख का लोक परलोक स्वार देता है ।

नानक सतिगुरु सिख कउ

गुरु सिख को

जीअ नालि समारै ॥१॥

जीव साथ सम्भाल रखता है ।

गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥

जो सेवक गुरु के घर आकर रहे ।

गुर की आगिआ मन महि सहै ॥

गुरु की आज्ञा मानता रहे ।

आपस कउ करि कछु न जनावै॥

अपने आप को कुछ भी करके ना जनावे
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥

मालिक का नाम सदा हृदय में गाता रहे ।

मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥

अपना मन गुरु के पास बेव देवे

तिसु सेवक के कारज रासि ॥

उस दास के कार्य संवर जाते हैं ।

सेवा करत होइ निहकामी ॥

जो सेवा करता है कोई वस्तु नहीं मांगता

तिस कउ होत परापति सुआमी ॥

उसको मालिक आप ही मिल जाता है ।

अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥

मालिक जिस ऊपर अपनी कृपा करे

नानकसो सेवकु गुरकी मति लेइ ॥२॥

वह दास गुरु की अकल ले लेता है ।

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥

जिस ऊपर आवश्यक गुरु का मन मान जावे
सो सेवकु परमेश्वर की गति जानै ॥

वह दास ईश्वर की गति को जान जाता है
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥

वह गुरु है जिसके अन्दर हरि नाम है ।

अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥

मैं अनेक बार उस से कुर्बान जाता हूँ ।

सरब निधान जीअ का दाता ॥

सब का खजाना और जीवों का दाता है ।

आठ पहर पारब्रह्म रंगिराता ॥

जो सदा हरि के रंग में रत्ता है ।

ब्रह्म महि जनु जन महि पारब्रह्म ॥

प्रभु में दास और दास में प्रभु है

एकहि आपि नही कछु भरमु ॥

एक आप ही है और भिन्न भेद नहीं ।

सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥

हजारों चतुराईयां करके नहीं पाया जाता

नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥

ऐसा गुरु बड़े भागों से मिलता है ।

सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥

गुरु का दर्शन फल वाला है

परसत चरन गति निरमल रीति ॥

जिस को देखते ही निर्मल हो जाता है ।

भेटत संगि राम गुन रवे ॥

साध संगत मिलने से राम गुण गाता है

पारब्रह्म की दरगह गवे ॥

हरि की दरगाह में जा पहुंचता है ।

सुनि करि बचन करन आधाने ॥

उन के बोल सुन कर कान तृप्त हो जाते हैं ।

मनि संतोखु आतम पतीआने ॥

मन को समतोष आया और भरोसा आ गया ।

पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥

पूरे गुरु का उपदेश नाश होने वाला नहीं ।

अमृत दृसटि पेखै होइ संत ॥

जिसकी अच्छी दृष्टि से जीव संत बन जाता है ।

गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥

गुण बेअन्त हैं जिन की कीमत नहीं पाई जाती ।

नानक जिसु भावै

जिसको चाहता है

तिसु लए मिलाइ ॥४॥

साथ मिला लेता है ।

जिहवा एक उसतति अनेक ॥

जिहवा एक है बड़ाई बहुत है ।

सति पुरख पूरन बिबेक ॥

सच्च रूप और ज्ञान का भी पूरा है ।

काहू बोल न पहुचत प्राणी ॥

किसे बोल द्वारा उसको पहुंच नहीं सकता ।

अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥

मालिक पास जाना कठिन है इन्द्रियों से भी परे हैं ।

निराहार निरवैर सुखदाई ॥

दुःख करना, वैर उस में नहीं हैं ।

ताकी कीमति किनै न पाई ॥

उस का मूल्य (कीमत) किसी ने नहीं पाया ।

अनिक भगत बंदन नित करहि॥

अनेकों मनुष्य उसकी पूजा करते हैं

चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥

चरण कमलों को हृदय में याद रखते हैं।

सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥

मैं गुरु से सदा बलिहार जाता हूँ।

नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने॥५॥

जिसकी कृपा से प्रभु का नाम जपता हूँ।

इहु हरि रसु पावै जनु कोई ॥

यह हरि रस कोई बिरला ही पाता है।

अमृतु पीवै अमरु सो होइ ॥

जो अमृत पीता है वह अमर हो जाता है।

उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥

उस मनुष्य का कभी नाश नहीं होता।

जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥

गुणों का खजाना जिसके अन्दर प्रकट होता है ।

आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥

जो सदा हरि का नाम लेता रहे

सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥

अपने दास को सच्चा उपदेश देता रहे ।

मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥

मोह माया का जिसको लेप नहीं

मन महि राखै हरि हरि एकु ॥

मन में एक हरि नाम को रखता है ।

अंधकार दीपक परगासे ॥

जो अन्धेरे में चानण करता है

नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥

ऐसे महा पुरुष से भ्रम, मोह दूर हो जाता है ।

तपति माहि ठाढि वरताई ॥

तपत हृदय में ठंड डाल दी ।

अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥

हे भाई ! आनंद हो गया है और दुःख चले गये हैं

जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥

जन्म मरण के संशय (भ्रम) दूर हो गये हैं ।

साधू के पूरन उपदेसे ॥

उस साधूगुरु के उपदेश से

भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥

भय दूर हो गया निर्भय होकर बसते हैं ।

सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥

मन से सारे रोग नाश हो गये ।

जिसका सा तिनि किरपा धारी ॥

जिसका दास था उसने ही कृपा की ।

साध संगि जपि नामु मुरारी ॥

साध संगत करके हरि का नाम जपा है ।

थिति पाई चुके भ्रम गवन ॥

आराम पाया भ्रम के चक्कर दूर हो गये ।

सुनि नानक हरि हरि जसु सवन ॥७॥

कानों से हरि का यश सुन र कर ।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥

शक्ल वाला और ना शक्ल वाला आप ही है ।

कलाधारि जिनि सगली मोही ॥

जिसने शक्ति से सब को मोह लिया है

अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥

अपने खेल आप ही बनाए हैं ।

अपुनी कीमति आपे पाए ॥

अपनी कीमत आप ही पाता है ।

हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥

हरि के बिना दूसरा और कोई नहीं ।

सब निरंतरि एको सोइ ॥

लगातार सब में एक वह ही है ।

ओति पोति रविआ रूप रंग ॥

आश्चर्य रूप रंग वाला ताणे पेटे की तरह मिला है ।

भए प्रगास साध कै संग ॥

साधू का संग करके यह प्रकाश होता है ।

रचि रचना अपनी कल धारी॥

सारी दुनिया बनाकर उसमें अपनी कला रखी है ।

अनिक बार नानक बलिहारी॥८॥१८॥

मैं अनेक बार उस पर बलिहार जाता हूँ ।

सलोक ॥

साथि न चालै बिनु भजन

भजन बिना कुछ नहीं साथ जाता

बिखिआ सगली छारु ॥

सारी वस्तु राख जैसी है ।

हरि हरि नामु कमावना

हरि के नाम की कमाई करो

नानक इहु धनु सारु ॥१॥

यह ठीक अच्छा (श्रेष्ठ) धन है ।

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु॥

संतों के साथ मिल कर कुछ विचार करो ।

एकु सिमरि नाम आधारु ॥

एक को याद करके नाम का ही आश्रय लो ।

अवरि उपाव सभि मीत विसारहु ॥

हे भाई ! और सारे यत्न भूल जाओ

चरन कमल रिद महि उरिधारहु ॥

हरि के चरण कमल हृदय में धार रखो ।

करन कारन सो प्रभु समरथु ॥

वह मालिक सब काम करने कराने को समरथ है ।

टडु करि गहहु नामु हरि वथु ॥

प्रभु की नाम रूपी वस्तु को पक्का करके पकड़ लो ।

इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥

हरि धन इकट्ठा करके भागों वाले हो जाओ ।

संत जना का निरमल मंत ॥

यह प्यारे संतों की नेक सलाह है ।

एक आस राखहु मन माहि ॥

एक की आशा मन में रखो ।

सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥

फिर सारे रोग नाश हो जायेंगे ।

जिसु धन कउ चारि कुंठ उठि धावहि ॥

जिस धन के लिए चारों ओर उठ भागता है

सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥

वह धन हरि की सेवा से मिलता है ।

जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥

मित्र ! जो सुख तुम नित्य सांगते हो

सो सुख साधू संगि परीति ॥

वह सुख संतों से प्रीति करने पर मिलेगा ।

जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥

जिस बड़ाई के लिए तुम भला कार्य करते हो

सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥

वह बड़ाई हरि की शरण लेने से मिलती है ।

अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥

अनेकों यत्नों से रोग नहीं जाता ।

रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥

हरि के नाम की औषधि खाने से रोग चला जाता है

सरब निधान महि हरि नामु निधानु ॥

सब अच्छी वस्तुओं से हरि नाम निधि अच्छी है

जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥

हरि नाम को जप कर दरगाह में प्रवान हो जाओगे

मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥

हरि के नाम से इस मन को ज्ञान कराओ

दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥

तो मन हर ओर भागता फिरता टिक जाएगा ।

ताकउ बिघनु न लागै कोइ ॥

उसको कोई बिघन नहीं लग सकता

जाकै रिदै बसै हरि सोइ ॥

जिसके मन में हरि का नाम बसता है ।

कलि ताती ठाढा हरि नाउ ॥

यह युग गर्म और एक हरि नाम शीतल है ।

सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥

मालिक को जप जप कर सुख प्राप्त करो ।

उभ बिनसै पूरन होइ आस ॥

भय मिट कर सभ आशाएं पूरी हो जाएंगी ।

भगति भाइ आतम परगास ॥

प्रेम भक्ति द्वारा मन अन्दर प्रकाश होता है

तितु घरि जाइ बसै अविनासी ॥

फिर जीव ना मृत्यु वाले के घर में जा बसता है ।

कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥

वहां यमों की रस्सी भी काटी जाती है ।

ततु बोचारु कहै जनु साचा ॥

सच्चा मनुष्य तत्व वस्तु का विचार करता है ।

जनमि मरै सो काचो काचा ॥

वह मूल से ही कच्चा है जो जन्मता और मरता है

आवांगवनु मिटै प्रभ सेव ॥

हरि की सेवा से जन्म मरण नाश हो जाता है ।

आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥

अपैना आप छोड़ कर गुरुदेव की शरण लो

इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥

इस प्रकार यह अमोलक जन्म का उधार होता है ।

हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥

हरि को याद कर जो प्राणों का आश्रय है ।

अनिक उपाव न छूटनहारे ॥

और यत्नों से जीव नहीं छूट सकता ।

सिमृति सासत वेद बीचारे ॥

स्मृतियों, शास्त्र और वेद भी पढ़ कर देख लिए हैं ।

हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥

मन लगा कर हरि की भक्ति करो ।

मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥

फिर तुम मन इच्छे फल ढूँढ लोगे ।

संगि न चालसि तेरे धना ॥

यह धन तेरे साथ नहीं जाना

तू किआ लपटावहि मूरख मना ॥

हे मूर्ख मना ! तू क्यों लपटता है ।

सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥

पुत्र, मित्र, परिवार, स्त्री

इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥

बता ! इन से कौनसा सुख मिला है ?

राज रंग माइआ बिसथार ॥

राज की खुशीयां और माया के खिलारे

इन ते कहहु कवन छुटकार ॥

बता ! इन से किसी को छुटकारा मिला है ।

असु हसती रथ असवारी ॥

घोड़े, हाथी और रथों की सवारी

भूठा डंफु भूठु पासारी ॥

यह सब पाखंड का भूठा प्रपंच है ।

जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥

पराया मनुष्य जिसने दिये हैं उसको नहीं जानता ।

नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥

अन्त को यह नाम को भुला कर पश्चाताप करता है

गुर की मति तूं लेहि इश्राने ॥

हे मूर्ख ! तूं गुरु की मति ले

भगति बिना बहु दूबे सिश्राने ॥

भक्ति बिना बड़े सियाने दूब गए ।

हरि की भगति करहु मन मीत ॥

मित्रो ! मन अन्दर हरि की भक्ति करो

निरमल होइ तुमारे चीत ॥

तब तुम्हारा चित्त साफ हो जाएगा ।

चरन कमल राखहु मन माहि ॥

मन में चरण कमलों को रखो

जनम जनम के किलबिख जाहि ॥

तुम्हारे जन्मों के पाप दूर हो जायेंगे ।

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥

हरि का नाम जपो और दूसरों को जपाओ ।

सुखमनी साहिब (८२६)

सटीक

सुनत कहत रहत गति पावहु ॥

सुनने, कहने और रहने वाले गति पाते हैं ।

सारभूत सति हरि को नाउ ॥

सब से सार (तत्त्व) निकाला हरि का नाम है ।

सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥

शीतल मन से हरि के गुण गाओ

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥

गुण गाने से तेरी मैल उतर जायेगी ।

बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥

फैली हुई हंगता की वस्तु नाश हो जायेगी ।

होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥

फिर भय से रहित होकर सुख से बस जाएगा ।

सासि ग्रासि हरिनामु समालि ॥

स्वास् २ हरि का नाम स्मरण कर ।

सुखमनी साहिब (८३०)

सटीक

छाडि सिआनप सगली मना ॥

हे मन ! सारी चतुराई त्याग दे ।

साध संगि पावहि सचु धना ॥

संत संग करके सच्चा धन पायेंगा ।

हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥

हरि नाम का धन इकत्र करके व्यवहार करो ।

ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥

यहां सुख और प्रलोक में भी जय २ कार होगी ।

सरब निरंतरि एको देखु ॥

सब में लगातार निरंकार को देख

कहु नानक जाकै मसतकि लेखु ॥७॥

जिसके माथे पर अच्छे लेख हों ।

एको जपि एको सालाहि ॥

सुखमनी साहिब (८३१)

सटीक

एकु सिमरि एको मन आहि ॥

एक को ही स्मरण करके एक को ही मन में बसाओ ,

एकस के गुन गाउ अनंत ॥

एक के ही वेअन्त गुण गाया करो ।

मनि तनि जापि एक भगवंत

मन, तन करके एक प्रभु को जपो ।

एको एकु एकु हारि आपि ॥

ठीक विचार एक ही ईश्वर है ।

पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥

सब में फैला हुआ एक ही परी पूर्ण है ।

अनिक बिसथार एक ते भए ॥

सब पसारे उस एक के ही हैं ।

एकु अराधि पराछत गए ।

मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥

मन तन अन्दर एक मालिक रत्ता हुआ है ।

गुर प्रसादि नानक इकु जाता । ८।१६।

गुरु कृपा द्वारा एक को जान लिया है ।

सलोक ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ

हे मालिक ! मैं फिरता फिरता आया हूँ

परिआ तउ सरनाइ ॥

और आपकी शरण आ गिरा हूँ ।

नानक की प्रभ बेनती

मेरी यह प्रार्थना है

अपनी भगती लाइ ॥१॥

कि सुझे अपनी भक्ति में लगा लो ।

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥

हे मालिक ! मांगता सेवक यह दान मांगता है

करि किरपा देवहु हरि नामु ॥

दयालता करके अपना नाम बख़्शो ।

साध जना की मागउ धूरि ॥

एक तो संतों की चरण धूड़ मांगता हूँ

पारब्रह्म मेरी सरधा पूरि ॥

हे प्रभु ! मेरी यह लोड़ पूरी करो ।

सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥

मैं सदा आपके गुण गाता रहूँ

सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥

हे मालिक ! स्वास स्वास तुझे ध्याता रहूँ ।

चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥

तुम्हारे चरण कमलों से प्रीति लग जाय ।

भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥

नित नित मालिक की भक्ति करूँ ।

एक ओट एको आधारु ॥

मेरी एक ही ओट और आश्रय है ।

नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥

तत्त्व सार मालिक का नाम मांगता हूँ ।

प्रभ की दृसटि महा सुख होइ ॥

मालिक की कृपा दृष्टि से बड़ा सुख है ।

हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥

इस हरि रस को कोई विरला ही पाता है ।

जिन चाखिआ से जन तृपताने ॥

जिन्होंने चाखा है वह तृप्त हो गये हैं ।

सुखमनी साहिब (८३५)

सटीक

पूरन पुरख नही डोलाने ॥

बहु पुरुष कभी डोलते नहीं हैं

सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥

प्रभु के आनंद से लवा लब भरे हुए हैं ।

उपजै चाउ साध कै संगि ॥

साध संगत करके यह चाव प्रकट होता है ।

परे सरनि आन सभ तिआगि ॥

और सब छोड़ कर मालिक को शरण पड़ जाओ ।

अंतरि प्रगास अनदिनु लिवलागि ॥

रात दिन मन लगने से अन्दर प्रकाश है ।

बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥

मालिक को जप कर बड़े भागों वाले बन गए हैं ।

नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥

नाम में रंगे हुआ को सुख होता है ।

सेवक की मनसा पूरी भई ॥

दास की आवश्यकता पूरी हो गई है ।

सतिगुर ते निरमल मति लई ॥

गुरु से अच्छी बुद्धि ले ली है ।

जनकउ प्रभु होइओ दइआलु ॥

दास पर मालिक दयालु हुआ

सेवकु कीनो सदा निहालु ॥

दास को सदा प्रसन्न कर दिया ।

बंधन काटि मुक्ति जनु भइआ ॥

बन्धन काटे गये दास छूट गया

जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥

जन्म मरण का दुःख भ्रम चला गया ।

इछ पुं नी सरधा सभ पूरी ॥

सब आवश्यकतायें (सुराहें) पूरी हो गई ॥

सुखमनी साहिब (८३७)

सटीक

रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥

जो सारे संसार में मिला है वह मेरे साथ है ।

जिसका सा तिनि लीआ मिलाइ ॥

जिसका था उसने साथ मिला लिया है ।

नानक भगती नामि समाइ ॥३॥

मैं मालिक की भक्ति और नाम से मिला हूँ ।

सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥

वह क्यों भूले जो की हुई कमाई नहीं गंवाता ।

सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥

वह क्यों भूले जो किया काम जानता है ।

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥

वह क्यों भूले जिसका सब कुछ दिया हुआ है ।

सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥

वह क्यों भूले जो जीवों को जीवन दाव देता है ।

सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥

वह क्यों भूले जो आग से बचाए रखता है ।

गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥

गुरु कृपा से कोई बिरला ही देखता है ।

सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥

वह क्यों भूले जो विषय (जहर) से निकाल लेता है ।

जनम जनम का दूटा गाढै ॥

जन्मों २ के दूटे को साथ जोड़ लेता है ।

गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥

पूरे गुरु से हमें इस तत (बात) का पता चला है ।

प्रभु अपना नानक

अपने मालिक को

जन धिआइआ ॥४॥

सुखमनी साहिब (८३६)

सटीक

साजन संत करहु इहु कामु ॥

हे मित्रो संत जनों ! यह शुभ काम करो

आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥

और सब धन्धे छोड़ कर एक हरि नाम जपो ।

सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥

मन, तन से सिमर कर सुख पाओ ।

आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥

आप भी जपो औरों को भी जपाओ ।

भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥

प्रेम भक्ति द्वारा संसार से तर जाता है ।

बिनु भगती तनु होसी छारु ॥

भक्ति बिना शरीर राख हो जाता है ।

सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥

सब मुक्तियों और सुख का खजाना नाम है ।

बूडत जात पाए बिसामु ॥

डूबता जाता आराम पा लेता है ।

सगल दूख का होवत नासु ॥

सब दुःखों का नाश हो जाता है ।

नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥

गुणों के खजाने प्रभु का नाम जपो ।

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥

प्रीति पैदा हुई मन में प्रेम रस का चाव है

मन तन अंतरि इही सुआउ ॥

मन, तन अन्दर यही प्रयोजन है ।

नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥

आंखों से दर्शन करके सुख होता है ।

मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥

रुतों के पग धोकर मन खुश होता है ।

भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥

भक्तों, सेवकों के मन, तन अन्दर आनंद है ।

विरला कोऊ पावै संगु ॥

कोई विरला ही साध संगत को पाता है ।

एक बसतु दीजै करि महिआ ॥

हे मालिक ! कृपा करके एक वस्तु बरखा

गुर प्रसादि नामु जपि लहिआ ॥

गुरु कृपा द्वारा मैं नाम को जपता रहूँ ।

ताकी उपमा कही न जाइ ॥

उसकी बड़ाई कही नहीं जाती ।

नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥

वह सब में मिला हुआ है ।

प्रभ बखसंद दीन दहिआल ॥

गरीबों को दयालू मालिक बखशन वाला है ।

भगति वल्ल सदा किरपाल ॥

भक्तों का प्यारा सदा कृपालू है ।

अनाथ नाथ गोविंद गुपाल ॥

गरीबों का मालिक दुनिया को जानने वाला है ।

सब घटा करत प्रतिपाल ॥

सब जीवों की पालना करता है ।

आदि पुरख कारण करतार ॥

मालिक सब कामों को आदि से करता आया है ।

भगत जना के प्रान अधार ॥

भक्त जनों के मन का आश्रय है ।

जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥

जो जपता है वह पवित्र हो जाता है ।

भगति भाइ लावै मन हीत ॥

प्रेम भक्ति द्वारा जो मन की प्रीति लगाता है ।

हम निरगुनीआर नीच अजान ॥

हम निगुणे, नीच और बेसमझ हैं ।

नानक तुमरी सरनि

आप की शरण आए हैं

पुरख भगवान ॥७॥

हे पूर्ण भगवान !

सब बैकुंठ मुक्ति मोख पाए ॥

सारे सुख और मुक्तियें पा ली हैं

एक निमख हरि के गुन गाए ॥

जिसने थोड़ा समय हरि गुणों को गाया है ।

अनिक राज भोग बढिआई ॥

अनेकों राज के भोग और बड़ाइयें पाई हैं ।

हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥

जिसके मन को हरि नाम की कथा अच्छी लगी है ।

बहु भोजन कापर संगीत ॥

उसने बहुत खाने, वस्त्र, राग पा लिए हैं

रसना जपती हरि हरि नीत ॥

जिसकी जिह्वा नित्य ही हरि जपती है ।

भली सु करनी सोभा धनवंत ॥

उन की कार भली और धनवान होकर शोभा पाते हैं

हिरदै वसे पूरन गुरमंत ॥

जिसके मन में गुरु का पूरा उपदेश बसता है ।

साध संगि प्रभ देहु निवास ॥

हे मालिक ! साध संगत में वास दो ।

सर्व सुख नानक परगास ॥८॥२०॥

उन को सब सुखों का प्रकाश हो जाता है ।

सलोक ॥

सरगुन निरगुन निरंकार

सर्गुण और निर्गुण निरंकार आप ही है

सुन समाधी आपि ॥

अडोल समाधी लगाने वाला भी आप ही है ।

आपन कीआ नानका

अपने किये काम को

आपे ही फिरि जापि ॥१॥

वह आप ही याद रखता है ।

असटपदी ॥

जब आकारु इहु कछु न दसटेता ॥

जब जगत का आकार कुछ नजर नहीं आता था

पाप पुंन तब कह ते होता ॥

उस समय पाप पुन्न किस से होता था ।

जब धारी आपन सुंन समाधि ॥

जब इसने अफुर समाधि लगाई हुई थी

तब वैर विरोध किसु संगि कमाति ॥

तब वैर विरोध किस से कमाता था ।

जब इसका बरनु विहनु न जापता ॥

जब इसका रंगु रूप नहीं दीखता था

तब हरख सोग कहु किसहि बिआपता ॥

तब खुशी, शोक किसको आ लगता था ।

जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥

जब यह अपने आप में हरि ही था

तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥

तब मोह और भ्रम किसको आ दबाता था ।

आपन खेलु आपि वरतीजा ॥

अपने खेलों में आप ही वरतता है ।

नानक करनै हारु न दूजा ॥१॥

जगत को रचने वाला और कोई नहीं ।

जब होवत प्रभ केवल धनी ॥

जब एक मालिक ही मालिक आप बैठा था

तब बंध मुक्ति कहु किस कउ गनी ॥

तब बंधा हुआ और मुक्त फिरता किसको गिनाजाताथा

जब एकहि हरि अगम अपार ॥

जब अंगम बड़ा हरि आप ही आप था

तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥

तब नरक स्वर्ग में कौन गोते खाता था ।

जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥

जब सहज स्वाभावक आप बिना आकार था

तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ॥

बताओ तो ! तब गर्मी सदीं कहां थी

जब आपहि आपि अपनी जोति धरै॥

जब आप ही आप सब में ज्योति रखता था ।

तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥

तब कौन डरता और कौन निडर होकर फिरता था ।

आपन चलित आपि करनैहार ॥

अपने तमाशे आप करने वाला है ।

नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥

उस अगम मालिक के बिना और कोई नहीं

अविनासी सुख आपन आसन ॥

अपने स्थान में ही ना नाश होने वाला सुख होता है ।

तह जनम मरन कहु कहा विनासन ॥

बताओ वहां जन्म मरन और नाश होना कहां है ।

जब पूरन करता पाप सोइ ॥

जब पूरा रखने वाला मालिक नाम ही है ॥

तब जम की आस कहतु किमु दै ॥

बताओ तो सबों का भय कियाको दीसा है ॥

जब अविगत अगोचर प्रथ पद ॥

जब वह अडोल और बेअन्त हर जगह एक ही है ॥

तब चित्रगुप्त किमु पूछत लेखा ॥

तब चित्र गुप्त किस से लेखा लेता है ॥

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाध ॥

जब बेअन्त अगोचर साइया रहित आप सात्त्विक है ॥

तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥

तब खुला फिरता और रस्से में बंधा हुआ कौन है ॥

आपन आप आप ही अचरज ॥

अदभुत रूप अपने आप में आप ही है ॥

तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ॥

बताओ तो ! तब गर्मी सदी कहां थी

जब आपहि आपि अपनी जोति धरै॥

जब आन ही आप सब में ज्योति रखता था ।

तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥

तब कौन डरता और कौन निडर होकर फिरता था ।

आपन चलित आपि करनैहार ॥

अपने तमाशे आप करने वाला है ।

नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥

उस अगम मालिक के बिना और कोई नहीं

अविनासी सुख आपन आसन ॥

अपने स्थान में ही ना नाश होने वाला सुख होता है ।

तह जनम मरन कहु कहा विनासन ॥

बताओ तहां जन्म मरन और नाश होना कहां है ।

जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥

जब पूरा रचने वाला मालिक आप ही है ।

तब जम की त्रास कहहु किसु होइ॥

बताओ तो यमों का भय किसको होता है ।

जब अविगत अगोचर प्रभु एका ॥

जब वह अडोल और बेअन्त हर जगह एक ही दीखे

तब चित्रगुप्त किसु पूछत लेखा ॥

तब चित्र गुप्त किस से लेखा लेता है ।

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे॥

जब बेअन्त अगोचर माइया रहित आप मालिक है

तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे॥

तब खुला फिरता और रस्से में बंधा हुआ कौन है ।

आपन आप आप ही अचरजा ॥

अद्भुत रूप अपने आप में आप ही है ।

सुखमनी साहिब (८५०)

सटीक

नानक आपन रूप आपही उपरजा ॥३॥

वह अपना रूप आप ही पैदा करता है ।

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥

जब पावन अकाल पुरख आप ही इज्जत वाला है

तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥

तब बताओ तो मैल बिना वह क्या धोता है ।

जह निरंजन निरंकार निरवान ॥

जब सुद्ध आकार बिना माया बिना आप है

तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥

तब किसको मान और किसको धक्के पड़ते हैं ।

जह सरूप केवल जगदीस ॥

जब जगत मालिक एक रूप में आप ही है

तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥

तब बसाओ किसी को कोई छल (दोष) लगता है ।

सुखमनी साहिब (८५१)

सटीक

जह जोति सरूपी जोति संगिसमावै॥

जब ज्योति वाला ज्योति के साथ समाता है

तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥

उस समय किसको भूख लगती है और कौन तृप्त है।

करन करावन करनैहारु ॥

करने वाला आप ही करने कराने को सामर्थ है

नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥

उस करते का कोई अन्त नहीं है ।

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥

जब अपनी शोभा अपने साथ ही बनाई है ।

तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई॥

तब माता, पिता, मित्र, पुत्र, भाई कौन था ।

जह सरब कला आपहि परबीन॥

जहाँ सब शक्तियों के आप ही धरु था

सुखमनी साहिब (८५२)

सटीक

तह वेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥

वहां वेद, कितेब कोई किसी ने देखा था ।

जब आपन आपु आपि उरिधारै ॥

जब अपने आप को आप ही हृदय में धारता था ।

तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥

तब क्या कोई बुरी अच्छी बात को विचारता था ।

जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥

जब आप ही ऊंचा और आप ही निकट था

तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

तब वहां मालिक और दास कोई कहां था ।

विसमन विसम रहे विसमाद ॥

हम अद्भुत हरि को देख कर हैरान परेशान हैं ।

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥

हे मालिक ! तम अपनी गति आप ही जानते हो

सुखमनो साहिब (८२२) सादीक
जह अखल अछेद अभेद समाहआ॥

जहां भेद, छेद, छल बिना आप ही है

ऊहा किसहि बिआपत माहआ॥

वहां किसको आकर माया चपड़ती है ।

आपस कउ आपहि आदेसु ॥

अपने आप को आप ही माथा टेकता है ।

तिहु गुण का नाही परवेसु ॥

तीनों गुणों का अन्दर लेप नहीं होता ।

जह एकहि एक एक भगवंता ॥

जहां एक आप ही भगवंत मालिक है

तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता॥

वहां कौन बेफिकर और कौन फिकर वाला है ।

जह आपन आपु आपि पतीआरा॥

जब अपने आप ऊपर आप ही भरोसा करता है

तह वेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥

वहां वेद, कितेब कोई किसी ने देखा था ।

जब आपन आपु आपि उरिधारै ॥

जब अपने आप को आप ही हृदय में धारता था ।

तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥

तब क्या कोई बुरी अच्छी बात को विचारता था ।

जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥

जब आप ही ऊंचा और आप ही निकट था

तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

तब वहां मालिक और दास कोई कहां था ।

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥

हम अद्भुत हरि को देख कर हैरान परेशान हैं ।

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥

हे मालिक ! तुम अपनी गति आप ही जानते हो ।

जह अछल अछेद अभेद समाइआ॥

जहां भेद, छेद, छल बिना आप ही है

ऊहा किसहि विआपत माइआ॥

वहां किसको आकर माया चपड़ती है ।

आपस कउ आपहि आदेसु ॥

अपने आप को आप ही माथा टेकता है ।

तिहु गुण का नाही परवेसु ॥

तीनों गुणों का अन्दर लेप नहीं होता ।

जह एकहि एक एक भगवंता ॥

जहां एक आप ही भगवंत मालिक है

तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता॥

वहां कौन बेफिकर और कौन फिकर वाला है ।

जह आपन आपु आपि पतीआरा॥

जब अपने आप ऊपर आप ही भरोसा करता है

तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा॥

वहां कौन कथन करने वाला और कौन सुनने वाला है

बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥

वह बहुत बेअन्त ऊन्चे से ऊन्चा है

नानक आपस कउ आपहि पहुँचा ॥६॥

अपने आप को आप ही पहुँचा हुआ है ।

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु॥

जब उसने आप जगत की शकल बनाई है

तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥

तब तीनों गुणों का खलारा खिलारा था ।

पापु पुंनु तह भई कहावत ॥

उस समय पाप पुंन तो एक प्रकार की कहावत थी ।

कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥

उस समय न कोई स्वर्ग, न कोई नरक चाहता था ।

आल जाल माइआ जंजाल ॥

कोई इधर उधर माया का जाल भी नहीं था ।

हउमै मोह भरम भै भार ॥

हंगता, मोह और भ्रम का भय भार नहीं था ।

दूख सूख मान अपमान ॥

दुःख, सुख, आदर और धक्का पड़ना भी नहीं था ।

अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥

उस समय अनेक प्रकार का कथन किया हुआ था ।

आपन खेलु आपि करि देखै ॥

अपने तमाशे आप ही बना कर देखता है ।

खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥

खेलों को इकट्ठा करे तो एक ही एक है ।

जह अबिगतु भगतु तह आपि॥

जहां न चलने वाला आप है वहां भक्त रहते हैं ।

जह पसरै पासारु संत परतापि॥

जहां खिलारा वहां संतों का तेज भी प्रधान है ।

दुहू पाख का आपहि धनी ॥

दोनों ओरों का आप ही मालिक है ।

उनकी सोभा उनहू बनी ॥

उसकी बड़ाई उसको ही बन आई है ।

आपहि कउतक करै अनद चोज॥

अपने तमाशे आनंद चोज करता है ।

आपहि रस भोगन निरजोग ॥

आप ही रस भोगता आप ही योग से बिना है ।

जिसु भावै तिसु आपन नाह लावै॥

जिसको चाहे अपने नाम से लगा लेता है ।

जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥

जिसको चाहे अपने खेल खिलाता है ।

बेसुमार अथाह अगनत अतोले ॥

तोल, गिनती, थाह अन्त से बिना है ।

जिउ बुलावहु तिउ

जिस प्रकार बुलाता है

नानक दास बोले ॥८॥२१॥

उसी प्रकार दास बोलता है ।

सजोकु ॥

जीअ जंत के ठाकुरा

हे सब जीवों के मालिक !

आपे वरतणहार ॥

तू आप ही सारे फिरने (चलने) वाला हैं ।

नानक एको पसरिआ

एक ही सब जगह फैला हुआ हैं ।

दूजा कह दसटार ॥१॥

दूसरा कोई दृष्टि नहीं आता ।

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥

आप ही बोलता और आप ही श्रवण करने वाला है

आपहि एकु आपि त्रिसथारु ॥

आप ही एक और आप ही विस्तार वाला है ।

जा तिसु भावै ता सृसटि उपाए ॥

जब चाहता है दुनिया को बना लेता है ।

आपनै भाणै लए समाए ॥

फिर अपने ख्याल अंदर ही तोड़ देता है ।

तुमते भिन नही किछु होइ ॥

हे मालिक ! तेरे से भिन कुछ नहीं होता ।

आपन सूति सभु जगतु परोइ॥

अपनी ताकत के सत में सारा जगत बंधा हुआ है ।

जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए॥

हे मालिक ! जिसको तू आप ही समझा देता है ।

सचु नामु सोई जनु पाए ॥

वह दास सच्चे नाम को पा लेता है ।

सो समदरसी तत का बेता ॥

वह ही खास बात के बोलने वाला दृष्टि वाला है

नानक सगल दृसटि का जेता ॥१॥

वह ही सब दुनिया को जीतने वाला है ।

जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥

सब छोटे बड़े जीव उसके हाथ (वश) में हैं ।

दीन दइआल अनाथ को नाथु॥

दीन दयालू गरीबों का मालिक है ।

जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥

जिसको वह बचा ले उसको कोई नहीं मार सकता ।

सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥

समझो वह मृत्यु है जिसने मन से भुला दिया है ।

तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥

उसको त्याग कर और कोई कहां जाए ।

सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥

सब के सिर पर माया रहित प्रकाशक है ।

जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥

जिसके हाथ में सब जीवों को युक्ति है ।

अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥

उसको अन्दर बाहर साथ समझो ।

गुननिधान बेअंत अपार ॥

वह बेअन्त (अपार) गुणों का खजाना है ।

नानक दास सदा बलिहार ॥२॥

मैं दास सदा उस से बलिहर जाता हूं ।

पूरन पूरि रहे दइआल ॥

पूरा दयालू मालिक सब जगह भरपूर हुआ है ।

सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥

सब ऊपर कृपालू हुआ है ।

अपने करतब जानै आपि ॥

अपने कर्तव्यों को आप ही जानता है ।

अंतरजामी रहिओ विआपि ॥

अन्तर्यामी सब में मिला हुआ है ।

प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥

बहुत प्रकार से सब जीवों की पालना करता है ।

जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥

जो बनाया है सब उसी को ही समर्ता है ।

जिसु जावै तिसु लए मिलाइ ॥

जिसको चाहे साथ मिला लेता है ।

भगति करहि हरिके गुण गाइ ॥

वह हरि के गुण गाता और भक्ति करता है ।

मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥

संतों ने मन अंदर एक भरोसा मान लिया है ।

करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥

एक प्रभु ही सब काम करने वाला जाना है ।

जनु लागा हरि एकै नाइ ॥

जो दास हरि नाम साथ लग गया है

तिसकी आस न बिरथी जाइ ॥

उसकी आशा कोई व्यर्थ नहीं जाती ।

सेवक कउ सेवा बनि आई ॥

दास को तो दहल करती ही बनती है ।

हुकमु वूझि परमपदु पाई ॥

हुकम समझ कर परम पदवी पाता है ।

इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥

इस पर और कोई विचार नहीं ।

जाकै मनि बसिआ निरंकारु ॥

जिस के मन में निरंकार बसा है

बंधन तोरि भए निरवैर ॥

वह रस्से तोड़ कर वैर बिना हो गया ।

अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥

रात दिन गुरु के चरण पूजो ।

इह लोक सुखाए परलोक सुहेले ॥

ऐसे संत यहां वहां सुखी रहते हैं ।

नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥

प्रभु ने अपने साथ आप ही मेल लिया ।

साध संगि मिलि करहु अनंद॥

साधों संग मिल कर अनंद करो ।

गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥

बड़े आनंद रूप वाले हरि के गुण गाओ ।

राम नाम ततु करहु बीचारु ॥

असल राम के नाम का विचार करो ।

दुरलभ देह का करहु उधारु ॥

इस अल्लभ शरीर को तार लो॥

अंसृत बचन हरि के गुन गाउ ॥

संतों के मीठे बोल सुन कर हरि के गुन गाओ ।

प्राण तरन का इहै सुआउ ॥

प्राणों के छुटकारे का यही प्रयोजन है ।

आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥

आठों पहर मालिक को निकट देखो ।

मिटै अगिअनानु विनसै अंधेरा ॥

अज्ञान, अन्धेरा सारा चला जाये गा ।

सुनि उपदेशु हिरदे बसावहु ॥

उपदेश सुन कर हृदय में बसा लो ।

मन इच्छे नानक फल पावहु ॥५॥

फिर तुम मन इच्छे फल पा लोगे ।

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥

इधर उधर की दोनों ओरों को संवार लो ।

राम नामु अंतरि उरिधारि ॥

मन अन्दर प्रभु का नाम धार लो ।

पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥

पूरे गुरु की पूरी शिक्षा ले लो ।

जिसुमनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥

जिस के मन में बस जाए वह सच्च को परखता है ।

मनि तनि नामु जपहु लिवलाइ॥

प्रीति लगा कर तन, मन से नाम जपो ।

दूखु दरहु मन ते भउ जाइ ॥

दुःख दर्द और भय मन से चला जावेगा ।

सचु वापारु करहु वापारी ॥

हे व्यापारिओ ! सच्चे नाम का सौदा करो

दरगह निबहै खेप तुमारी ॥

दरगाह में तुम्हारी सौदागरी पूरी निभेगी ।

एका टेक रखहु मन माहि ॥

एक आश्रय मन में रखो ।

नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥

फिर मुड़ कर जन्म मरण में धक्के नहीं खाओगे ।

तिसते दूर कहा को जाइ ॥

उस मालिक से दूर कोई कहाँ जाए ?

उबरै राखनहारु धिआइ ॥

राखन वाले को याद करे तब बचेगा ।

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥

निर्भय को जपने से सारे भय मिट जाते हैं ।

प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥

प्राणी मालिक की कृपा से छुटकारा पाता है ।

जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥

जिसकी मालिक रक्षा करे उसको दुःख नहीं होता ।

नामु जपत मनि होवत सूख ॥

नाम जपने से मन को सुख होता है ।

चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥

अहंकार और चिंता नाश हो जाती है ।

तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥

उस मालिक तक कोई नहीं पहुंच सकता ।

सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरमा ॥

गुरु सूरमा सिर पर खड़ा राखा है ।

नानक ताके कारज पूरा ॥७॥

इस लिए उस का सारा काम पूरा हो जाता है ।

मति पूरी अमृतु जाकी दृसटि ॥

जिसकी अकल पूरी और दृष्टि में अमृत है ।

दरसनु पेखत उधरत सूरसटि ॥

उसके दर्शन करने से सारी दुनिया तर जाती है ।

चरन कमल जाके अनूप ॥

उसके चरण कमलों की बड़ाई नहीं हो सकती ।

सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥

मालिक के सुन्दर रूप का दीदार फल वाला है ।

धनु सेवा सेवकु परवानु ॥

सेवा और सेवा करने वाले को धनता जो माने हुए हैं

अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥

वह बहुत अच्छा पुरुष अन्दर की जानता है ।

जिसु मनि बसै सु होत निहालु॥

जिसके मन में बसे वह निहाल ही निहाल है ।

ताकै निकटि न आवत कालु ॥

उसके निकट मौत नहीं आ सकती ।

अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥

अमर हो गए और अमर पदवी पा ली ।

साध संगि नानक

साध संगत साथ मिलकर

हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

मालिक को याद किया है ।

सलोक ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ

गुरु ने ज्ञान सुरमा बरखा है ।

अगिआन अंधेर बिनासु ॥

इस लिए अज्ञान अंधकार चला गया ।

हरि किरपा ते संत भेटिआ

प्रभु कृपा से संत मिल पड़ा है ।

नानक मनि परगासु ॥१॥

उत की दया से मन में प्रकाश हो गया है ।

असटपदी ॥

संति संगि अंतरि प्रभु डीठा ॥

संतों का संग करके मालिक को अन्दर ही देखा है ।

नामु प्रभु का लागा मीठा ॥

हमें मालिक का नाम बड़ा मीठा लगता है ।

सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥

सारी सामग्री एक मालिक के हृदय में है ।

अनिक रंग नाना दृसटाहि ॥

अनेकों तमाशे अनेकों प्रकार से दृष्टि आते हैं ।

नउनिधि अमृतु प्रभ का नामु ॥

प्रभु का नाम अमृत नवनिधि रूप है ।

देही माहि इसका बिस्रामु ॥

उस नाम का आराम शरीर के अन्दर है ।

सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥

अफुर समाधी और चोट से बिना बाजे बजते हैं ।

कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥

उसका अद्भुत आनंद कहा नहीं जाता ।

तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥

उसने देखा है जिसको आप दिखाया है ।

नानक तिसु जन सोभी पाए ॥१॥

उस दास ने आनंद की सारी सोभी पा ली है ।

सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥

वह अन्दर है वही अनंता बाहर है ।

घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥

भगवंत सभ घटों में फैला हुआ है ।

धरनि माहि आकास पइआल ॥

पृथ्वी और आकाश पाताल में भी हैं ।

सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥

सब लोकों में पूरी पालना कर रहा है ।

बनि तिनि परबति है पारब्रह्मु ॥

दूर रहने वाला बनों, तृणों, पहाड़ों में है ।

जैसी आगिआ तैसा करमु ॥

जिस प्रकार मालिक कहे उसी प्रकार काम होता है ।

पउण पाणी बैसंतर माहि ॥

वायु, जल आग में है ।

चार कुंठ दहदिसे समाहि ॥

चारों कुण्डों, दस ओरों में समाया है ।

तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥

उस से भिन्न और कोई स्थान नहीं ।

गुरप्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥

गुरु की कृपा हो तो सुख मिलता है ।

बेद पुरान सिमृति महि देखु ॥

उसको वेदों, पुराणों, स्मृतियों में देख ।

ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥

चांद, सूर्य, तारों में भी वह एक है ।

बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥

एक मालिक की बाणी सब कोई बोलता है ।

आपि अडोलु न कबहु डोलै ॥

मालिक आप अडोल है कभी नहीं डोलता ।

सब कला करि खेलै खेल ॥

सब ताकतों करके खेल खेलता है ।

मोलि न पाईए गुणह अमोल ॥

वह अमोलक गुण वाला मूल्य प्राप्त नहीं होता ।

सब जोति महि जाकी जोति ॥

सब प्रकाशों में जिसका प्रकाश है ।

धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥

उस मालिक ने ताणो पेटे की तरह सब को पकड़ा है ।

गुरपरसादि भ्रम का नासु ॥

गुरु कृपा से भ्रम का नाश होता है ।

नानक तिन महि एहु विसासु॥३॥

उन में यह पक्का भरोसा है जो ऊपर लिखा है ।

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥

संतों का सारा देखना ईश्वर ही ईश्वर है ।

संत जना के हिरदै सभि धरम॥

संतों के हृदय में सारा धर्म ही धर्म है ।

संत जना सुनहि सुभ वचन ॥

संत अच्छे वचन ही सुनते हैं ।

सरब विश्वापी राम संगि रचन ॥

सारे फैले हुए राम से लगे रहते हैं ।

जिनि जाता तिसकी इह रहत ॥

जिसने यह जाना है तिसकी यह रहत है ।

सति वचन साधू सभि कहत ॥

जो संत है उसने सच्चा वचन ही कहना है ।

जो जो होइ सोई सुख मानै ॥

मालिक से जो जो होता है उसको सुख मानता है ।

करन करावनहारु प्रभु जानै ॥

मालिक को हर काम के करने कराने वाला जानता है

अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥

वह मालिक अन्दर भी और बाहर भी वही है ।

नानक दरसन देखि सभ मोही ॥४॥

उस का दर्शन करके सारी दुनिया मोही गई है ।

आपि सति कीआ सभु सति ॥

आप सच्चा है जो बनाया है वह भी सच्चा है ।

तिसु प्रभु ते सगली उत्पति ॥

उस मालिक से सारी दुनिया पैदा हुई है ।

तिसु भावै ता करे विसथारु ॥

जब उसको अच्छा लगता है तब विसथार करता है

तिसु भावै ता एकंकारु ॥

जब उसको भाता है तो एक रूप ही बैठा रहता है ।

अनिक कला लखी नह जाइ ॥

उसकी अनेकों शक्तियां देखी नहीं जातीं ।

जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥

जिसको चाहता है उसको अपने मेल में मिला लेता है ।

कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥

बता ! किसको निकट और किसको दूर कहें ।

आपे आपि आप भरपूरि ॥

आप ही आप सारे भरा हुआ है ।

अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥

जिसको जनाता है वह अन्दर की गति जानता है ।

नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥

उस मनुष्य को अपना आप बता देता है ।

सब भूत आपि वरतारा ॥

सब जीवों में उसका अपना वरतारा है ।

सब नैन आपि पैखनहारा ॥

सब आंखों में वह आप देखने वाला है ।

सगल समग्री जाका तना ॥

सारी दुनिया सामग्री जिसका शरीर है ।

आपन जसु आप ही सुना ॥

वह मालिक अपना यश आप ही सुनता है ।

आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥

आना जाना यह एक खेल बनाया है ।

आगिआकारी कीनी माइआ ॥

माया अपनी आज्ञाकारी की हुई है ।

सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥

मालिक सब में और भिन्न भी है ।

जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥

जो आज्ञा देता है वह आप ही देता है ।

आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥

यह जीव हुक्म का बंधा आता जाता है ।

नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥

जब उसको भाता है तब साथ मिला लेता है ।

इस ते होइ सु नाही बुरा ॥

इस मालिक से बुरा कुछ नहीं हो सकता ।

ओरै कहहु किनै कछु करा ॥

उससे बिना और किसी ने क्या किया है बतां तो सही

आपि भला करतूति अति नीकी ॥

आप अच्छा है उसकी करनी भी अच्छी है ।

आपे जानै अपने जी की ॥

अपने जीव की गति आप ही जानता है ।

आपि साचु धारी सभ साचु ॥

आप सच्चा सभ पकड़ी हुई दुनिया भी सच्ची है ।

ओति पोति आपन संगि राचु ॥

ताणे पेटे की तरह सभ में मिला है ।

ताकी गति मिति कही न जाइ ॥

उस की गति की मर्यादा नहीं कही जाती ।

दूसर होइ त सोभी पाइ ॥

दूसरा कोई हो तो उसकी सूझ ले ।

तिसका कीआ सभु परवानु ॥

उसका किया काम सारा परवान है ।

गुरप्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥

गुरु की कृपा से यह जाना जाता है ।

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥

जो उसके किए को जानता है उसको सदासुख होता है

आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥

वह मालिक उसको अपने साथ मिला लेता है ।

ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥

धन, कुल, इज्जत वाला वह मनुष्य है ।

जीवन मुक्ति जिषु रिदै भगवंतु ॥

जिसके हृदय में मालिक है वह जीवन मुक्त है ।

धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥

उस दास का आना धन्य २ है ।

जिस प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥

जिसकी कृपा से सारा जगत तर गया है ।

जन आवन का इहै सुआउ ॥

उस मनुष्य के आने का यही लाभ है ।

जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥

महां पुरुष के साथ मिल कर नाम याद आए ।

आपि मुक्तु मुक्तु करै संसार॥

स्वयं मुक्ता है और संसार को मुक्त करता है ।

नानकतिसुजनकउसदानमसकारु८।२३

उस दास को सदा नमस्कार है ।

सलोक ॥

पूरा प्रभु अराधिया

जिसने पूरे मालिक को आराधा है

पूरा जाका नाउ ॥

जिसका नाम भी पूरा है ।

नानक पूरा पाइआ

उस पूरे को पाया है

पूरे के गुन गाउ ॥१॥

पूरे मालिक के गुन गा कर ।

असटपदी ॥

पूरे गुरु का सुनि उपदेश ॥

पूरे गुरु का उपदेश मन लगा कर सुन ।

पारब्रह्म निकट करि पेखु ॥

उस ईश्वर को निकट करके देख ।

सासि सासि सिमरहु गोविंद ॥

उस गोविंद का स्वास २ स्मरण करो ।

मन अंतर की उतरै चिंद ॥

तुम्हारे मन की चिन्ता उतर जाएगी ।

आस अनित तिआगहु तरंग ॥

व्यर्थ आशा और अनेकों ख्याल छोड़ो ।

संत जना की धूरि मन मंग ॥

मन करके संतों की चरण धूल मांगो ।

आपु छोड़ि वेनती करहु ॥

आपा छोड़ कर संतों पास वेनती करो ।

साध संगि अगनि सागरु तरहु ॥

साध संगत द्वारा आग का समुद्र तर जावो ।

हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥

परमेश्वर रूप धन के खजाने भर लो ।

नानक गुर पूरै नमसकार ॥१॥

पूरे गुरु को सदा नमस्कार करो ।

खेम कुसल सहज आनंद ॥

प्रेम सुख, ठंड, सहज आनंद मिलेगा ।

साध संगि भजु परमानंद ॥

साध संगत द्वारा मालिक को स्मरण करो ।

नरक निवारि उधारहु जीउ ॥

नरक को छोड़ कर जीव को मुक्त कर लो ।

गुन गोविंद अमृत रसु पीउ ॥

गोविन्द के गुणों का अमृत रस पी लो ।

चिति चितवहु नाराइए एक ॥

एक ईश्वर को चित्ता में याद करो ।

एक रूप जाके रंग अनेक ॥

जिसका रूप एक है और रंग बहुत हैं ।

गोपाल दामोदर दीन दहआल ॥

दीन दयालू दुनिया का मालिक माया वाला है ।

दुख भंजन पूरन किरपाल ॥

पूरा कृपालू दुःखों का नाश करता है ।

सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥

उसका नाम बार २ स्मरण करो !

नानक जीअ का इहै अधारं ॥२॥

असल जीव का यही आश्रय है ।

उत्तम सलोक साध के वचन ॥

साधू के वचन उत्तम श्लोक हैं ।

अमुलीक लाल एहि रतन ॥

यही अमोलक लाल और रत्न हैं ।

सुनत कमावत होत उधार ॥

जिनके सुनने से और कमाने से तर जाते हैं ।

आपि तरै लोकह निसतार ॥

स्वयं भी तरते हैं और लोगों को भी तार ले जाते हैं ।

सफल जीवनु सफल ताका संगु ॥

ऐसे गुरमुखों का जीना और संगत सफल है ।

जाके मनि लागा हरि रंगु ॥

जिसके मन में मालिक का प्रेम लगा है ।

जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥

जय जय कार का अनहद शब्द बजता है ।

सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥

वह सुन कर बड़े आनंद करते हैं ।

प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥

सत पुरुषों के माथे प्रभु जी प्रकट होते हैं ।

नानक उधरे तिनकै साथे ॥३॥

सब का उधार उन्हीं करके होता है ।

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥

सरण योग जानकर उसकी शरण आए हैं ।

करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥

मालिक ने कृपा करके आप ही गुरु को मिलाया है ।

मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥

वैर दूर हो गए और सब की चरण धूल हूँ ।

अमृत नामु साध संगि लैन ॥

साध संगत द्वारा अमृत नाम लिया है ।

सु प्रसन्न भए गुरदेव ॥

इस करके गुरदेव जी बड़े प्रसन्न हुए हैं ।

पूरन होई सेवक की सेव ॥

सेवक की सेवा भी पूरी हो गई है ।

आल जंजाल बिकार ते रहते ॥

दुनिया के धंदों, विकारों से मुक्ति पाई है ।

राम नाम सुनि रसना कहते ॥

राम का नाम सुन कर जिहवा से कहते हैं ।

करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥

मालिक ने कृपा करके दया दृष्टि की है ।

नानक निबही खेप हमारी ॥४॥

हमारी सारी सौदागरी पूरी हो गई है ।

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥

हे संत जनों ! मालिक की बड़ाई करो ।

सावधान एकाग्र चीत ॥

सावधान होकर मन को एकाग्र करो ।

सुखमनी सहज गोविंद गुन नाम ॥

इस बाणी में शीतलता हरि गुण और नाम है ।

जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥

जिसके मन बस जावे वह गुणों का खजाना है ।

सरब इच्छा ताकी पूरन होइ ॥

उन की सब आवश्यकतायें पूरी हो जाती हैं ।

प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥

वह महां पुरुष बन कर सब लोगों में माना है ।

सभ ते ऊच पाए असथानु ॥

वह सब से ऊंचा स्थान प्राप्त कर लेता है ।

बहुरि न होवै आवन जानु ॥

उसका आना, जाना फिर नहीं होता ।

हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ॥

वह महां पुरुष हरि धन को कमा कर चले हैं ।

नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥

यह जिसको मिलता है वह इस धन को लेता है ।

खेम सांति रिधि नव निधि ॥

सुख शीतलता रिधि और नवनिधि

बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥

अकल, ज्ञान सारी सिद्धियां ।

विदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥

विद्या तप योग मालिक का ध्यान

गिआनु से सट ऊतम इसनानु॥

अच्छा ज्ञान पावन स्नान

चारि पदारथ कमल प्रगास ॥

धर्म अर्थ काम मोक्ष हृदय का प्रकाश ।

सभ कै मधि सगल ते उदास ॥

सारों के बीच और सबनों से भिन्न
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥

सुन्दर चतुर तत्त के बोलने वाला
सम दरसी एक दसटेता ॥

समदरसी और एक को देखने वाला
इह फल तिसु जनकै मुखि भने ॥

यह फल इस लिए मुख से कहे हैं
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥

जिसने गुरु के यह बोल मन जोड़ कर सुने हैं ।

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥

इस नाम के खजाने बानी को जो मन लगा कर जपता है

सभ जुग महि ताकी गति होइ ॥

सब युगों में उस की गति हो जाती है ।

गुण गुविंद नाम धुनि बाणी ॥

मालिक के गुणों और नाम की ध्वनि वाली बाणी है।

सिमृति सासत्र वेद बखाणी ॥

स्मृतियों शास्त्रों, वेदों ने जो कही है

सगल मतांत केवल हरि नाम ॥

सब मतों का फल यह है कि एक नाम जपो।

गोविंद भगत कै मनि बिस्राम ॥

जिसका टिकाना मालिक के भक्तों के मन अन्दर है

कोटि अप्राध साध संगि मिटै ॥

साधू संग करके वेअंत पाप दूर हो जाते हैं।

संत कृपा ते जम ते छुटै ॥

साधुओं की कृपा से यमों से छूट जाता है।

जाकै मसतकि करम प्रभि पाए ॥

जिस के मत्थे ऊपर मालिक ने यह लेख पाये हैं।

साध सरणि नानक ते आए॥७॥

वह साधों की शरण आ गए हैं ।

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥

जिसके मन में यह बाणी बस जाए और प्रीति से सुने

तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

उस पुरुष को हरि मालिक याद आता है ।

जनम मरन ताका दूखु निवारै ॥

उसका जन्म मरण का दुःख निवारा जाता है ।

दुर्लभ देह ततकाल उधारै ॥

शीघ्रता से दुर्लभ देही का उधार कर लेता है ।

निरमल सोभा अमृत ताकी बानी॥

उसकी शोभा निर्मल और अमृत जैसी बाणी है ।

एकु नामु मन माहि समानी ॥

जिसके मन अन्दर एक नाम मिला है ।

दूख रोग बिनसे भै भरम ॥

डर, भ्रम, दुःख, रोग उसके नाश हो गए हैं ।

साध नाम निरमल ताके करम ॥

साध नाम उसका है जिसके कर्म साफ हैं ।

सभ ते ऊच ताकी सोभा बनी ॥

सब से अच्छी उसकी बड़ाई बनी है ।

नानक इहगुणिनामुसुखमनी॥८॥२४॥

ऐसे गुणों करके इस बाणी का नाम सुखमनी है ।



तेज प्रिंटिंग प्रैस, चौक करोड़ी अमृतसर में
सरदार तेजा सिंह 'सेठी' के अधिकार से छपा ।

सबसे बड़ी और पुरातन माई बालिवाली
जन्म साखी (हिंदी)

बहुत से गुरुमुखी ना पढ़े हुये सज्जनों
की देर से मांग थी कि श्री गुरु नानक देव
महाराज जी की जन्म साखी हिंदी अक्षरों में
छपे ताकि हिंदी पढ़े हुए श्रद्धालू भी पढ़
कर गुरु नानक देव जी के उपकार स्मरण
करें । तो हमने गुरु नानक देव जी की
जन्म साखी गुरुमुखी जन्म साखी के साथ
सोध कर छापी है । अभिलाषी सज्जन आज
ही पंगा कर दर्शन करें । मुख्य जिल्द समेत ४)

पता:-भा० जवाहर सिंह कृपाल सिंह

पुस्तकाँ वाले, बाजार माई सेवां अमृतसर

तथा

प्रीतम बुक स्टाल ३६४ लाजपतराय मार्केट, देहली

हिंदी पढ़े हुए सज्जनों के लिए गुरबाणी के गुटके तथा और पुस्तकें

सुंदर गुटका बड़ा १५० बानीयाँ २)
नित्तनेम ॥) सुखमनी ॥=)
सच्चा सौदा ॥)
कीरतन प्रकाश ॥=) जपुजीसाहिब ॥=)
नित्तनेम टीका १॥) जपुजीटीका १-)
पंज ग्रन्थी १॥॥) भगवत गीता १॥)

मिलने का पता :—

भा० जवाहर सिंह कृपाल सिंह

पुस्तकाँ बाले बाज़ार माई सेवाँ, अमृतसर
तथा

प्रीतम बुक स्टाल, ३६४ लाजपत मार्कीट देहली

